TEXT PROBLEM WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_182558
UNIVERSAL LIBRARY

टूटे हुए पर

Hindi ... rary
OSMANIA UNIVERSITY

खलील जिब्रान

राजकमल प्रकाशन

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 J61T Accession No. PG H667

Author जिब्रान, खलील.

Title टूटे हृदय पर. 1949.

This book should be returned on or before the date last marked below.

टूटे हुए पर

टूटे हुए पर

लेखक की अल-हंजत-उल-मतकसरा का अनुवाद

खलील जिब्रान

अनुवादक : श्री माईदयाल जैन

राजकमल प्रकाशन

मूल्य डेढ़ रुपया

गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली से मुद्रित, और
राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड दिल्ली द्वारा प्रकाशित ।

भूमिका

खलील जिब्रान से मेरा परिचय शायद सन् ३१ में पहले-पहल हुआ। तब श्री रायकृष्णदास उनकी पुस्तक Mad Man का हिन्दी अनुवाद छापने की तैयारी में थे। मैं उस पुस्तक को पढ़ा और पकड़ा गया। उसके बाद 'प्राफेट' हाथ आई। उस पुस्तक से अब तक जी भरा है, ऐसा मैं नहीं कह सकता। कहीं मिल जाय तो फिर एक बार पढ़ जाना चाहूंगा। मेरे एक मित्र तो उसपर ऐसे रीझे कि दर्जन-की-दर्जन प्रतियाँ अपने पास से मंगाकर उन्होंने अपने आत्मीय मित्रों को जबतक नहीं बांट दीं तबतक चैन नहीं पाया।

यह शक्ति जिब्रान को कहां से प्राप्त हुई? इस शक्ति को मैं देशी कहूं, कारण,न वह संख्या की है, न पदार्थ की, न व्यक्तित्व की। ये बाहरी शक्तियां अभिभूत कर सकती हैं, अभिषिक्त नहीं कर सकतीं। जिब्रान की रचना भीतर तक मन को भिगो देती है। अभिमान का काठिन्य कुछ देर के लिए जैसे गल-घुल जाता है। यह शक्ति प्रेम की है, लेकिन वह प्रेम जिसमें आकांक्षा या आसक्ति नहीं रह गई है, और इससे जो स्निग्ध अनुकम्पा बन कर रह गया है।

ईश्वर क्या है? जानने वाले जानते हैं कि वह प्रेम है। लेकिन प्रेम तो हम सब के पास भी है। क्या प्रेम से ही हममें स्वार्थ नहीं उपजता? और स्वार्थों का संघर्ष ही हमारी समस्या है। हर प्रेम में आसक्ति है। आसक्ति में आग्रह, और आग्रह में विग्रह है। अगर इस तरह मालूम होता है कि प्रेम समाधान नहीं बल्कि सिर्फ समस्या है।

हां, वह है समस्या! लेकिन जो समस्या है, उस प्रेम का नाम है काम। इसलिए जो समाधान होगा वह प्रेम है निष्काम।

वह निष्काम प्रेम कोई अपर-लोक का तत्व नहीं है, यही सफल पुरुष

हमें बता और दिखा जाते हैं। प्रेम घना और गहरा होकर आप ही निष्कामता की ओर चलता है । उथला है, तभी तक वह सकाम रहता है। अर्थात् जो प्रेम पारिवारिकता और सामाजिकता के क्षेत्र में हमारे परिचय में आता रहता है, उसी में दैवी प्रेम होने की सामर्थ्य है। भोग में पड़कर जो कीच पैदा करता है, योग के द्वारा वही मोक्ष दे आता है।

यह बात जिब्रान के इस उपन्यास से मुझे और भी समझ में आ सकी। अभी मैंने इसे पूरा नहीं पढ़ा है। लेकिन मैं जान गया हूं कि जिसने प्रॉफेट लिख पाया वह जिब्रान किस पीड़ा पर से चढ़कर इस ऊंचाई तक पहुंचे होंगे।

मैं कह सकता हूं कि जिब्रान को पढ़ते समय गीतांजलि की याद मुझे फीकी पड़ गई थी। और कहना होगा कि गांधी, शरद, रवीन्द्र में से जिस पूर्व की आत्मा ने स्वर पाया है उसी से जिब्रान की रचनाएं भी अनुप्राणित हैं। मेरा विश्वास है कि राज कारण का धुंध ऊपर से जब तनिक कटेगा तब इस और ऐसी दूसरी रचनाओं से हम अधिकाधिक लाभ उठाना सीखेंगे।

७, दरियागंज
दिल्ली

जैनेन्द्रकुमार
४.५.४६

खलील जिब्रान

(एक परिचय)

खलील जिब्रान का पूरा नाम जिब्रान खलील जिब्रान था, पर वह खलील जिब्रान के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। इनका जन्म सन् १८८३ ई० में सीरियादेश[1] के लबनान नामक पहाड़ी प्रान्त के बशरी नगर में एक सम्पन्न और नामी ईसाई घर में हुआ था। बारह वर्ष की अवस्था में यह अपने माता-पिता के साथ विदेशों की यात्रा के लिए बेल्जियम, फ्रांस और अमरीका गये। इस यात्रा में कोई दो वर्ष लगे।

विदेश भ्रमण से लौटने पर इनकी शिक्षा बेरूत नगर के 'अलहिकमत' नामी विद्यालय में आरम्भ हुई। यहां उन्होंने अरबी भाषा और अरबी साहित्य का गहरा अध्ययन किया। सन १९०३ ई० में वह फिर अमरीका गये और पांच वर्ष तक वहां बोस्टन शहर में रहकर अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया। यहां उन्होंने अरबी की कुछ पुस्तकें भी लिखीं।

सन् १९०८ में जिब्रान ने चित्रकला और दूसरी ललित कलाओं के अभ्यास और ज्ञान प्राप्ति के लिए यूरोप की यात्रा की। इस बार उन्होंने फ्रांस की राजधानी पेरिस में तीन वर्ष रहकर चित्रकला का विशेष अभ्यास किया। इस कला में उन्होंने इतनी निपुणता पा ली कि इसकी परीक्षा में वह सम्मान के साथ उत्तीर्ण हुए और फ्रांस की प्रसिद्ध कला-परिषद् के सदस्य बना लिये गए।

सन् १९१२ में वह फिर अमरीका चले गये और वहां स्थायी रूप से न्यूयार्क में रहने लगे। इस बार उनके अमरीका जाने का कारण यह था कि उनकी रचनाओं और आलोचनाओं से सीरिया का पादरी, जागीर-

१ सीरिया को 'शाम' के नाम से भी पुकारते हैं।

दार और अधिकारी वर्ग इनके विरुद्ध हो गया था। और उन्होंने जिब्रान को केवल जाति से बाहर ही नहीं किया, बल्कि देश से भी निकाल दिया। दार्शनिकों और लेखकों को प्राचीन काल में उनके विचारों और मतों के लिए फांसी दी जाने और ज़हर के प्याले पिलाने की बातें इतिहास में हमने पढ़ी हैं। पर इस बीसवीं शताब्दी में किसी कवि और दार्शनिक को, सिवाय राजनैतिक नेताओं के, अपने विचारों के लिए खलील जिब्रान के समान- मूल्य चुकाना नहीं पड़ा।

खलील जिब्रान एक अत्यन्त प्रसिद्ध कवि, दार्शनिक, लेखक और चित्रकार थे। उन्होंने अंग्रेजी और अरबी भाषा में लगभग पच्चीस पुस्तकें लिखीं। पुराने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं से खोज करके उनकी कविताओं और लेखों के संग्रह अभी तक प्रकाशित किये जा रहे हैं। उन की बहुत-सी पुस्तकें उनके अपने ही बनाए हुए चित्रों से सुसज्जित हैं। उनकी पुस्तकों के अनुवाद संसार की बीसियों प्रसिद्ध भाषाओं में हो चुके हैं और दिन-प्रतिदिन उनके प्रचार का क्षेत्र बढ़ता ही जा रहा है। संसार के लाखों स्त्री-पुरुष उन्हें बड़ी श्रद्धा और दिलचस्पी के साथ पढ़ते हैं। हर्ष की बात है कि हिन्दी में भी इनकी रचनाओं के कुछ अनुवाद बहुत पसन्द किये गए हैं।

खलील जिब्रान अद्भुत कल्पनाशक्ति रखते थे और उन्हें एकसे अधिक भाषाओं पर पूर्ण अधिकार था। गद्य काव्य की उनकी अपनी शैली थी। उनमें पूर्व और पश्चिम का इतना गहरा मिलन था, कि उनकी रचनाओं की आत्मा यदि पूर्व की भावनाएं और विचार हैं, तो उनकी रूपरेखा पाश्चात्य है। वह एशिया में पैदा हुए, यूरोपीय देशों और अमरीका में घूमें और अंत में अमरीका में रहने लगे। गहरे अध्ययन से प्राप्त ज्ञान और देशाटन से पाया हुआ अनुभव उनकी रचनाओं में स्थान-स्थान पर मिलता है। अमरीका के जड़वादपूर्ण वातावरण में रहते हुए भी उनकी आत्मा उससे अछूती रही।

खलील जिब्रान ईसाई धर्म के अनुयायी थे। अरबी उनकी मातृ-

भाषा थी, क्योंकि वह अरब देशसमूह के रहने वाले थे। सारी आयु वह अपनी रचनाओं और कलाओं के द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार करते रहे। वह धर्म की ठेकेदारी के सख्त विरुद्ध थे और धर्म का पालन हृदय से नहीं बल्कि मस्तिष्क से विवेक के साथ करते थे। उन्हें अन्ध-विश्वास से घृणा थी। जिब्रान ने अपनी रचनाओं में व्यंगपूर्ण ढंग से अज्ञान, रूढ़िवाद और पादरियों की काली करतूतों का पर्दा इतना चाक किया है, कि उसके फलस्वरूप उन्हें अपने देश तक को छोड़ना पड़ा। यदि उन्होंने ईसाई धर्म की कट्टरता पर गहरी चोटें कीं, तो इसका कारण उन की अधार्मिकता न थी, बल्कि उनकी मानसिक वृत्ति थी। वह दार्शनिक थे और सत्य की खोज करने वालों का आदर करते थे। उन्होंने अपने काल की सामयिक समस्याओं पर भी स्वतंत्रता के साथ लिखा।

जिब्रान को अपने देश से अपार प्रेम था। देश से दूर रहते हुए और अपने ही देशवासियों के अत्याचारों का स्वयं शिकार होते हुए भी वह अपने देश और देशवासियों को एक क्षण भी न भूले। सीरिया ही नहीं, समस्त अरब देशों के रहने वालों की पतित और हीन अवस्था से वह अत्यत दुखी थे। वह चाहते थे कि एशिया का यह पिछड़ा हुआ भाग संसार की उन्नत जातियों के साथ कदम मिलाकर चले।

पर खलील जिब्रान की महानता का वास्तविक रहस्य उनकी प्रतिभा-शाली, कवित्वशिक्त, प्रगतिशील विचारों और एक कलापूर्ण सुन्दर और हृदयग्राही ढंग से उन्हें पेश करने में है। वह पवित्रता, मानवता, हृदय धर्म और सौन्दर्य के पुजारी थे। उनकी रचनाएं हृदय पर सीधा प्रभाव डालती हैं, क्योंकि उनकी रचनाएं स्वयं उनके अपने हृदय की आवाज हैं। वह दार्शनिक भी हैं और अध्यात्मवादी भी। उसकी रचनाएं सुभाषितों और सुन्दर-सुन्दर उपमाओं से भरी पड़ी हैं। आयरलैण्ड के प्रसिद्ध कवि ए-ई-(जार्ज रसेल) ने खलील जिब्रान की तुलना आधुनिक भारत के विश्वविख्यात महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से की है। इस तुलना में बहुत सचाई है। पाठकगण इसी बात से खलील जिब्रान क

महानता का अनुमान लगा सकते हैं।

खलील जिब्रान की जीवन-घटनाओं के विषय में इससे अधिक कुछ भी पता नहीं मिलता। यह एक ऐसी कमी है जो बहुत ही खटकती है।

संसार के इस महाकवि और दार्शनिक का १० अप्रैल सन् १९३१ में ४८ वर्ष की अवस्था में एक मोटर दुर्घटना से देहांत होगया। यदि वह कुछ दिन और जीवित रहते, तो उनसे हमें बहुत सी अमूल्य रचनाएं प्राप्त होतीं और स्वयं उनकी गणना शायद और भी बड़े लेखकों में होती।

डिप्टी गंज
दिल्ली

माईदयाल जैन

सूची

भूमिका
खलील जिब्रान : एक परिचय
१. आरम्भ १
२. ख़ामोश ग़म ५
३. मौत का हाथ १०
४. पहली भेंट १६
५. सफ़ेद लपट २२
६. तूफ़ान २६
७. अग्निकुण्ड ४१
८. मौत के दरबार में ६१
९. देवालय ७८
१०. त्याग ... ८५
११. समाप्ति ९७

: १ :

आरम्भ

मेरी उम्र अठारह वर्ष की थी, जब प्रेम ने अपनी जादू-भरी किरनों से मेरी आँखें खोलीं और पहले-पहल मेरे मन को अपनी गर्म अंगुलियों से छुआ। सलमा पहली स्त्री थी जिसने अपने गुणों से मेरी आत्मा को जगाया। वही मुझे उच्च कल्पनाओं के उस स्वर्ग में ले गई, जहाँ दिन मधुर स्वप्नों की तरह गुज़रते हैं और रातें नव-दम्पति की प्रेम-भरी रातों के समान।

यह सलमा ही थी, जिसने अपनी सुन्दरता से मुझे सौन्दर्य के तरीके सिखाए। उसीने अपनी कृपाओं से मुझ पर प्रेम के रहस्य ज़ाहिर किए। हाँ, यह वही थी, जिसने सच्चे जीवन के गीत का पहला छंद मेरे कानों में गुनगुनाया।

कौनसा नौजवान है जो इस नव सुन्दरी की याद से अपने एकान्त के क्षणों को मस्ती से नहीं भरता? इसने अपनी कृपा, नरमी और माधुर्य से किसीकी जवानी के स्वप्नों को एक ऐसी भयंकर जागृति में नहीं बदला, जो पीड़ापूर्ण और घातक हो? हममें कौन है जो इस अमूल्य क्षण के लिए नहीं तड़पता, जिसमें वह एकाएक चौंका हो और उसने देखा हो कि उसका दिल अचानक बदल गया है और उसकी गहराइयों में उदारता पैदा हो गई है? भेद छिपाने की तमाम कड़वाहटों के होते हुए भी ये प्रभाव अच्छे हैं और आंसुओं, तमन्नाओं और जागरणों से घिरे होने पर भी प्रिय हैं।

जवानी के मस्त और बेपरवाह क्षणों में सलमा हर नौजवान को अपनी तरफ़ देखने का निमन्त्रण देकर उसके एकांत के लिए एक शाय-

राना ध्येय पैदा कर देती है; उसके दिनों की भीषणता को ज़िन्दादिली और रात की खामोशी को संगीत से बदल देती है।

जब मैंने मुहब्बत को सलमा के होठों पर खेलते और अपनी आत्मा से कानाफ़ूसी करते पाया, उस समय मेरा मस्तक अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों और आंखों-देखी बातों की खींचतान में फंसा हुआ था। जब मैंने सलमा को अपने सामने इस तरह खड़े देखा, जैसे किसी अंधेरी जगह पर प्रकाशमान मीनार, उस समय मेरा जीवन आदम[1] के स्वर्गीय और अमूल्य स्वप्नों के समान अकेला, उजाड़ और नीरस था। इसलिए सलमा मेरे रहस्यपूर्ण और विलक्षण दिल की हव्वा[2] है, जिसने मेरे दिल को जीवन का रहस्य समझाया और उसे दर्पण बनाकर दुनिया के सामने खड़ा कर दिया।

हव्वा ने आदम के आज्ञापालन और सीधेपन से लाभ उठाकर जान-बूझकर उसे स्वर्ग से निकलवाया था। परन्तु सलमा ने मेरे हृदय का अन्दाज़ा लगाकर अपने प्रेम के नेतृत्व में मुझे मुहब्बत और पवित्रता के स्वर्ग में पहुंचाया। पर आह! आदम इतना दुखी न था जितना मैं हूँ। वह आग की गर्म तलवार जिसने आदम को बहिश्त से निकाला, इस तलवार जैसी है, जिसने मुझे अपनी चमक से भयभीत कर दिया। और इससे पहले कि मैं वफादारी की प्रतिज्ञा का उल्लंघन

---

१ संसार का पहला पुरुष।

२ संसार की पहली स्त्री। मुसलमानों और ईसाइयों की पुरानी कथाओं में आदम और हव्वा संसार के आदि-पुरुष-स्त्री माने जाते हैं। दोनों सुख से स्वर्ग में रहते थे। आदम हव्वा की बात बहुत मानता था। शैतान ने हव्वा को उकसाया कि वह आदम को गेहूंके पौदेसे गेहूं निकाल कर खाने की प्रेरणा करे। आदम ने हव्वा की बात मान ली। अन्न का खाना था कि दोनों को अदन के बाग अर्थात् स्वर्ग से निकाल दिया गया।

करता या भले-बुरे से परिचित होता, घृणा और तिरस्कार के साथ मुझे प्रेम के स्वर्ग से धक्के देकर निकाल दिया गया।

और आज, जबकि अंधेरे महीने और वर्ष उस ज़माने के हर निशान को अपने पांव से मिटाते हुए गुज़र गए हैं, मेरे लिए इस सुन्दर स्वप्न में से सिवाय एक पीड़ा-भरी याद के कुछ भी बाकी नहीं रहा है। वह याद मेरे सिर पर उन परों की तरह मण्डराती है जो दिखाई न दें—वह याद जो मेरी पलकों से निराशा और दुख के आंसुओं का टपकना मांगती है।

और सलमा—सुन्दर और मधुर भाषिणी सलमा—आह! वह रंगीन क्षितिज के उस पार चली गई है और अब इस दुनिया में मेरे दिल की दर्द-भरी घुटन और उसकी उस संगमरमर की क़ब्र के सिवा जो सरू के वृक्षों की छाया के नीचे है, उसका और कोई निशान नहीं है। इसलिए उसकी क़ब्र और मेरा दिल, बस ये दो ही हैं जिन्हें उसके अस्तित्व की ख़ामोश पर पूरी कहानी कहा जा सकता है।

सलमा के अस्तित्व पर थोड़ा-बहुत प्रकाश डालने वाली केवल दो चीजें हैं। एक तो वह खामोशी जो क़ब्रों पर छाई हुई है और उन गुप्त रहस्यों को छिपाए हुए है, जिन्हें परमात्मा ने दुनिया की निगाह से बचाकर क़ब्र के अंधेरे में छिपा रखा है। और दूसरी वह टहनियां हैं, जो क़ब्रों में दफ़न स्त्री-पुरुषों के मृत शरीरों के तत्वों से पुष्ट होती हैं और अपनी सरसराहट से क़ब्र के भेदों को प्रकट नहीं होने देतीं। लेकिन मेरे दिल की ऐंठन तो इसके अस्तित्व की मुंह-बोलती तस्वीर है। और यही कारण है कि मेरे दिल का दर्द अब भी मेरी आंखों से आंसू बन-बनकर टपकता है। काली स्याही की इन बूंदों के साथ जो प्रेम, सौंदर्य और मौत के रंग-मच पर खेले हुए नाटक की परछाइयों से प्रकाशमान है, वह दर्द कागज पर कहानी के रूप में लिखा है।

इसलिए ओ बैरूत के नवयुवको! जब कभी तुम उस क़ब्र पर जाओ जो सनोवर के जंगल के करीब है, तो खामोशी के साथ धीरे-धीरे

जाना। ऐसा न हो, कि तुम्हारे कदम भूमि के नीचे सोने वालों की टूटी हड्डियों को और नीचे कर दें। और तुम सलमा की क़ब्र के एक तरफ आदर और सम्मान के साथ उस पवित्र मिट्टी से अलग हटकर खड़े होना, जिसमें सलमा का अस्तित्व मिल-जुल चुका है। फिर ठंडी सांस भरकर मुझे याद करना और अपने दिल में कहना—

"यही वह जगह है, जहां इस नौजवान की उम्मीदें दफ़न हैं, जिसे जमाने के चक्कर ने समुद्र पार फेंक दिया था। हाँ, यही वह जगह है जहाँ इसकी कामनाएं छिपी हैं, जहां इसकी प्रसन्नताएं कोने में दबी हैं, जहां इसके आंसू पड़े हैं और जहां इसकी मुसकान फीकी पड़ी है।

"इन्हीं खामोश क़ब्रों में उसकी उदासी सरू और बेंत के वृक्षों के साथ विकास प्राप्त करती है और इसी क़ब्र के गिर्द रातों में उसकी आत्मा मण्डराती है। वे अतीत की याद ताज़ा करते हैं और विरह और एकान्त की धुंधली तस्वीरों के साथ आशा और निराशा के राग को दुहराते हैं। वे सरू और बेंत के वृक्षों की टहनियों के साथ उस नवयौवन पर शोक करते हैं, जो कल तक जीवन के मुरझाए हुए अधरों का एक गीत था और आज ज़मीन की छाती का एक ख़ामोश रहस्य है।"

ओ नवयौवन के प्रेमियो ! मैं तुम्हें उन स्त्रियों की सौगन्ध देता हूं जिन्हें तुम्हारे दिल प्यार करते हैं कि तुम उस स्त्री की क़ब्र पर फूलों की चादर चढ़ाओ, जिसे मेरा दिल प्यार करता है, क्योंकि जो फूल तुम किसी भूली हुई क़ब्र पर चढ़ाते हो, वह उस ओस-कण के समान होता है जो प्रभात की पलकों से गुलाब की खिली हुई पत्तियों पर गिरता है।

२ :

खामोश गम

जवानी की सुबह को तुम भी याद करते हो, और मैं भी। लेकिन फ़रक इतना है कि तुम इस विलासपूर्ण युग के बीत जाने पर दुख मानते हो और चाहते हो कि किसी-न-किसी तरह वह युग वापस आ जाय, और मैं इस छलिया युग को इस तरह याद करता हूं जैसे नवयुवक क़ैदी क़ैदखाने की काली दीवारों और जंजीरों के भारी बोझ को याद करता है।

तुम बचपन और जवानी के बीच आने वाले उस सुनहरी युग को पुकारते हो जो जीवन के दुखों और डरों की हंसी उड़ाता है और चिन्ता तथा कामों के सिरों के ऊपर से अपने पंख फड़फड़ाता हुआ इस तरह गुज़र जाता है जैसे मधु-मक्खी फूलों के लदे बागों की सैर करती हुई गन्दे तालाबों पर से गुज़र जाय।

पर मैं अपने में इतनी हिम्मत नहीं पाता कि अपने जवानी के युग को पुकारूं। मैं अगर पुकार सकता हूँ तो केवल उन खामोश और गुप्त दुखों के दर्द को, जो मेरे दिल में बैठे हैं। जब कभी वे उठते हैं, तो तूफान और आंधी की तरह उठते हैं। ये दुख दिल के साथ-साथ बढ़ते हैं। फिर एक समय आता है, कि इन दुखों की अधिकता स्वयं इनके लिए ज्ञान के रास्ते बन्द कर देती है और ये दिल-ही-दिल में घुटकर रह जाते हैं। इस समय प्रेम आता है और दिल के दरवाजे खोल देता है और दिल का कोना-कोना प्रेम के प्रकाश से रोशन हो जाता है।

ऐसा ही कुछ मुझ पर बीता। प्रेम ने मेरी ज़बान खोली और मैं

बोलने लगा; मेरी पलकों को खोला और मैं रोने लगा; मेरे गले, कंठ और सीने की घुटन को दूर किया और मैं ठंडे सांस भरने और आह-फ़रियाद करने लगा।

लोगो ! तुम उन खेतों, बागों, मैदानों और गली-कूचों को याद करते हो जिन्होंने तुम्हारे खेल-तमाशे देखे और तुम्हारी भोली-भाली कानाफूसी सुनी है। और मैं उत्तरी लबनान के उन खंडहरों को याद करता हूं जो काल की तोड़-फोड़ से बच गए हैं। मेरी दशा तो यह है कि जब कभी संसार की तरफ़ से अपनी आंखें बन्द कर लेता हूं, तो उन घाटियों को जादू और तेज से भरा हुआ देखता हूं और उन पहाड़ों को बड़ाई और विशेषता के साथ आसमान से बातें करते देखता हूँ। जब कभी मैं सामाजिक हो-हल्लों की तरफ़ से अपने कान बन्द कर लेता हूँ तो उन झरनों के प्रवाह और उन टहनियों की सरसराहट की आवाज़ें सुनता हूं।

लेकिन सलमा में कुछ खास गुण थे जिनका ज़िक्र मैं अब कर रहा हूँ। जैसे दूध पीता बच्चा अपनी मां की गोद की तरफ़ लपकता है वैसे ही मैं उसके गुणों की तरफ़ शौक से दौड़ता हूं। जवानी के अंधेरों से घिरी हुई मेरी आत्मा इन गुणों के कारण इस प्रकार दुख मान रही है जैसे पक्षियों के झुंड को चौड़े आकाश में आज़ादी के साथ उड़ते देखकर क़ैदी पक्षी अपने पिंजरे की तीलियों से सिर पटकता है। हां, यही वह गुण हैं, जो मेरे सीने को सोच-विचार के दर्द और चिंता की कड़वाहट से भर देते हैं और मेरे दिल के आस-पास आश्चर्य और संदेहों की अंगुलियों से निराशा का पर्दा तान देते हैं।

यही कारण है कि जब कभी मैं जंगल में घूमने के लिए निकलता हूँ, तो दुखी होकर लौट आता हूँ। ऐसी अवस्था में मेरी निगाहों से चिन्ता के कारण भी छिप गए हैं। शाम के वक्त सूरज की किरनों से रंगीन बादलों को जब मैं देखता हूँ तो तबियत में एक पकड़-सी अनुभव होती है। यह वह बरबाद करने वाली पकड़ है,

जिसका मतलब मेरे अज्ञान के कारण गूढ़ बनता जाता है और जब मैं कोयल की कूक या झरने का 'गीत' सुनता हूं, तो शोक की मूर्त्ति बनकर खड़ा हो जाता हूँ। और मैं नहीं जानता कि इस दुख-चिंता को गति देने वाले कौन हैं?

कहते हैं अज्ञान बेफिक्री का पालना है और बेफिक्री सुख-चैन का बिस्तर। यह कथन उन लोगों के समीप ठीक है जो मुरदों की तरह पैदा होते हैं और जड़ पदार्थों की तरह ज़िन्दगी व्यतीत करते हैं।

पर यही अंधा अज्ञान यदि अपना घर जागृत प्रबल इच्छाओं के आस-पास बनाले, तो ज़िन्दगी सातवें नरक से भी नीचे और मौत से भी ज्यादा कड़वी बन जाती है।

जो भावुक नौजवान अनुभव ज्यादा करता है और समझता कम है वह दुनिया की सबसे ज्यादा अभागी रचना है क्योंकि वह दो घातक और भिन्न शक्तियों से घिरा हुआ है। एक गुप्त शक्ति है जो उसे बादलों की दुनिया में ले जाती है और कल्पना तथा स्वप्न के ऊपर छाई हुई कुहर के पीछे से दुनिया के गुणों को दिखाती है। और दूसरी प्रकट शक्ति वह है, जो उसके पांवों को भूमि पर रखती है और उसकी दृष्टि को धूल-मिट्टी से बेकार करके अंधकार-भरी दुनिया में इस तरह साथी-रहित और निस्सहाय छोड़ देती है कि वह हर कदम पर ठोकरें खाता हुआ भय के मारे मर जाता है।

ग़म के हाथ देखने में नरम और कोमल, पर वास्तव में बहुत बलवान होते हैं। ये हमारे दिलों पर काबू पाते हैं और एकान्त में इन्हें इसलिए कष्ट पहुंचाते हैं, क्योंकि एकान्त ग़म का इसी तरह साथी है जिस तरह शोक आत्मिक हलचल का सहायक है। और जिस नौजवान के एक पहलू में एकान्त के प्रभाव हों और दूसरे पहलू में ग़म के असर हों, उसकी आत्मा चमेली के उस सफेद फूल के समान है, जो खिलते वक्त हवा के सामने थरथराता हुआ प्रभात की किरनों के लिए अपना सीना खोल देता है और शाम की कल्पना से ही मुरझाकर रह जाता है।

यही कारण है कि ऐसे अभागे नौजवान के लिए न दिल बहलाने का साधन है, जिसमें वह अपनी चिंता को भुला सके और न कोई उसका सहायक है और न कोई उससे सहानुभूति करने वाला ऐसा आदमी है, जो उसकी चिंता में साथी हो सके। ज़िन्दगी इसके लिए एक तंग और अंधेरा कैदखाना है जहां देखने के लिए मकड़ी के जाले और सुनने के लिए छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़ों की आवाजें हैं।

ठीक इसी तरह मेरे ग़म ने भी जो बचपन में मेरा मार्ग-दर्शक था, मेरी आवश्यकताओं को अपनी तीव्रता और आधिक्य के कारण न मुझे खेल-तमाशों की तरफ प्रवृत्त होने दिया और न उसने मुझे किसी दोस्त की जरूरत अनुभव होने दी, क्योंकि मैं जहां जाता था वहीं इस ग़म को पाता था। वह मेरे अंतरंग का एक स्वाभाविक रोग था जिसने मुझे जल्दबाजी पसन्द करने वाला बना दिया और मेरी आत्मा की खेल-कूद की सब प्रवृत्तियों को मार दिया। उसने मेरे कन्धों से जवानी के सब निशान उखाड़ फेंके और इस संघर्षपूर्ण जीवन में मुझे उस पहाड़ी तालाब के समान बना दिया जिसके ठहरे हुए पानी में आकाश के धुंधले बादल के रंगों और वृक्षों की टहनियों की लचक की परछाईं तो पड़ रही हो, पर उस पानी को कोई ऐसा रास्ता न मिल रहा हो जिससे वह नदी की तरह गाता हुआ बहकर समुद्र में जा मिले।

अठारह वर्ष की आयु से पहले-पहले मेरी ज़िन्दगी यह थी, पर मेरी आयु का अठारहवां वर्ष मेरे बीते हुए काल में इतना ऊंचा स्थान रखता है जैसे पहाड़ की चोटी। यह इसी वर्ष की कृपा है कि इसने मुझे दुनिया के विषय में सोच-विचार करने का तरीका सिखाया। इसीने मुझे आदमी की भिन्न-भिन्न राहों, उसके आवेशों की हरयावलों, उसके कष्टों की घाटियों और उसके कानूनी और रिवाजी बंधनों के गढ़ों को बहुत पास से दिखाया।

इसी वर्ष मेरा दूसरा जन्म हुआ क्योंकि जो आदमी अपने जीवन

में चिंताग्रस्त न हो, जिसने निराशा के पेट में पांव न फैलाया हो और जिसे प्रेम ने स्वप्नों के झूले में न झुलाया हो, उसका पूरा जीवन अस्तित्व रूपी पुस्तक के सादा और कोरे पन्ने से ज्यादा हैसियत नहीं रखता।

इसी वर्ष मैंने एक सुन्दर नवयुवती की पलकों के पीछे से स्वर्ग के देवताओं को अपनी तरफ टकटकी बाँधे देखा और इसी वर्ष पापी पुरुष के सीने में नारकी असुर मुझे चीखते-चिल्लाते और दौड़ते-भागते नज़र आए। जो आदमी जीवन की अच्छाइयों और बुराइयों में देवताओं और असुरों को नहीं देखता, वह ईश्वरीय ज्ञान से अपरिचित और तीव्र आवेशों से वंचित रहता है।

: २ :

मौत का हाथ

इसी विचित्र वर्ष की बसंत ऋतु का ज़िक्र है। मैं बैरुत में था कि अप्रैल का महीना हरयावल फैलाने वाली और पुष्पवर्षा की हर्षोत्पादक सब घटनाओं के साथ आया। बैरुत के बाग़ों में हरयावल और फूलों का इतना आधिक्य हुआ कि मालूम होता था कि धरती ने अपने भेदों के सब खज़ाने आकाश के लिए उगल दिये हैं। सेव और बादाम के वृक्ष सुगंधपूर्ण सफ़ेद वस्त्रों से सजे थे और इमारतों के बीच ये ऐसे मालूम हो रहे थे मानो बिल्लौरी पत्थर सफ़ेद रंग के ऐसे सुन्दर वस्त्र पहने खड़ा है, जिन्हें प्रकृति ने कवियों और साहित्यिकों के लिए नववधू बनाकर भेजा है।

यूँ होने को तो बसंत ऋतु हर जगह चित्ताकर्षक होती है, पर शाम देश में इसकी चित्ताकर्षकता कुछ और ही दशा धारण कर लेती है। बसंत अनजान प्रकृति की वह आत्मा है, जो सारी दुनिया के चारों तरफ भ्रमण करती है। पर जब बसंत शाम देश में पहुंचती है, तो अपनी गति मंद कर देती है। वह उड़ती हुई शाम देश के खुले मैदानों में वैभवशाली सम्राटों और पैगम्बरों की आत्माओं से मेल-जोल के कारण पीछे मुड़-मुड़कर देखती है, यहूदी मार्गों के अमर संगीत से मिलती है, और लबनान देश के सनोवरी वृक्षों की टहनियों पर प्राचीन वैभव के गीत गाती है।

बैरुत नगर में बसंत ऋतु दूसरी सब ऋतुओं से ज्यादा सुन्दर और चित्ताकर्षक होती है, क्योंकि इस ऋतु में न यहां जाड़ों[1] का कीचड़, न

---

१ भूमध्यसागर के आस-पास के देशों में वर्षा जाड़ों में होती है।

पानी होता है, और न गर्मियों की धूल-मिट्टी। जाड़ों की महावट और गर्मियों की तपन के बीच की ऋतु में बैरुत नगर उस सुन्दर कुमारी के समान होता है जो दरिया में नहाकर समुद्र-तट पर बैठी अपने शरीर को सूरज की किरनों से सुखा रही हो।

अप्रैल की मस्त बनाने वाली रंगीनियां और जीवनदायक मुसकान अपने पूरे यौवन पर थी कि मैं अपने एक मित्र से मिलने के लिए गया। वह समाज के हो-हल्लड़ से दूर एक एकान्त स्थान पर शांति और संतोष का जीवन व्यतीत करता था। हम दोनों अपनी-अपनी इच्छाओं और कामनाओं का चित्र शब्दों में खींच रहे थे। उसी समय एक पैंसठ वर्ष के वृद्ध पुरुष ने कमरे में प्रवेश किया। उसके ढीले-ढाले कपड़े और वृद्धावस्था से प्रभावित मुख और शरीर बड़ाई और प्रतिष्ठा को परछाईं लिये हुए थे।

मैं आदर-भाव से खड़ा होगया। पर इससे पहले कि मैं विनयपूर्वक उससे हाथ मिलाता, मेरा मित्र आगे बढ़ा और नवागंतुक की तरफ इशारा करके कहने लगा, "आप हजरत फ़ारिस आफ़न्दी करामा हैं।"

इसके बाद उसने प्रशंसापूर्ण शब्दों में वृद्ध से मेरा परिचय कराया। नवागंतुक ने थोड़ी देर तक मुझे बहुत ध्यान से देखा और फिर अपने ऊँचे ललाट को जिस पर सफ़ेद बालों का हिम-मुकुट रखा था, अंगु-लियों से पकड़कर कुछ सोचने लगा मानो अपनी स्मरण-शक्ति में वह किसी पहले-देखी शकल की याद ताज़ा कर रहा हो।

वह मुसकराया और मेरे समीप आकर प्रसन्नतापूर्ण स्वर में कहने लगा—

"तुम मेरे एक पुराने मित्र के बेटे हो, जिसकी संगति में मैंने अपनी एक-चौथाई उम्र गुज़ारी है। यह कहना कठिन है कि तुम्हें देखकर मुझे कितनी खुशी हुई है और तुम्हारे पिता से मिलने की कितनी तीव्र अभि-लाषा मेरे दिल में पैदा हुई है।"

मैं उसकी बातचीत से बहुत प्रभावित हुआ और मैंने अपने दिल

में एक अज्ञात भावावेश का अनुभव किया, जो आहिस्ता-आहिस्ता मुझे ऐसे उसके समीप कर रहा था जैसे आंधी आने से पहले पक्षी को उस का स्वभाव उसके घोंसले की तरफ ले जाता है।

हम सब बैठ गए और फारिस आफिंदी ने मेरे पिता के साथ अपने मेल-जोल की चर्चा छेड़ दी। वह बार-बार अपनी जवानी के उस काल को याद कर रहा था, जो उसने मेरे पिता की संगति में गुज़ारा था। वह हमें पिछले दिनों की उन घटनाओं को सुना रहा था, जिन्हें ज़माने ने उसके दिल में लपेटकर उसके सीने में दबा रखा था।

बड़े-बूढ़े लोग कल्पना के द्वारा अपनी जवानी के दिनों की तरफ इस तरह लौटते हैं, जैसे कोई प्रवासी दिल में शौक और अरमानों का संसार बसाए हुए अपनी जन्मभूमि की तरफ लौटता है। वे अपनी जवानी की कहानियाँ सिलसिलेवार इस तरह सुनाते हैं, जैसे कवि अपनी सर्वश्रेष्ठ कविताएं गुनगुनाता है। उनकी आत्माएं अतीत के कोनों में उलझी रहती हैं, क्योंकि वर्तमान बेपरवाही से उनके बराबर से गुज़र जाता है और भविष्य मृत्यु की कुहर और कब्र के अंधकार का परदा ओढ़कर उनकी निगाहों के सामने आता है।

अतीत की कहानी कहने में एक घंटा इस तरह गुज़र गया, जैसे टहनियों की छाया घास के ऊपर से गुज़र जाती है। इसके बाद फारिस करामा जाने के लिए खड़ा हुआ। विदा के तौर पर जब मैं उसके करीब हुआ तो उसने अपना हाथ मेरे कन्धे पर रखा और कहा—

"तुम्हारे पिता को देखे मुझे बीस वर्ष हो गए हैं। पर मुझे आशा है कि तुम्हारी निरंतर मुलाकातें इस लम्बी जुदाई की कमी को पूरा कर देंगी।"

जैसा कि योग्य पुत्र को अपने पिता के मित्रों के सामने करना चाहिए, मैंने शुक्रिये के तौर पर अपना सिर झुकाया और वचन दिया कि आज्ञा का पालन किया जायगा।

फ़ारिस करामा के चले जाने के बाद मैंने अपने मित्र से उसके बारे

में और हाल मालूम करना चाहा। संयत स्वर में मेरे मित्र ने उत्तर दिया—

"मैं बेरूत नगर में फारिस करामा के सिवा किसी ऐसे आदमी को नहीं जानता, जिसके बड़प्पन का कारण उसका धन-दौलत और जिसके धन-दौलत का कारण उसका बड़प्पन न हो। वह उन गिने-चुने लोगों में से है, जो इस दुनिया में आते हैं और किसी एक भी जीव को कष्ट पहुँचाए बिना यहां से कूच कर जाते हैं।

"इस प्रकार के लोग प्रायः अभागे और पीड़ित होते हैं, क्योंकि वह होशियारी और चालाकी के रास्तों से अपरिचित होते हैं जो उन्हें मायाचार और दुष्टता के पुतलों के हथकण्डों से बचा सकें।

"फारिस करामा की इकलौती बेटी है, जो शहर से बाहर एक बड़ी कोठी में अपने पिता के साथ रहती है। शिष्टाचार और सद्स्वभाव के लिहाज़ से वह फ़ारिस करामा की जीती-जागती तस्वीर है और सौंदर्य तथा सुकुमारता के लिहाज़ से वह सब नवयुवतियों में एक है। पर मेरा ख्याल है, कि वह भी अपने पिता की तरह अभागी होगी,क्योंकि उसके पिता के धन और बड़ाई ने उसे एक भयानक और अंधेरे नरक के किनारे ला खड़ा किया है।"

आखिरी वाक्य कहते वक्त मेरे मित्र के मुख पर दुख और खेद के चिन्ह तेजी के साथ प्रकट हो गए। लेकिन उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—

"फारिस करामा दिल का शरीफ और स्वभाव का सज्जन सही, पर इरादे का कमज़ोर है। लोगों की मक्कारियों और लोभ-लालच ने उसे अंधा और गूंगा बना दिया है। फिर भी उसकी बेटी उसकी हरएक आज्ञा और इच्छा का पालन करती है, चाहे वे उसकी स्वाभाविक भलाइयों के सर्वथा विरुद्ध ही क्यों न हों।"

"यह एक घिनौना रहस्य है, जो इन बाप-बेटी की जिन्दगियों में छिपा है। संयोग से इस रहस्य को एक आदमी ने पा लिया है, जो

लालच, धूर्तता, कंजूसी और बुद्धि का पुतला है। यह आदमी एक पादरी है, जिसके दुराचार भी अंजील की छाया में होने के कारण साधारण जनता की दृष्टि में सद्गुणों का दर्जा रखते हैं। वह शहरों में धर्माचार्य समझा जाता है, जिसका भय जनता के शरीरों से गुजरकर उनकी आत्माओं पर छाया हुआ है। लोग अपने दुर्बल विश्वास के कारण उसके सामने इस तरह झुकते हैं, जिस तरह कसाई के सामने भेड़-बकरियों की गर्दनें।

"इस पादरी का एक भतीजा है,जिसके अन्तरंग में छल,कपट और पापाचार की भावनाएं इस प्रकार आपस में टकराती रहती हैं, जैसे गढ़ों और तालाबों में सांप और बिच्छू। मेरे ख्याल में वह दिन दूर नहीं है, जब यह पादरी काले वस्त्र पहने हुए दाईं तरफ अपने भतीजे और बांई तरफ फ़ारिस करामा की लड़की को लिये खड़ा होगा और अपने पापी हाथों से इनके सिरों पर विवाह का सेहरा रखेगा।

"वह एक पवित्र शरीर को एक सड़ी हुई लाश के साथ मन्त्रों रूपी जंजीरों से जकड़ेगा और एक दैवी आत्मा को एक सड़े और हृदयहीन आदमी की रातों को सुखी बनाने के लिए निकम्मे क़ानून के बन्धन में दे देगा।

"फ़ारिस करामा और उसकी बेटी के बारे में जो कुछ मैं तुम्हारे सामने कहना चाहता था कह दिया। अब तुम इससे ज्यादा कुछ न पूछना, क्योंकि दुख का ज़िक्र मुसीबत को इस तरह क़रीब ला देता है जिस तरह मौत का ज़िक्र मौत को करीब कर देता है।"

मेरे मित्र ने अपना मुंह फेर लिया और वह खिड़की के बाहर देखने लगा, मानो फैले हुए प्रकाश में वह दिन और रात के भेदों को खोज रहा हो।

मैं अपनी जगह से उठा। अपने मित्र से बिदाई का हाथ मिलाते वक्त मैंने कहा "मैं कल फ़ारिस करामा से मिलने जाऊंगा, जिससे मेरा वचन पूरा हो जायगा और उस बात का आदर हो जायगा जिसे मेरे

पिता के प्रेम ने उसके दिल से अभी भूलने नहीं दिया है।"

मेरे मित्र का रंग पीला पड़ गया और उसका शरीर काँप उठा, मानो मेरी इस संक्षिप्त बात ने उसके लिए एक नई और भयानक चिंता पैदा कर दी है। उसने मुझ पर एक लम्बी और विचित्र निगाह डाली—प्रेम, कृपा और डर की मिली-जुली निगाह, जैसी महात्माओं की निगाह जो आत्मा की गहराइयों में उस चीज को देख लेती है, जिससे स्वयं आत्मा भी अपरिचित होती है। उसके होंठ हिले, पर वह कुछ कह न सका।

अपने मित्र को इसी दशा में छोड़कर, अपनी नष्ट चिंताओं में खोया-सा मैं दरवाजे की तरफ चल पड़ा। मैंने पीछे मुड़कर देखा कि उसकी दोनों आंखे उसी विचित्र निगाहके साथ मेरा पीछा कर रही थीं। उसकी निगाह में जो भाव भरा था वह उस वक्त तक मेरी समझ में नहीं आया जब तक कि मेरी आत्मा इस जड़ दुनियासे देवलोक की तरफ न उड़ गई, जहां दिल निगाहों के द्वारा मिलते हैं और आत्माएं मुहब्बत की गोद में ऊपर को उठती हैं।

: ४ :

पहली भेंट

कुछ दिनों के बाद मेरा दिल एकान्त से उकता गया। मेरी आंखें नीरस पुस्तकों के पढ़ने से थक गई थीं। तब मैं फ़ारिस करामा के यहां जाने के लिए गाड़ी में सवार हुआ। हम सनोवर के उस जंगल के करीब पहुंचे जहाँ बैरूतवासी सैर-सपाटे के लिए आते हैं। वहां कोचवान ने घोड़ों की बाग बड़ी सड़क से एक ऐसी सड़क की तरफ मोड़ दी, जिस पर बेंत के वृक्ष छाया किये हुए थे। सड़क के दोनों ओर छोटे-छोटे पौदे और झाड़ियां, अंगूर की बेलें और रंग-बिरंगे फूल हवा में लहलहा रहे थे।

गाड़ी एक ऐसी कोठी के करीब पहुंच कर रुकी जिसके चारों ओर बाग था। वहां वृक्षों की टहनियां एक दूसरे से गले मिल रही थीं और वायु में गुलाब और चमेली के फूलों की सुगन्ध बस रही थी।

मैं कुछ ही कदम चला था कि फ़ारिस करामा मेरा स्वागत करने के लिए कोठी के दरवाजे से निकलता नज़र आया। शायद घोड़ों की टाप ने उसे मेरे आने की सूचना दे दी थी। मुझे देखकर वह बहुत खुश हुआ और खुशी-खुशी मुझे कोठी में ले गया। एक इच्छुक पिता की तरह उसने मुझे अपने पास बिठाया और मुझसे मेरे पिछले हाल पूछने लगा। जब उसने मेरे भावी इरादों को मालूम करना चाहा, तो मुझे एक ऐसे संगीतपूर्ण स्वर में जवाब देना पड़ा, जो स्वप्नों और कल्पित इच्छाओं से सम्बन्ध रखता है। मेरा वह स्वर ऐसा संगीतपूर्ण था, जो एक नौजवान के जीवन का उस समय तक आवश्यक भाग होता है, जब तक कि ख्याल और कल्पना की लहरें संघर्ष के लिए उसे व्यवहार रूपी समुद्र के तट पर नहीं फेंक देतीं।

जवानी के बाजुओं के पर कोमल भावों से और नसें सूक्ष्म विचारों से मिलकर बनी हैं। ये नौजवानों को बादलों से परे उड़ा ले जाती हैं जहाँ से दुनिया इन्द्रधनुष के रंगों में डूबी हुई और जिन्दगी महानता और बड़ाई के गीत गाती हुई नजर आती है।

लेकिन ये नरम और हल्के बाजू तूफान की आंधी के मुकाबले को सहन न करके वास्तविकता की दुनिया में गिर पड़ते हैं। वास्तविकता की दुनिया एक अनोखा दर्पण है जिसमें आत्मा निस्सार और शक्ल बिगड़ी हुई नजर पड़ती है।

इस समय दरवाजे के रेशमी परदे के पीछे से एक सुन्दर लड़की सफेद रेशम के कीमती वस्त्र पहने हुई प्रकट हुई। मैं उसके स्वागत के लिए खड़ा हो गया। मेरे साथ फारिस करामा भी खड़ा हुआ और मुझसे परिचय कराने के ढंग से उसने कहा, "यह मेरी लड़की सलमा है।"

फिर उसे मेरा नाम बताकर उसने कहा, "मेरा पुराना मित्र, जिसे जमाने ने मेरी दृष्टि से छिपा दिया था, अपने बेटे के रूप में मेरे सामने है। इस वक्त मैं उसे देख भी रहा हूँ और नहीं भी देख रहा हूँ।"

लड़की मेरी तरफ बढ़ी और उसने अपनी दृष्टि मेरे चेहरे पर इस तरह गाड़ दी, मानो मेरी आंखों से वह मेरी हकीकत जानना चाहती हो, और मालूम करना चाहती हो कि मैं यहाँ क्यों आया हूं।

फिर उसने मेरी तरफ हाथ बढ़ाया, जो नजाकत और गोरेपन में चमेली के फूल के समान था।

हाथ मिलाते वक्त जब उसकी हथेली मेरी हथेली से छुई, तो मैंने एक ऐसी अनोखी और नई हालत अनुभव की, जैसे कवि के विचार पैदा होते वक्त कवि की कल्पना-शक्ति में होते हैं।

हम सब खामोश बैठे थे। मालूम होता था सलमा अपने साथ एक ऐसी देवी आत्मा कमरे में लेकर आई है, जिसने वहां शान्ति और प्रकाश फैला दिया है। उसने मेरी तरफ इस तरह ध्यान दिया मानो

उसने मेरी अंतरंग की सब हालत को ख्याल में रखकर समझ लिया है। वह मुसकाकर कहने लगी, "पिताजी ने अपनी जवानी की कथा सुनाते समय प्रायः आपके पिता का ज़िक्र किया है और क्योंकि इन बातों के आधार पर मैं आपके पिता को जानती हूँ, इसलिए मेरे ख्याल में हमारी यह भेंट पहली भेंट नहीं कही जा सकती।"

फ़ारिस करामा अपनी बेटी की इस बात से बहुत खुश हुआ। उसकी आंखें खिल गईं। फिर उसने कहा, "सलमा एक भावुक और धार्मिक विचार वाली लड़की है। इसलिए इसे हर चीज़ आत्मा के मैदान में तैरती नज़र आती है।"

अब फ़ारिस करामा ने पूरे प्रयत्न और बहुत सहानुभूति के साथ मेरा हाल बयान करना शुरू किया। ऐसा मालूम होता था कि उसने मेरी देह में कोई जादू-भरा रहस्य पा लिया है, जो उसे याद के परों पर बिठाकर अतीत के चित्तमोहक ज़माने की तरफ़ लिये जा रहा है।

फ़ारिस करामा मुझ पर निगाह जमाए अपनी जवानी के दिनों की तरफ लौटना चाहता था। और मैं दुनिया की यथार्थता से अनजान भविष्य के स्वप्न देख रहा था। वह मेरी तरफ इस तरह देख रहा था जैसे ऋतु के फलों से लदे, झुके, लम्बे और ऊंचे वृक्ष की टहनियां उस छोटे से पौदे पर छाया डाले हुई हों, जिसके इरादे अनुभवहीन, ज़िन्दगी और दुनिया के ऊँच-नीच से अपरिचित हों, और वह उस पुराने वृक्ष के समान था जिसकी जड़ें पक्की हों, जिसने ज़माने की गर्मी और सर्दी का अनुभव प्राप्त किया हो, जो आंधियों और तूफानों के सामने खड़ा हो। और मैं उस नरम और नाज़ुक पौदे के समान था, जिसने बसन्त सिवा और कुछ न देखा हो और जो प्रातःकाल की शीतल, मंद और सुगंधित वायु की हलकी और मनोहर लहरों के सिवा और किसी वायु से न लहलहाया हो।

लेकिन सलमा, वह खामोश बैठी कभी मुझे देखती थी और कभी अपने पिता को, मानो हम दोनों के चेहरे एक पुस्तक के दो पृष्ठ

थे, जिसमें वह ज़िन्दगी की कहानी का प्रथम और अंतिम परिच्छेद पढ़ रही थी।

दिन उन चारदीवारियों और बागों के ऊपर से ठंडे सांस भरता हुआ गुजर गया और सूरज लबनान प्रदेश के उन ऊँचे पर्वतों की चोटियों पर अपने चुम्बन का पीला निशान छोड़कर डूब गया, जो इस कोठी के ठीक सामने थी।

फ़ारिस करामा अपने वृत्तान्त से मुझे अचरज में डाल रहा था; और मैं अपनी जवानीसे संगीत सुनाकर उसे खुश कर रहा था। लेकिन सलमा खिड़की के पास चुपचाप बैठी हम दोनों को चिंतापूर्ण आंखों से देख रही थी। वह हमारी बातें खामोशी से इस तरह सुन रही थी, मानो वह जानती है कि सौंदर्य के लिए एक आकाश की भाषा है, जो उन आवाज़ों और टूटे-फूटे शब्दों से कहीं अधिक ऊंची है जिन्हें हमारी ज़बानें और होंठ प्रकट करते हैं। वह अमर भाषा है जो तमाम मानवी संगीत को अपने में लीन करके एक मूक अनुभूति बना देती है, जैसे कि खामोश समुद्र नदी-नालों के गीतों को अपनी गहराइयों में लीन करके एक अनंत खामोशी में बदल देता है।

सौंदर्य एक रहस्य है जिसे पाकर हमारी आत्माएं सुख पाती हैं, और जिसके असरों से वे ऊपर उड़ती हैं। पर हमारे विचार और कल्पनाएँ इसके सामने मजबूर होते हैं। वह चाहते हैं कि किसी तरह इसे शब्दों का रूप दें, पर असफल रहते हैं।

सौंदर्य वह लहर है जो चश्मे से उभरकर दर्शक के भावों, और प्रेमी की हकीकत के बीच-बीच चलती है।

सच्चा सौन्दर्य वह किरनें हैं, जो हमारी आत्मा के अत्यंत पवित्र चश्मे से फूटकर हमारे बाहरी शरीर को इस तरह प्रकाशित कर देती हैं, जिस तरह बीज की गहराइयों से ज़िन्दगी फूटती है और वे फूल रंग और सुगंध प्राप्त करते हैं।

सच्चा सौंदर्य पुरुष और स्त्री के बीच एक पूरा समझौता है, जो

एक क्षण में पूर्णता को पहुँच जाता है और उसी क्षण एक ऐसा मिलाप पैदा कर देता है जो दूसरे तमाम मिलापों से बहुत ऊंचा और श्रेष्ठ है। आत्माओं का यही मिलाप है जिसे हम प्रेम कहते हैं।

तो क्या उस दिन शाम को मेरी आत्मा ने सलमा की आत्मा को समझ लिया था? क्या यह इसी समय का असर था कि मैंने सलमा को संसार की सबसे सुन्दर स्त्री पाया था ? क्या जवानी का यही नशा था, जिसने हमें उन धुंधले चित्रों की कल्पनाओं में उलझा दिया था जिनकी कोई हकीकत न थी ? क्या जवानी ने मुझे अंधा कर दिया था कि मैं सलमा की आँखों में किरनों, उसके कद में नज़ाकत, और उसके नख-शिख में माधुर्य होने का अनुमान कर रहा था ? क्या यही किरनें, यही नज़ाकत और यही माधुर्य था, जिन्होंने प्रेम के सुख-दुखों का तमाशा देखने के लिए मेरी आंखें खोलीं ?

मुझे कुछ मालूम नहीं। पर मैं इतना जानता हूँ, कि वह जोश जो मैंने इस समय अनुभव किया, इससे पहले कभी अनुभव न किया था। मेरे दिल के गिर्द जो जोश आहिस्ता-आहिस्ता घूम रहा था, ऐसा ही था जिस तरह जीवन के आरम्भ से पहले आत्मा अथाह समुद्र पर उड़ रही हो। इसी जोश से मेरी भलाई और दुर्भाग्य पैदा हुए, जिस तरह इस आत्मा की इच्छा से दुनिया एक दूसरे के पीछे अस्तित्व में आई।

इस तरह वह वक्त गुज़रा जिसने मुझे और सलमा को पहली बार एक स्थान पर इकट्ठा किया था, और यह हुई आत्मा की इच्छा कि उसने अनजाने ढगसे मुझे घबराहट और बेपरवाही के बंधनों से आज़ाद कर दिया, जिससे मैं आजाद तौर पर मुहब्बत के जलूस के साथ-साथ चल सकूं।

इस दुनिया में केवल प्रेम ही वह आजादी है,जो आत्मा को उस ऊँचे स्थान पर पहुंचा देती है जहां इन्सानी क़ानून और रिवाज नहीं पहुँचा सकते और जहां बेजान कायदे-कानून के लिए कोई गुंजाइश नहीं है।

जब मैं विदा होने के लिए खड़ा हुआ तो फ़ारिस करामा मेरे क़रीब आया और प्रेम-भरे स्वर में कहने लगा, "अब तुम्हें इस घर का रास्ता मालूम हो गया है। मुझे उम्मीद है कि तुम इसे अपना घर समझकर भविष्य में यहां आते रहोगे; और मुझे अपने पिता की तरह और सलमा को अपनी बहन की तरह समझोगे। क्यों सलमा, मैं गलत कह रहा हूँ ?"

सलमा ने 'हाँ' के रूप में अपना सिर हिलाया और मेरी तरफ उस भूले-भटके मुसाफ़िर की तरह देखा जिसे कोई अपना जाना-पहचाना समरुचि वाला आदमी मिल जाय।

फ़ारिस करामा ने जो शब्द मेरे सम्बन्ध में कहे, वह पहला गीत था जिसने प्रेम के दरबार में मुझे उसकी बेटी के साथ-साथ खड़ा कर दिया था। वे अलौकिक गीतों की वर्षा थे जो दुख और शोक पर समाप्त होते हैं। ये शब्द एक शक्ति थी, जिसने हमारी आत्माओं के हौसले बढ़ाकर हमें प्रकाश और आग के समीप कर दिया। इन शब्दों ने एक प्याले का रूप धारण कर लिया, जिसमें हम दोनों ने स्वर्ग का अमृत भी पिया और विष भी।

मैं कोठी से निकला। फ़ारिस करामा और सलमा मुझे बाग़ की चारदीवारी तक छोड़ने आये। मैंने उन दोनों को विदा कहा। मेरा दिल सीने में इस तरह धड़क रहा था जिस तरह प्यासे होंठ पानी के गिलास से छूते वक्त फड़कते हैं।

: ५ :

सफ़ेद लपट

अप्रैल का महीना समाप्त होगया। इस बीच में मैं बराबर फ़ारिस करामाके यहां जाता रहा और सलमा से भेंट करता रहा। हम दोनों बातें करते-करते बाग के किसी कोने में चले जाते। वहां मैं सलमा के सामने बैठकर उसके गुणों पर विचार करता और उसके स्वाभाविक सद्गुणों पर दिल-ही-दिल में आश्चर्य करता। मैं उसकी खामोश चिंता की फरियाद सुनता और उन गुप्त हाथों का अस्तित्व अनुभव करता जो मुझे उसकी तरफ खींचते थे। सलमा की प्रत्येक भेंट उसके सौंदर्य और रूप की एक नई कोमलता और उसकी आत्मा का एक गूढ़ रहस्य मुझ पर ज़ाहिर करती। यहाँ तक कि उसका अस्तित्व मेरे लिए एक पुस्तक बन गया जिसके पाठ मैं एक-एक शब्द करके पढ़ता और जबानी याद करता था; जिसके गीत मैं बार-बार गुनगुनाता था, लेकिन जिसे ख़त्म करना मेरे बस से बाहर था।

जिस स्त्री को प्रकृति ने सुन्दर रूप के साथ-साथ सद्स्वभाव भी प्रदान किया हो, वह एक खुली हुई पर नाजुक हकीकत है। उसे हम प्रेमके द्वारा समझ सकते हैं और पवित्रता के द्वारा छू भी सकते हैं। लेकिन यदि हम चाहें कि उस हकीकत को शब्दों में बयान करें तो वह आश्चर्य और सन्देह की कुहर में छिपकर हमारी निगाहों से ओझल हो जायगी।

क्योंकि सलमा भी बाहरी और भीतरी गुणों की एक उत्तम मूर्ति थी इसलिए यह कैसे सम्भव है कि मैं एक ऐसे आदमी के सामने उसके गुण वर्णन करूं जो उसे नहीं जानता? क्या मौत की छाया में बैठा

हुआ मुनष्य बुलबुल के गीतों, फूलों की कानाफूसियों और नदी के रागों को याद रख सकता है ? क्या भारी ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ क़ैदी प्रातः-काल की वायु के झोंकों के साथ दौड़ सकता है ?

लेकिन क्या ख़ामोशी बातचीत से अधिक असहनीय नहीं होती ? और अगर मैं सलमा के सम्बन्ध में अपने विचारों को टूटे-फूटे शब्दों में प्रकट करूं, तो क्या इसमें कोई डर मेरे लिए रुकावट है ? क्या ऐसी हालत में मैं सुनहरी रेखाओं के द्वारा उसकी हक़ीक़त को तस्वीर का रूप नहीं दे सकता ? निस्सन्देह सहरा का एक मुसाफिर रूखी-सूखी रोटी खाने से इन्कार नहीं करेगा, अगर उसे खाने-पीने को अच्छे-अच्छे भोजन और ठंडा जल न मिले।

सलमा दुबले-पतले शरीर की थी। वह सफ़ेद बारीक रेशमी कपड़ों में ऐसी मालूम होती थी जैसे खिड़की में से प्रवेश करती हुई चांद की किरनें। उसकी चाल सीधी, धीमी और जंची-तुली थी, जैसे एक सुरीला मधुर राग। उसकी वाणी कोमल और मीठी थी, जो उसके ठंडे सांसों से छनकर उसके गुलाबी होंठों से इस तरह झरती थी, जैसे हवा की लहरों के कारण ओस के मोती फूलों से टपकें। और उसका चेहरा ! कौन है जो सलमा के चेहरे के गुण वर्णन कर सके ? वह कौनसे शब्द हैं जिनके द्वारा हम एक ऐसे ख़ामोश और दुखी चेहरे का चित्र खींच सकें जिसे पारदर्शी पीले रंग के परदे ने छिपा भी रखा हो और खोल भी रखा हो ? और वह कौनसी ज़बान है जिसके द्वारा हम उन नख-शिखों को बयान कर सकें, जो हर वक्त एक पवित्र पर दुखी आत्मा के रहस्यों को प्रकट करते हों, जो दर्शकों को उस आत्मिक संसार की याद दिलाते हों, जो इस दुनिया से कोसों दूर है ? सलमा के चेहरे की सुन्दरता उस कसौटी पर नहीं कसी जा सकती जो इन्सान ने सुन्दरता परखने के लिए बनाई है। वह तो उस मधुर स्वप्न या ऊंचे विचार के समान है जो शब्दों की सीमा के बाहर और कल्पनातीत है। जिसे न तो चित्रकार की लेखनी चित्र का रूप दे सकती है और न ही

मूर्त्तिकार की छैनी साकार कर सकती है।

सलमा का सौंदर्य उसके सुनहरी बालों में नहीं वरन् उस पवित्र तेजमंडल में था,जो उन बालों के चारों तरफ था। उसका सौंदर्य उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में नहीं वरन् उस ज्योति में था, जो उन आंखों में दिखाई दे रही थी, उसके कोमल गुलाबी होंठों में नहीं, वरन् उस माधुर्य में था, जो उनसे टपकता था, उसकी मुड़ी हुई गर्दन में नहीं, वरन् उस हालत में था, जो सलमा के कुछ आगे की तरफ गर्दन झुकाने से पैदा होती थी।

सलमाका सौंदर्य उसके शरीर की अच्छाई में नहीं उसकी आत्मा की महानता में था। वह आत्मा उस भड़कती हुई सफ़ेद लो के समान थी जो भूमि और अनन्त आकाश के बीच में तैर रही हो।

सलमा का सौंदर्य कवियों की उन सूक्ष्म कल्पनाओं की जाति से सम्बन्ध रखता था जिनकी परछाइयाँ हमें शाम देश की कविताओं, अमर गीतों और चित्रों में नजर आती हैं। लेकिन कल्पनाशील कवि और चित्रकार अभागे हैं क्योंकि वह स्वयं और उनकी सब आत्मिक महानताएं आंसुओं के गिलाफ में लिपटी रहती हैं।

सलमा सोचती ज्यादा थी और बोलती कम थी। लेकिन उसकी खामोशी में भी एक संगीत था जो उसके पास बैठने वालों को स्वप्नों के दूरवर्त्ती पवित्र स्थान में ले जाता था। वह सगीत उसे इस योग्य बना देता था कि वह सलमा के दिल की धड़कनों को सुन सके और सलमा के विचारों और भावों को अपनी आंखों के सामने घूमते हुए देख सकें।

लेकिन सबसे बड़ी बात जिसने सलमा के चरित्र और गुणों को चार चांद लगाए, वह उसका अथाह गम था। यह ग़म एक बारीक चादर के समान था, जिसे ओढ़ने के बाद सलमा के शारीरिक गुणों में सौन्दर्य और अनोखेपन की वृद्धि हो गई। और इस चादर की बनावट में से उसकी आत्मा का प्रकाश इस तरह झलकने लगता, जैसे प्रातःकाल

की हलकी धुंध के पीछे से फूलों से लदे वृक्षों की टहनियाँ।

यही ग़म था, जिसने मेरी और सलमा की आत्माओं में मेल-जोल का सम्बंध पैदा कर दिया। इसीसे हम दोनों अपने मन की अनुभूतियों का प्रभाव दूसरे के चेहरे पर साफ़-साफ़ देखने लगे और अपने सीने में घुटी हुई फ़रियादों की गूंज दूसरे की आवाज़ में सुनने लगे।

ऐसा मालूम होता था कि प्रकृति ने हम दोनों को एक दूसरे का अर्धांग बना दिया था। जब एक अंग दूसरे से पवित्रता के साथ मिलता तो पूरा आदमी बन जाता और जब अलग होता तो अपनी आत्मा में एक दुखदायक कमी अनुभव करता।

जिस तरह एक आदमी अपने देश से कोसों दूर दूसरे हमवतन परदेसी से मिलकर खुश होता है, उसी तरह एक दुखी और उदास आदमी ऐसे आदमी से मिलकर सुख और आनंद पाता है जो गुणों में उससे मिलता-जुलता है और अनुभूतियों में उसका साथी है।

इसलिए जिन दिलों को ग़म के रोग ने एक दूसरे के समीप कर दिया है, वह न तो आनन्द की खुशियों से अलग हो सकते हैं और न सुख-चैन के शोर-गुल से, क्योंकि ग़म का सम्बन्ध दो आत्माओं में सुख-चैन के सम्बंध से अधिक दृढ़ होता है। और वह प्रेम सदा के लिए पवित्र, सुन्दर और स्थिर हो जाता है, जिसे आंखों ने अपने आंसुओं से स्नान कराया हो।

: ६ :

तूफान

कुछ दिनों के बाद फ़ारिस करामा ने मुझे अपने घर रात के खाने पर बुलाया और मैं वहाँ गया। मेरी आत्मा उस पवित्र रोटी की भूखी थी जो प्रकृति की ओर से सलमा के हाथों की शोभा बनाई गई थी; वह आध्यात्मिक संसार की ऐसी रोटी थी, जिसे हम आत्मा के मुँह से खाते हैं और हमारी भूख बढ़ जाती है; वह ऐसी रूप-हरी रोटी थी, जिसका स्वाद दुनिया के तत्वदर्शियों ने चखा और उनके तन-मन भड़क उठे। उस रोटी का खमीर प्रकृति ने चुम्बनों की मिठास और आंसुओं के कड़वेपन से पैदा किया और उसे जागृत और भावुक आत्माओं का भोजन बना दिया, जिससे वह उसके स्वाद से आनन्द प्राप्त करें और उसके प्रभाव से संकट में फंसे।

कोठी पर पहुंचकर मैंने देखा कि सलमा बाग के एक कोने में अपना सिर एक वृक्ष के तने पर टिकाए लकड़ी के बैंच पर बैठी है। सफेद कपड़ों में वह ऐसी मालूम हो रही थी मानो कल्पना की परी उस जगह की देख-भाल कर रही है। मैं धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ा और उसके पास इस तरह बैठ गया जैसे एक भक्त अग्निपूजक पवित्र आग के सामने बैठता है। जब मैंने उससे बात करनी चाही, तो ऐसा मालूम हुआ कि मेरी जबान बन्द हो गई है और मेरे होंठ चिपककर रह गए हैं। ऐसी हालत में मैंने यही ठीक समझा कि चुप रहूँ, क्योंकि एक गहरी और अनन्त अनुभूति सीमित शब्दों से बयान की जाने पर अपने अर्थों की विशेषता खो देती है। फिर भी मुझे यह अनुभव हो रहा था कि सलमा इस खामोशी में मेरे दिल की प्रेम-प्रार्थना को सुन रही है

और खुली आंखों से मेरी आत्मा की चलती-फिरती परछाइयां देख रही है।

थोड़ी देर बाद फारिस करामा बाग में आया और अपने स्वभाव के अनुसार उसने मेरी तरफ हाथ फैलाए। मेरा स्वागत करता हुआ वह हमारी तरफ बढ़ा। मालूम होता था कि इस तरह वह उस गुप्त रहस्य को आशीर्वाद दे रहा है, जिसने मेरी और उसकी बेटी की आत्माओं को आपस में बांध दिया है। हंसते हुए उसने कहा, "मेरे बच्चो! आओ, खाना तैयार है।"

हम दोनों उठे और उसके पीछे-पीछे हो लिये। सलमा अपनी शर्मीली और नीची आंखों से प्रेम और सहानुभूति की दृष्टि मुझ पर इस तरह डाल रही थी मानो उसके बाप के शब्दों "मेरे बच्चो" ने अंतरंग में एक नया मधुर भाव पैदा कर दिया था। उस भाव में मेरे प्रति सलमा का प्रेम इस तरह लिपटा हुआ था जैसे कोई दूध-पीता बच्चा अपनी मां की छाती से लिपट रहा हो।

हम सब भोजन पर बैठे, खाने-पीने और बातचीत में लगे हुए थे। इस कमरे में बैठे हुए हम तरह-तरह के तकल्लुफ-भरे खानों और विभिन्न प्रकार की पुरानी शराबों के स्वाद ले रहे थे। हमारी आत्माएं हमारे अनजानेपन में इस दुनिया से दूर एक और दुनिया में उड़ रही थीं। वह भविष्य के स्वप्न देख रही थीं और उसकी सभी भीषणताओं तथा भयों का सामना करने के लिए तय्यार थीं।

हम ऐसे तीन व्यक्ति थे, जिनकी कल्पनाएं जीवन में उद्देश्यों के कारण अलग-अलग और जिनके दिल मित्रता और प्रेम के कारण मिले हुए थे। हम ऐसे तीन कमज़ोर और निर्दोष प्राणी थे जिनके पास अनुभूति अधिक और बुद्धि कम थी। आह! यह वह नाटक है जो केवल आत्मा की रंगभूमि में खेला जा सकता है।

एक सज्जन और सम्मान-योग्य वृद्ध पुरुष है, जो अपनी बेटी से प्रेम करता है और उसको सुख देने के सिवा और कुछ नहीं सोचता।

एक बीस वर्ष की सुन्दर कुमारी है, जो भविष्य को कभी अपने समीप देखती है और कभी दूर। वह यह मालूम करने के लिए इसके बारे में सोचती है कि उसके भविष्य में उसके सौभाग्य और दुर्भाग्य की क्या-क्या सामग्री छिपी है।

और स्वप्नों और धड़कनों की दुनिया में बसने वाला नौजवान है, जिसने अभी तक जिन्दगी के प्याले में सुख-दुख की शराब नहीं पी, जो लज्जा और प्रेम की दुनिया में उड़ने के लिए अपने पर तोल रहा है, पर कमजोरी उसे उड़ने नहीं देती।

तीनों शहर से दूर एक ऐसे एकान्त मकान में खाने पर बैठे थे, जिस पर रात की खामोशी छाई हुई थी; और जिसे आकाश की आँखें ताक रही थीं।

तीनों खाने-पीने में लगे हुए थे और भाग्य ने उनकी तश्तरियों की गहराई में ज़हर छिपा रखी थी और गिलासों की तह में कांटे।

अभी खाना चल ही रहा था कि एक नौकरानी कमरे में दाखिल हुई और फारिस करामा को सम्बोधन करके कहने लगी, "दरवाजे पर एक आदमी आपसे मिलना चाहता है।"

फारिस करामा ने तुरन्त प्रश्न किया, "कौन है?"

नौकरानी ने उत्तर दिया, "मेरे विचार में तो पादरी साहब का नौकर है।"

फ़ारिस करामा एक मिनट के लिए चुप हो गया। फिर उसने अपनी लड़की पर इस तरह नज़रें गाड़कर देखा जैसे कोई पैगम्बर आकाश के रहस्यों को मालूम करने के लिए आकाश की तरफ देख रहा हो। फिर उसने नौकरानी की तरफ देखा और कहा, "उसे आने दो।"

नौकरानी वापस हो गई। उसके जाने के थोड़ी देर बाद एक आदमी कमरे में दाखिल हुआ। उसके वस्त्र सुनहरी काम के थे और मूंछें चढ़ी हुई थीं। उसने झुककर सलाम किया और फ़ारिस करामा से कहने लगा, "मुझे मेरे मालिक ने अपनी खास गाड़ी पर भेजा है कि मैं

आपको बुला लाऊँ। उन्हें आपसे कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।"

फ़ारिस करामा खड़ा हो गया। उसके चेहरे की आकृति बदल गई और चेहरे की प्रसन्नता चिन्ता के परदे में छिप गई। वह मेरे पास आया और प्रेमपूर्ण स्वर में कहने लगा, "मुझे उम्मीद है कि मेरी वापसी तक तुम यहीं ठहरोगे। सलमा तुम्हारे साथ होगी, जिसकी मीठी-मीठी बातें और आत्मा से निकले गीत तुम्हें रात की उकता देने वाली खामोशी और एकांत का अनुभव न होने देंगे।"

इसके बाद वह सलमा की तरफ मुड़ा और मुसकराहट के साथ अपनी बातचीत को जारी रखते हुए उसने कहा, "क्यों सलमा, क्या यह ग़लत है ?"

सलमा ने अपना सिर ऊपर को उठाया। उसके गाल कुछ-कुछ गुलाबी हो गए थे। अपनी नज़ाकत के कारण बांसुरी के संगीत से मिलती हुई आवाज में उसने उत्तर दिया, "अब्बाजान, मैं अपने अतिथि को खुश रखने का प्रयत्न करूँगी।"

फ़ारिस करामा पादरी के नौकर के साथ चला गया। सलमा खिड़की के पास जा खड़ी हुई और वहां से सड़क की तरफ देखने लगी जब तक कि गाड़ी अंधेरे के परदों में छिप गई, पहियों की गड़गड़ाहट फासले की दूरी के कारण बन्द हो गई और घोड़ों की टाप की आवाज खामोशी में मिल गई। अब सलमा खिड़की से हटकर एक सोफे पर बैठ गई, जिस पर रेशमी गिलाफ चढ़ा हुआ था। अपने अत्यन्त स्वच्छ और सफेद कपड़ों में इस हरे सोफे पर बैठी हुई वह ऐसी मालूम हो रही थी, जैसे हरी-भरी टहनी पर चमेली का फूल।

ईश्वर ने चाहा और मुझे वृक्षों से घिरे हुए एक एकांत मकान में सलमा से अकेले में बातचीत करने का मौका मिल गया। इस मकान पर खामोशी छाई हुई थी और इसके चारों तरफ प्रेम, पवित्रता और सौंदर्य की परछाइयां चल-फिर रही थीं।

हम दोनों बहुत देर तक इस प्रतीक्षा में खामोश, चकित और

चिन्तामग्न बैठे रहे कि बातचीत का प्रारम्भ दूसरे की तरफ से हो। लेकिन वह कौनसी बात है, जो दो प्रेमी आत्माओं के मेल को बयान कर सके? होंठ और ज़बान से निकली हुई वह कौनसी आवाज़ें और कौनसे शब्द हैं जो दिल और दिमाग़ को एक-दूसरे के समीप कर दें?

तो फिर ज़बान के द्वारा कहे जाने वाले इन शब्दों से ऊँची और कंठ से निकली हुई इन आवाज़ों से अधिक पवित्र और कौनसी वस्तु है? क्या यही खामोशी नहीं है, जो एक आत्मा के प्रकाश को दूसरी आत्मा तक पहुंचाती है और एक दिल का संदेशा दूसरे दिल तक? क्या यही खामोशी नहीं है जो हमें हमारे शरीर से अलग कर देती है और हम अनंत आध्यात्मिक लोक में देवताओं के झुंड के आस-पास यह जानते हुए उड़ने लगते हैं कि हमारे शरीर दुनिया की कैद और बंधन से आजाद नहीं हैं?

सलमा ने मुझे देखा। उसकी आंखें उसके अंतरंग की हालत को ज़ाहिर कर रही थीं। जादू-भरी आवाज़ में धीरे-धीरे उसने कहा, "आओ बाग़ में चलें और वृक्षों की छाया में बैठकर पहाड़ों के पीछे से चांद को निकलते देखें।"

आज्ञापालन के लिए मैं खड़ा तो हो गया, पर उसे उसके इरादे से रोकने का प्रयत्न करते हुए मैंने कहा, "सलमा, क्या यह ज्यादा अच्छा न होगा कि जब तक चांद निकलकर बाग़ को अपने प्रकाश से प्रकाशित न कर दे, हम यहीं बैठे रहें! इस वक्त तो अंधेरे ने वृक्षों और फूलों को छिपा रखा है। हम वहाँ जाकर देखेंगे क्या?"

उसने उत्तर दिया, "अंधेरा वृक्षों और फूलों को हमारी निगाहों से छिपा सकता है, लेकिन प्रेम को हमारी आत्मा से नहीं छिपा सकता।"

यह वाक्य उसने एक विचित्र स्वर में कहे और फिर अपनी निगाहें फेरकर खिड़की की तरफ देखने लगी। मैं खामोश बैठा हुआ उसके वाक्यों पर विचार कर रहा था। मैं उसकी ज़बान से निकले हुए प्रत्येक शब्द के अर्थ को समझने की कोशिश कर रहा था और उनके अर्थों को

हकीकत का रूप दे रहा था। सलमा ने दुबारा मेरी तरफ ध्यान दिया और अपनी निगाहें मेरे चेहरे पर इस तरह जमा दीं, मानों वह अपने कहे पर लज्जित है। उसने चाहा कि अपनी आंखों के जादू से काम लेकर अपने शब्द मेरे कानों से निकाल ले। लेकिन उसकी आंखों का जादू उन शब्दों को मेरे कानों से न निकाल सका, वरन् उसने तो उन शब्दों में ज्यादा प्रभाव और स्पष्टता पैदा करके उन्हें मेरे सीने की गहराइयों में पहुँचा दिया, जिससे वह ज़िन्दगी की आखिरी सांस तक मेरे दिल से चिपट रहें और मेरे भावों के साथ लहराते रहें।

दुनिया की हर एक बड़ी और सुन्दर वस्तु एकाग्र विचार से पैदा होती है या मन के भीतर से। जिस हरएक वस्तु को हम देखते हैं और जो काल के निरंतर चक्कर के फलस्वरूप हमें मिलती है, वह अपनी उत्पत्ति से पहले आदमी के मस्तक का गुप्त विचार होती है या स्त्री के सीने का कोमल भाव। जिन भयंकर लड़ाइयों में इंसानी खून नदी-नालों की तरह बहता है और स्वतंत्रता की पूजा देवी-देवताओं की तरह की जाती है, उनमें से प्रत्येक लड़ाई आरम्भ में एक धुंधली-सी कल्पना ही होती है। वह जनसाधारण के बीच में रहने वाले एक आदमी के दिमागी कोने में पैदा होती है। जिन दुखदायक लड़ाइयों में तख्त और ताज मिट्टी में मिल जाते हैं, और तख्त, ताज और घरों के मालिक बरबाद हो जाते हैं उनमें से प्रत्येक लड़ाई शुरू में एक विचारमात्र होती है, जो किसी एक आदमी के सिर में चक्कर लगाता है। जो उच्च शिक्षा इन्सानी ज़िन्दगी की धारा को बदल देती है, आरम्भ में केवल एक कवि का विचार होती है, जो किसी एक आदमीके विचारों के साथ मिलकर उसके द्वारा प्रकट किया जाता है। एक विचार मिस्र देशकी बड़ी-बड़ी इमारतों का निर्माण कराता है और दूसरा भाव इन इमारतों की बुनियादों को हिला डालता है। एक विचार इस्लाम जैसे धर्म को पैदा करता है और एक वाक्य सिकंदरिया नगर के पुस्तकालय को जलाकर राख कर देता है।

एक विचार तुम्हें रात की खामोशी के रास्ते पर डालकर बड़ाई और सम्मान के सुख स्थान में पहुंचा देता है या पागलपन के आश्चर्य-पूर्ण मार्ग पर। स्त्री का एक निगाह आदमी को दुनिया का सबसे ज्यादा सौभाग्यशाली आदमी बना देती है या सबसे ज्यादा दुर्भाग्यवान। किसी के होंठों से निकली हुई एक बात आदमी को गरीबी और परवशता के बाद धनी और बेफिक्री के दर्जे पर पहुंचा देती है या धनी और बेफिक्री के बाद गरीबी और परवशता के दरजे पर।

सलमा के होंठों से इस खामोश और जादू भरी रात को निकले हुए एक शब्द ने मुझे मेरे बीते हुए युग और भविष्य के बीच इस तरह खड़ा कर दिया,जैसे आकाश और समुद्रके भंवर के बीच डोलती हुई किश्ती। इस एक छोटे-से वाक्य ने मुझे जवानी और बेफिकरी की गहरी नींद से जगाकर एक ऐसे नये रास्ते पर ला डाला, जो प्रेम से उन पवित्र स्थानों की तरफ जाता था, जहाँ जिन्दगी और मौत में चोली-दामन का साथ था।

हम दोनों बाग में गये और दरख्तों के बीच टहलने लगे। ठंडी हवा की गुप्त अंगुलियां हमारे चेहरों को छूरही थीं। और फूलों से लदी हुई बेलें और नरम कोमल घास हमारे पावों में लहरा रही थीं। चमेली की बेलके पास पहुँचकर हम दोनों लकड़ी की उसी बैंच पर चुपचाप बैठ गए, जहाँ खाना खाने से पहले बैठे। हम प्रकृति को सांस लेते सुन रहे थे और अपने ठंडे सांसों की मिठास के द्वारा आकाश की उन आंखों के सामने अपने सीनों के ढके-छिपे रहस्यों को प्रकट कर रहे थे, जो हमें नीले बादलों के पीछे से ताक रहे थे।

चाँद पहाड़ी के पीछे से उदय हुआ। उसके प्रकाश से सारा लोक प्रकाशित हो गया। चांदनी में घाटियों के आस-पास की बस्तियां ऐसी मालूम होने लगीं, मानो वह किरनें हैं जो किसी कल्पित जगह से फूट-फूटकर निकल रही हैं। चांदनी की रूप-हरी किरनों में सारा लबनान ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे कोई नवयुवक एक बारीक परदा डाले

हाथ के सहारे बैठा हो, जिससे उसके अंग ढके भी हैं और नहीं भी।

लबनान पाश्चात्य कवियों के विचार में एक ख़्याली स्थान है जिसकी हक़ीक़त इस्लाम के कुछ पैगम्बरों के गुजर जाने से समाप्त हो गई, जिस तरह बहिश्त आदम हव्वा के निकाल दिये जाने से लुप्त हो गया है। सच बात यह है कि वह एक काव्य का शब्द है जिसकी हकीकत गुप्त है। यह ऐसा शब्द है जो आत्मिक भावनाओं की तरफ संकेत करता है और कल्पना में सनोवर और देवदार के उन हरे-भरे वृक्षों की तसवीरें पेश करता है, जहाँ से इत्र की महक आती है। यह शब्द पीतल और संगमरमर के उन बुर्जों की याद ताजा करता है, जो महानता और बड़ाई के साथ सिर ऊँचा उठाए हुए हैं। यह उन हिरनों की डारों का काल्पनिक चित्र पेश करता है, जो घाटियों और खंडहरों में चौकड़ियां भरते फिरते हैं। मैंने स्वयं उस रात को देखा कि लबनान प्रदेश कवि के सूक्ष्म विचार के समान मेरी निगाहों के सामने थ, जैसे दो जागरणों के बीच एक स्वप्न होता है।

हम भावों के अदल-बदल के साथ-साथ वातावरण को अपनी निगाहों के सामने अदलते-बदलते देख रहे थे। हम अनुभव कर रहे थे कि संसार जादू और सौंदर्य का परदा डाले हुए है, यद्यपि वह जादू और सौंदर्य हमारे से अलग कुछ न था।

सलमा ने मेरी तरफ ध्यान दिया। चांद की किरनें उसके चेहरे, गर्दन और कलाइयों पर इस तरह पड़ रही थीं कि वह हाथी-दांत की मूर्ति मालूम होती थी जिसे किसी ईश्वर-भक्त की अंगुलियों ने सौंदर्य और प्रेम की देवी के लिए तराशा है। वह कहने लगी, "तुम बात क्यों नहीं करते ? मुझे अपने गुज़रे हुए जमाने का हाल क्यों नहीं सुनाते ?"

मैंने उसकी चमकीली आखों की तरफ देखा, और जिस गूंगे को अभी बोलने की शक्ति प्राप्त हुई हो, उसकी तरह मैंने जवाब दिया, "क्या इस जगह आने के बाद जो बातचीत मैंने की है, तुमने नहीं सुनी ? क्या बाग़ में प्रवेश करने के बाद जो कुछ मैंने कहा, तुम्हारे कानों तक

नहीं पहुंचा ? सलमा, क्या फूलों की कानाफूसी और खामोशी के गीत सुनने वाली तुम्हारी आत्मा मेरी आत्मा की पुकार और मेरे दिल की फ़रयाद भी सुन सकती है ?"

उसने हाथों से अपना चेहरा छिपा लिया और रुक-रुककर कहने लगी, "मैंने सुन लिया। हाँ, मैंने सब कुछ सुन लिया। रात के गले से निकलती हुई पुकार भी सुन ली और दिल के सीने से उबलती हुई फ़रयाद भी।"

यह सुनकर मैं अपने अतीत को भूल गया, अपने आपको भूल गया, यहाँ तक कि हरएक चीज़ को भूल गया। अब मैं सलमा के सिवा किसीको न जानता था। इसके अस्तित्व के सिवा दूसरी वस्तु की अनुभूति मुझमें बाक़ी न रही थी। जल्दी से मैंने कहा, "सलमा! मैंने भी तुम्हारे दिल का हाल जान लिया। मैंने वह महान् गीत भी सुन लिया है, जो जीवन देने वाला भी है और जीवन-शत्रु भी, जिसके उतार-चढ़ाव से संसार गूंज रहा है और जिसके कांपने से धरती की बुनियादें हिल जाती हैं।"

सलमा ने अपनी आंखें बन्द करलीं और उसके लाल-लाल होंठों पर एक हल्की-सी चिंता-भरी मुसकराहट दिखाई दी। कानाफ़ूसी के स्वर में उसने कहा, "मुझे अब मालूम हुआ कि संसार में एक ऐसी वस्तु भी पाई जाती है जो आकाश से ज्यादा ऊंची, समुद्र से ज्यादा गहरी और ज़िन्दगी, मौत और ज़माने से ज्यादा बलवान है। आज मुझे वह बात मालूम हो गई, जो कल तक मैं न जानती थी, और जिसे मैंने कभी स्वप्न में भी न देखा था।"

उस क्षण से सलमा मुझे मित्र से भी ज्यादा प्रिय, बहन से भी ज्यादा समीप और प्रेमिका से भी ज्यादा प्यारी हो गई। वह मेरे लिए एक उच्च कल्पना हो गई, जिसका अनुसरण करने पर मेरी बुद्धि मजबूर थी। मेरे लिए वह एक कोमल अनुभूति बन गई, जिसने मेरे दिल को चारों तरफ से घेर लिया। अब वह मेरे लिए एक सुन्दर मीठा स्वप्न बन गई जिसने मेरी आत्मा को अपना छोटा-सा घर बना लिया।

कितने नादान हैं वह लोग, जो समझते हैं कि प्रेम मुद्दतों साथ रहने-सहने और लम्बी मित्रता के बाद पैदा होता है, क्योंकि सच्चा प्रेम तो दो आत्माओं के आपसी मेल-मिलाप का परिणाम होता है और अगर यह मेल-मिलाप एक क्षण में पूरा न हो तो फिर इसकी पूर्णता न एक वर्ष में हो सकती है न एक शताब्दी में।

सलमा ने अपना सिर ऊंचा किया और वह क्षितिज की तरफ देखने लगी, जहां आसमान का पल्ला जमीन के पल्ले से बंधा हुआ था। उसने कहा, "कल तक तुम मेरे भाई थे, जिसके पास मैं निश्चिंत होकर आती और अपने पिता की छाया में उसके पहलू में बैठ जाती, पर अब मैं एक ऐसी वस्तु का अस्तित्व अनुभव कर रही हूँ, जो भाई-बन्दी के नाते से कहीं ज्यादा दृढ़ और मधुर है। मैं एक ऐसा विचित्र भाव अनुभव कर रही हूँ जो हरएक सम्बन्ध से आज़ाद है। वह भाव मजबूत भी है और गहरा भी, डरावना भी है और मनोहर भी। वह भाव मेरे दिल को ग़म और खुशी पहुंचा रहा है।"

मैंने उत्तर दिया, "क्या जिस भाव से हम भयभीत होते हैं और जो हमारे सीने से गुज़रता है तो हम कांप उठते हैं, प्रकृति के नियमों का एक अंश नहीं है। यह उसी प्रकृति के अटल नियम का अंश है, जिसके आधीन चांद जमीन के गिर्द चक्कर लगाता है, जमीन सूरज के गिर्द घूमती है और सूरज दूसरे साथी नक्षत्रों के साथ परमात्मा की परिक्रमा करता है।"

उसने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा और अंगुलियां मेरे बालों में फेरने लगी। उसका चेहरा ग़म की तस्वीर था और उसकी पलकों पर आंसू इस तरह चमक रहे थे, जैसे नर्गिस की पत्तियों के किनारे पर ओस-कण। उसने कहा—

"जमीन पर रहने वालों में कौन ऐसा है जो हमारी कहानी का समर्थन कर सके? कौन है जो इस बात को सही मान सके कि सूर्यास्त और चन्द्रोदय के बीच के क्षण में सब सम्बन्धों से बेपरवाह होकर हमने

शंका और विश्वास के बीचके रास्ते तय कर लिये ? कौन है जो विश्वास कर सके कि अप्रैल के जिस महीने में हम दोनों पहली बार एक दूसरे से परिचित हुए, वह महीना था जिसने हमें जिन्दगी के पवित्रतम केन्द्र पर पहुंचा दिया ?"

उसका हाथ अब भी मेरे झुके हुए सिर पर था। इस वक्त भी जो नरम और कोमल हाथ मेरे बालों से खेल रहा था मुझे ताज से भी कहीं ज्यादा प्रिय था। मैने उत्तर दिया—

"लोग हमारी प्रेम-कहानी को सही नहीं समझ सकते, क्योंकि वह नहीं जानते कि केवल प्रेम ही वह फूल है जो अपनी उन्नति और वृद्धि के लिए किसी मौसम पर निर्भर नहीं। पर वह अप्रैल का महीना क्या, जिसमें हम दोनों पहली बार एक दूसरे से परिचित हुए और वह क्षण क्या जिसने हमें जिन्दगी के पवित्रतम केन्द्र तक पहुँचा दिया ? क्या इससे पहले जबकि हमारा अस्तित्व दिन-रात के चक्करों में घूमता था, प्रकृति के हाथों ने हमारी आत्माओं को एक केन्द्र पर खड़ा नहीं किया था ? सलमा ! इन्सान का जीवन माँ के पेट से आरम्भ नहीं होता और न वह कब्र में पहुँचकर समाप्त होता है। चाँद-तारों की किरनों से भरा हुआ लोक उन आत्माओं से खाली नहीं है जो प्रेम और मित्रता के सम्बन्ध से जुड़ा है।"

सलमा ने आहिस्ता से मेरे सिर से अपना हाथ उठाया, पर वह बालों की जड़ों में ऐसी ठंडी-सी लहर छोड़ गई जिससे रात की मंद-मंद वायु अटखेलियां करती और उसकी उन्नति और गति में तेजी कर देती। मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और बलिवेदी को नमस्कार करके उसका आशीर्वाद प्राप्त करने वाले पुजारी के समान मैंने अपने फड़कते हुए होंठों पर रखकर चुम्बन दिया। ऐसा चुम्बन अपनी गरमी से इन्सान की दिली अनुभूतियों को पिघला देता है और अपनी मिठास से प्रकृति की पवित्रता को बढ़ाता है।

एक घंटा गुजर गया। इसका हरएक क्षण चाव और प्रेम का एक

वर्ष-सा था। रात की खामोशी, चांद की किरनों और वृक्षों और फूलों की सुगंध से भरी हवा ने हमें उस स्थान पर पहुंचा दिया जहां इंसान प्रेम की हकीकत के सिवा सब कुछ भूल जाता है। अचानक हमने सुना कि घोड़े के टापों और गाड़ी के पहियों की आवाज तेजी के साथ हमारे समीप आ रही है। इस आवाज ने हमें अपने आपको भुला देने वाली आनंदपूर्ण हालत से चौंका दिया और जागरण ने हमें स्वप्नों के संसार से हैरत और दुर्भाग्य की हालत में फेंक दिया। अब हमें मालूम हुआ कि फारिस करामा पादरी के घर से लौटकर वापस आ रहा है। हम उठे और उसके आने के इन्तजार के लिए वृक्षों में से होते हुए द्वार पर जाकर खड़े हो गए।

गाड़ी बाग के द्वार के पास रुकी, फारिस करामा उतरा और सिर झुकाए धीरे-धीरे कदम उठाता हमारी तरफ आया। एक हारे-थके-से मजदूर की तरह वह सलमा की तरफ बढ़ा, मानो उसके सिर पर भारी बोझ हो। उसने अपने दोनों हाथ उसके कंधों पर रख दिये। वह देर तक उसके चेहरे को देखता रहा मानो वह इस बात से डर रहा है कि सलमा का चेहरा उसकी निगाहों से छिप जायगा। उसके झुर्रियां पडे हुए गालों पर टप-टप आंसू बहने लगे। उसके होंठ कांपने लगे और उदास मुसकराहट के साथ घुटी हुई आवाज के साथ उसने कहा "सलमा, वह समय समीप आ गया है जब तुम्हारा पिता तुम्हें अपनी गोद से निकालकर एक दूसरे पुरुष के पहलू मे बिठा देगा। हां, वह समय करीब आगया है जब परमात्मा का नियम तुम्हें इस चार-दीवारी से निकालकर दुनिया के विशाल मैदान में ले जायगा। उस समय यह बाग तुम्हारी पैरों की चाप को तरसेगा और तुम्हारा बाप तुमसे जुदा हो जायगा। सलमा, विधाता की लेखनी चल चुकी है। परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे और वह घड़ी तुम्हारे लिए शुभ हो।"

अपने बाप की बात सुनते ही सलमा का रंग फीका पड़ गया और आंखें जमी-की-जमी रह गईं, मानो यमराज उसके सामने खड़ा हो।

इसके बाद वह दर्द की अधिकता से तड़प उठी और हिचकियां लेकर इस तरह रोने लगी जैसे कोई पक्षी शिकारी के तीरसे जख्मी होकर तकलीफ़ और दर्द से कांपता हुआ भूमि पर आ पड़े। रुक-रुककर निकलने वाली आवाज़ में चिल्लाकर उसने कहा, "आप क्या कह रहे हैं ? आप का मतलब क्या है ? आप मुझे कहाँ भेजना चाहते हैं ?"

उसने अपने बाप को घूरकर देखा, मानो वह चाहती थी कि अपनी निगाहों से उस परदे को चीर-फाड़ दे जो उसके बाप के दिल पर पड़ा हुआ था। क़ब्रों की फरियाद से मिलती-जुलती खामोशी के प्रभाव से एक मिनट चुप रहकर उसने आह भरते हुए कहा, "अब मैं समझ गई, सब कुछ समझ गई। पादरी साहब ने आपके प्रेम-वृक्ष की तीलियों से इस पर—टूटी चिड़िया के लिए एक पिंजरा बनाया है। क्यों पिताजी, यही बात है न ?"

फारिस करामा ने गहरे और ठंडे सांस लेने के सिवा कोई उत्तर न दिया। वह उसे कोठी में ले गया। दया और प्रेम की किरनें उसके चेहरे से फूट रही थीं। मैं वृक्षों के बीच खड़ा था और हैरत मेरे मनोभावों के साथ इस तरह अठखेलियां कर रही थी, जैसे आंधी के झक्कड़ पतझड़ के पीले पत्तों के साथ अठखेलियां करते हैं। आखिर मैं भी उनके पीछे-पीछे कमरे की तरफ हो लिया। पर वहां पहुँचकर, इस विचार से कि कहीं बाप-बेटी में कोई खास और गुप्त बातचीत न होने वाली हो, मैंने फारिस करामा से विदाई का हाथ मिलाया। मैंने सलमा को इस तरह देखा जैसे कोई ज्योतिषी आकाश के चमकते हुए तारों को देखता है। मैं कमरे से इस तरह निकला कि इन दोनों को खबर तक न हुई। पर अभी मैं बाग़ में ही था कि फारिस करामा की आवाज मेरे कानों में आई। मैंने मुड़कर देखा तो इशारे से मुझे बुला रहा था। मैं वापस हुआ और जब उसके समीप पहुँचा तो उसने मेरा हाथ पकड़कर कांपती हुई आवाज में कहा—

"बेटा, मुझे क्षमा करना। मैंने तुम्हारी मुलाकात के अंतिम भाग

को आंसुओं से बदल दिया। पर तुम तो यहां सदा आते रहोगे। क्या जब यह घर एक दुखी वृद्ध के सिवा हर आनंद से खाली हो जायगा, तुम यहाँ नहीं आओगे ? बेशक नौजवानी मुरझाए हुए बुढ़ापे से कोई दिलचस्पी नहीं रखती, जिस तरह सुबह कभी शाम से नहीं मिलती; पर नहीं, तुम मेरे पास अवश्य आओगे और मुझे मेरी जवानी की कहानी याद दिलाओगे—उस जवानी की कहानी जो मैंने तुम्हारे पिता के साथ गुजारी है। मुझे विश्वास है कि तुम मेरे सामने जिन्दगी की कहानी को दुहराओगे—उस जिन्दगी की कहानी, जिसने कभी मुझे अपना नहीं समझा। क्यों, क्या यह गलत है ? क्या सलमा के जाने के बाद, जब मैं आबादी से दूर इस मकान में अकेला रह जाऊंगा, तुम मुझसे मिलने-जुलने नहीं आओगे ?"

फारिस करामा ने ये शब्द धंसी हुई आवाज में रुक-रुककर कहे और जब मैंने उसका हाथ पकड़कर बिना कुछ कहे हौसला दिया तो गरम-गरम आंसुओं की कुछ बूंदें उसकी पलकों से मेरे हाथ पर गिरीं। मेरी आत्मा कांप उठी, मैंने अनुभव किया कि एक दुखी और मीठा भाव मेरी ज़बान पर आने के लिए मेरे सीने में मचल रहा है। वह बार-बार उभरता है और बार-बार हृदय की गहराइयों में जा पड़ता है।

जब मैंने अपना सिर उठाया और फारिस करामा ने देखा कि मेरी आंखों से टप-टप आंसू जारी हैं, तो वह झुका। उसने अपने कांपते हुए होंठों से मेरे माथे को चूमा। अपना मुंह मकान के दरवाजे की तरफ फेरते हुए उसने मुझे नमस्कार किया।

बूढ़े आदमी के गालों पर चमकने वाला आंसू आत्मा के लिए नौजवानों के खून के आंसू से अधिक प्रभावक होता है।

जवानी के निराश्रित आंसू दर्द-भरे दिल से उमड़ते हैं पर बुढ़ापे के आंसू आखिरी उम्र की झड़ी हैं जो आंखों की पुतलियों से टपकते हैं। ये आंसू दुर्बल शरीरों की जिन्दगी की बची-खुची पूंजी होते हैं।

जवानी की पलकों के आंसू ऐसे हैं जैसे गुलाब की पत्तियों पर ओस-

कए, लेकिन बुढ़ापे के गालों के आंसू पतझड़ के उन पीले पत्तों के समान हैं जिन्हें हवा के झकड़ भी जिन्दगी की महावट के आने से कुछ पहले बिखेरकर उड़ा ले जाते हैं।

फ़ारिस करामा किवाड़ों की ओट में होगया और मैं वहां से निकल आया। सलमा की आवाज़ मेरे कानों में गूंज रही थी। उसका सौंदर्य मेरी आंखों के सामने छाया की तरह हिल-डुल रहा था और उसके पिता के जो आंसू मेरे हाथ पर गिरे थे धीरे-धीरे सूख रहे थे।

मैं उस कोठी से इस तरह निकला जिस तरह आदम स्वर्ग से निकला था, पर मेरे दिल की हव्वा मेरे पहलू में न थी,जो अपनी सुन्दरता और शृंगार से समस्त संसार को स्वर्ग बनाती।

मैं वहां से यह अनुभव करते हुए निकला कि यही रात जिसमें मेरा दूसरा जन्म हुआ है वह रात भी है, जिसमें पहली बार मौत का चेहरा चमका।

सूर्य की गरमी ही खेतों और बाग़ों को जीवन-दान करती है और सूर्य की गरमी ही उन्हें मौत की नींद सुला देती है।

: ७ :

अग्निकुंड

एक आदमी जो कुछ रात के अंधेरे में छिपकर करता है दूसरा आदमी उसे दिनके उजाले में खुल्लमखुला चिल्लाकर प्रकट कर देता है। जो बातचीत हम निस्तब्धता और ख़ामोशी की हालत में कानाफूसी के तौर पर करते हैं वही हमारे अनजानपन में आम बात हो जाती है। जो काम आज हम अपने घर की चारदीवारी में करते हैं और जिसे दुनिया की निगाहों से छिपाए रखने की पूरी-पूरी कोशिश करते हैं, वही कल मूर्तिमान होकर चौराहों में खड़ा होता है।

इसी तरह फ़ारिस करामा के साथ पादरी की मुलाकात के उद्देश्य काली परछाइयों ने प्रकट किये। उनकी बातचीत को बिखरे हुए अणुओं ने सारे शहर में प्रकट कर दिया, यहां तक कि उसे मैंने भी सुन लिया।

पादरी ने फ़ारिस करामा को इस चांदनी रात में इसलिए नहीं बुलाया था कि फ़कीरों और दरिद्रों की हालत पर बातचीत करे या अनाथों और विधवाओं की सहायता और देखभाल के लिए कोई रास्ता निकाले, बल्कि अपनी खास शानदार गाड़ी भेजकर इसलिए बुलाया था कि उसकी बेटी सलमा के लिए अपने भतीजे मंसूर की सगाई का सन्देश दे।

फ़ारिस करामा धनवान् था और सलमा के सिवा कोई उसकी धन-सम्पत्ति का वारिस न था। पादरी ने सलमा को उसके सौन्दर्य या सद्-गुणों के कारण अपनी भतीजबहु बनाना नहीं चाहा था, बल्कि इसलिए कि वह धनवान् है और उसकी असीम सम्पत्ति उसके भतीजेको शहर के प्रतिष्ठित और समर्थ आदमियों में एक ऊंचा दरजा दिलाने में सहा-यता देगी।

पूर्व के धर्मगुरु व्यक्तिगत बड़ाई और सरदारी पर ही नहीं रहते, बल्कि वह इस बात का पूरा-पूरा यत्न करते हैं कि अपने सगे-सम्बंधियों को जाति का उच्चतम व्यक्ति बना दें जिससे वे मनमाने तरीकों पर धन और शक्ति से खेलें।

धनवान् की इज्जत उसके मरने के बाद उसके बड़े बेटे को मिलती है लेकिन धर्मगुरु की बड़ाई उसके जीवनकाल में ही क्रमशः उसके भाई-भतीजों में बंट जाती है। ईसाइयों के पादरी, मुसलमानों के इमाम और हिन्दुओं के महंत, ये सब-के-सब पानी के सांप हैं जो अपने शिकार को भिन्न-भिन्न उपायों से दबोचते हैं और अनेक ढंगोंसे उनका खून चूसते हैं।

पादरी ने फ़ारिस करामा से जब उसकी बेटी सलमा को मांगा तो उसने गहरी खामोशी और गर्म आंसुओं के सिवा कोई उत्तर न दिया। कौनसा बाप है जिसे अपनी बेटी की जुदाई कठोर नहीं मालूम होती, चाहे वह पड़ोसी के घर ब्याही जा रही हो या राजा के महल में? कौन-सा मर्द है जिसका दिल दुख, दर्द और क्रोध से नहीं कांप जाता जब समाज के नियम उससे उसकी बेटी को जुदा कर दें। और फिर बेटी भी वह जिसे उसने बचपन में खिलाया हो, बड़े होने पर पढ़ाया-लिखाया हो, और जवानी में एक क्षण के लिए भी अपनी आंखों से दूर न होने दिया हो।

लड़के का विवाह मां-बापके लिए आनन्द का कारण होता है क्योंकि उनके घर में एक नया आदमी बढ़ता है। पर लड़की का विवाह गम का कारण है क्योंकि उनके घर का एक बड़ा और प्यारा आदमी कम हो जाता है।

यद्यपि फ़ारिस करामा का दिल उसे बराबर रोकता रहा पर उसने बेबसी के तौर पर पादरी से हां कर ली और आज्ञापालन और बेबसी के कारण उसकी इच्छा के सामने अपना सिर झुका दिया। केवल सुनी-सुनाई बातों पर नहीं, अपने अनुभव के आधार पर वह मंसूर को दुष्ट, लालची और अशिष्ट समझता था। पर शाम देश का वह कौनसा

ईसाई है जो पादरी का विरोध करे और फिर धर्म के मानने वालों में भी गिना जाय ? पूर्व का वह कौनसा मर्द है जो अपने धर्मगुरु के घेरे या मंडली से निकल जाय और फिर लोग उसे आदर के योग्य भी समझें? क्या यह सम्भव है कि आंखें तीर का मुकाबला करें और न फूटें? क्या यह सम्भव है कि हाथ तलवार का सामना करें और न कटें ?

अच्छा, मान लो कि फ़ारिस करामा पादरी का विरोध कर सकता था। यह भी उसके बस में था कि वह पादरी के लोभ-लालच का शिकार होने से बच जाय। लेकिन क्या उसके बाद उसकी बेटी की इज्जत-आबरू लोगों के अनुमानों और संदेशों से बची रह जाती ? और क्या उसका नाम होंठों और ज़बानों की गन्दगी के छींटों से बचा रह जाता ?

क्या अंगूर के तमाम ऊंचे गुच्छे लोमड़ियों के कानून में खट्टे नहीं हैं ?

इस तरह प्रकृति ने सलमा को पूर्व की कर्मफूटी और अभागी स्त्रियों के झुंड में धकेल दिया और इस तरह उसकी महान् आत्मा को जाल में फंसा दिया जबकि वह पहले-पहल प्रेम के सफेद परों पर चाँद की किरनों से प्रकाशमान और फूलों की सुगन्ध से सुगन्धित लोक में उड़ी थी।

बहुत देशों में बाप का धन सन्तान के दुर्भाग्य का कारण होता है। जिन बड़े-बड़े खजानों को बाप की लगन और मां का लालच इकट्ठा करता है वही सन्तान के लिए तंग और अंधेरा कैदखाना बन जाता है। जिस परमात्मा को इन्सान रुपये की शक्ल में पूजता है वह एक भयानक शैतान की सूरत बनाकर आत्माओं को संकट में फंसा देता है और दिलों को मौत के घाट उतार देता है।

सलमा भी अपनी तरह की उन बहुत-सी लड़कियों में से एक थी जो अपने बाप की दौलत और अपने पति की वासनापूर्ण इच्छाओं पर भेंट चढ़ती हैं। यह सच है कि यदि फ़ारिस करामा मालदार न होता तो सलमा आज आज़ादी से जीवन के सुख और आनंद से खेलती।

एक सप्ताह गुजर गया। सलमा का प्रेम शाम को मेरे पहलू में बैठकर मुझे सौभाग्य के गीत सुनाता और दिन निकलते जिन्दगी के रहस्य और उद्देश्य समझाने के लिए मुझे चौंका देता।

परम स्वतंत्र होने के कारण वह प्रेम कितना ऊंचा है जो ईर्ष्या का नाम तक नहीं जानता और जिसका सम्बन्ध सीधा आत्मा के साथ होने के कारण शरीर को किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचता।

वह मिलन कितना दृढ़ है जो आत्मा को संतोष से भर देता है।

वह भूख कितनी हलकी है जो आत्मा को संतोषी बना देती है।

वह भाव कितना मधुर है जो शौक तो पैदा कर देता है पर उसे भड़काता नहीं।

वह पागलपन कितना अनोखा है जो भूमि को दुर्लभ पदार्थों से भर देता है और जिन्दगी को एक मीठा स्वप्न बना देता है।

मैं सुबह-ही-सुबह खेतों में निकल जाता और प्रकृति के जागरण में नित्यता के बाकी रहने के इशारे देखता रहता। मैं दरिया के किनारे बैठ जाता और उसकी लहरों के अनंत गीत सुनता रहता। शहरों के बाज़ारों में चक्कर लगाता और आगे जाने वालों के चेहरों और व्यापारियों की चाल-ढाल में जीवन के गुण,सभ्यता और संस्कृति के आनन्दों को देखता।

वह दिन परछाइयों की तरह गुजर गए, बादलों की तरह तितर-बितर हो गए और मेरे लिए उनमें से दुःखपूर्ण याद के सिवा कुछ नहीं रहा। जो आँखें कभी बसन्त के सौन्दर्य और हरयावलों की ताजगी को देखती थीं, अब उनके लिए आँधियों की तेजी है और जाड़ों की कुमलाहट। जो कान कभी लहरों के गीत सुनते थे, अब उनके लिए कराहने की आवाज है और नर्क की चीख-पुकार। और जो आत्मा कभी इन्सानी सुखों और संस्कृति की बड़ाइयों के सामने प्रभावित हुई सहमी-सी खड़ी थी, अब उसके लिए भिखारियों का दुर्भाग्य है या गरीबों की बदनसीबी।

आह! किस कद्र मनोहर था प्रेम का जमाना, और किस कद्र मीठे

थे इसके स्वप्न !

और आह ! किस कद्र कड़वी हैं गम की रातें, और कितनी ज्यादा हैं इनकी भीषणताएँ !

हफ्ता गुजरने पर जबकि मेरा दिल मेरे मनोभावों की शराब से मस्त था, मैं सलमा के घर गया। यह घर एक ऐसा पूजास्थान था जिसका निर्माण सौन्दर्य ने किया और जिसे प्रेम ने पवित्र बनाया, जिससे आत्माएँ इसमें पूजाभाव से नमस्कार करें और दिल नम्रता और दीनता के साथ झुकें। जब मैं वहाँ पहुंचा और उस खामोश चारदीवारी में दाखिल हुआ तो मैंने वहाँ एक ऐसी शक्ति अनुभव की जो मुझे लुभाकर अपनी तरफ खींच रही थी, जो मुझे इस संसार से निकालकर धीरे-धीरे उस जादू-भरी दुनिया के समीप कर रही थी जो हो-हल्लों से खाली है।

जैसे रात में ईश्वर-भक्त आदमी को प्रकृति स्वप्न की पवित्र हालत में पहुंचा देती है, वैसे ही मैंने अपने आपको इन फलदार वृक्षों और खिले हुऐ फूलों के बीच चलते पाया। इसी हालत में मैं कोठी के दरवाजे तक पहुंच गया। मैंने घूमकर देखा सलमा चमेली की बेलों की छाया में उसी बैंच पर बैठी थी जहाँ एक हफ्ता पहले उस रात को हम दोनों बैठे थे जिसे प्रकृति ने हमारे लिए चुना था और जिसमें मेरे सौभाग्य और दुर्भाग्य की नींव रखी गई थी।

मैं चुपचाप उसके पास पहुँचा पर वह अपनी जगह से न हिली और न कोई बात मुँह से निकाली मानो मेरे आने से पहले ही उसे मेरे आने की खबर हो गई थी।

जब मैं उसके पास बैठा तो उसने एक मिनट तक मेरी आँखों में आँखें डालकर देखा और एक गहरा, लम्बा और ठंडा साँस लिया। इसके बाद वह घूमी और दूर क्षितिज को देखने लगी जहाँ रात का आरम्भिक भाग दिन के अन्तिम भाग से खेल रहा था।

कुछ क्षणों के बाद जो इस जादू-भरी खामोशी से भरे थे जिन्होंने

हमें अदृष्ट आत्माओं के उत्सव में पहुँचा दिया था, सलमा ने अपना मुंह मेरी तरफ किया और अपने काँपते हुए ठंडे हाथ से मेरा हाथ इस तरह पकड़ा जिस तरह कोई भूखा तकलीफ की ज्यादती से बात-चीत करने पर विवश हो। उसने कहा—

"मेरे चेहरे की तरफ देखो मेरे प्यारे ! मेरे चेहरे की तरफ देखो और अच्छी तरह गौर से देखो ! तुम जो कुछ बातचीत के द्वारा मुझ-से मालूम करना चाहते हो वह सब तुम्हें मालूम होजायगा। मेरे प्यारे, मेरे चेहरे की तरफ देखो, गौर से देखो।"

मैंने उसके चेहरे की तरफ दृष्टि डाली—एक गहरी और लम्बी दृष्टि। मैंने देखा कि जो आंखें कुछ दिन पहले होंठों की तरह खिली हुई थीं और कोयलके परों की तरह चंचल थीं,वह अब धंस गई हैं। उन में वह पहली-सी ज्योति बाकी नहीं है। चिन्ता और दुख की परछा-इयों ने उन्हें काला कर दिया है। मैंने देखा कि जो चेहरा कल तक सफ़ेद चमेली के उस फूल के समान था जिसे सूर्य के चुम्बनों ने खिला दिया हो, वह अब पीला पड़ गया है, मुरझा गया है और निराशा का परदा उस पर पड़ा है। मैंने देखा कि जो होंठ गुलाब की तरह लाल थे, जिनसे मिठास हर समय टपकती थी और जो खुलते वक्त ऐसे मालूम होते थे जैसे दो गुलाब के फूल हवा में झूम रहे हों, हेमन्त ने उन्हें एक सूखी हुई टहनी पर छोड़ दिया है। मैंने देखा कि जो गर्दन पहले हाथी-दांत के खम्भे की तरह सीधी थी अब आगे की तरफ झुक गई है, मानो उसमें अब इतनी शक्ति भी नहीं है कि मस्तक के कोनों में घूमने वाले विचारों का बोझ उठा सके।

सलमा की शक्ल में मैंने दर्दनाक क्रांति देखी। उसके सभी बौद्धिक और शारीरिक परिवर्तनों पर मैंने गौर किया लेकिन फिर भी मेरी दृष्टि में वह एक कोमल बादल के समान थी जो चन्द्रमा को छिपाकर उसके दृश्य में सौंदर्य और प्रकाश को बढ़ा देता है।

जो शक्ल अन्तरात्मा के रहस्यों को जाहिर करती है वह चेहरे में

सुन्दरता और सलोनापन पैदा करती है, फिर चाहे वह रहस्य दर्द पैदा करने वाले और शोकपूर्ण ही क्यों न हों।

लेकिन जो चेहरे अपनी खामोशी से आत्मा के रहस्यों का वर्णन नहीं करते सुन्दर नहीं कहे जा सकते, चाहे उनके नख-शिख कितने ही मनोहर क्यों न हों।

जो प्याले शराब के रंग से रंगीन न हों, हमारे होंठों को अपनी तरफ़ नहीं खींच सकते। सलमा उस दिन शाम को आसमानी शराब से भरे प्याले के समान थी जिसमें आत्मा की मिठास के साथ जीवन का कड़वापन भी शामिल था।

वह अपने अज्ञान में एक पूर्वी स्त्री की जीती-जागती तस्वीर थी जो अपने प्यारे पिता का घर उस वक्त तक नहीं छोड़ती जब तक किसी दुष्टस्वामी पति की अधीनता का जुआ अपनी गर्दन पर न रख ले, वह अपनी कृपालु मां की गोद से उस वक्त तक जुदा नहीं होती, जब तक कि निर्दयी सास की गुलामी में जीवन बसर न करे।

मैं सलमा के चेहरे को देख रहा था। मेरे कान उसके रुक-रुककर निकलते हुए सांसों में उसकी आत्मा की फरियाद सुन रहे थे और मेरा दिमाग़ उसीके सम्बन्ध में कुछ सोच रहा था। सब तरफ पूरी ख़ामोशी छाई हुई थी। यकायक मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि जमाना चलते-चलते रुक गया है और दुनिया नष्ट होकर लोप हो गई है। उसकी उन बड़ी-बड़ी आंखों के सिवा मुझे कुछ नज़र न आता था जो मेरी आत्मा की गहराइयों को देख रही थीं; और उसके उस कांपते हुए ठंडे हाथ के सिवा मुझे कुछ अनुभव न होता था जो मेरे हाथ में था। मैं इसी आत्म-विस्मृति की हालत में था कि मैंने सलमा को आहिस्ता-आहिस्त यह कहते हुए सुना—

"आओ, अब बात करें। आओ, इससे पहले कि भविष्य अपनी भषिणताओं और डरों के साथ हम पर हमला करे, हम उसका नक़शा खींचने का प्रयत्न करें। इस वक्त पिताजी तो उस आदमी के घर गये

हैं, जो जिन्दगी-भर मेरा साथी रहेगा। मेरे जीवन को जन्म देने वाला आदमी इस आदमी से मिलने गया है जिसे संसारी कानून मेरे भविष्य का स्वामी कहेगा। इस शहर के बीच में इस समय पक्की उम्र का एक आदमी जिसने मुझे पाला-पोसा है, उस नौजवान से बातें कर रहा है जो मेरी अगली जिन्दगी में मेरे साथ रहेगा। आज रात को मेरे पिता और मेरा मंगेतर मेरे विवाह की तारीख ठहरायेंगे, जो एक-न-एक दिन आकर रहेगी, चाहे वह समय कितना ही लम्बा क्यों न हो। आह! कितनी अनोखी है यह घड़ी और किस कद्र तेज है इसका प्रभाव। पिछले सप्ताह की आज ही जैसी रात को इसी चमेली की बेल की छाया में प्रेम पहली बार मेरे से गले मिला। उस समय मौत का हाथ पादरी के घर में मेरे भविष्य की तस्वीर का आरम्भिक खाका बना रहा था और इस वक्त जबकि पिताजी और मेरा भावीपति मेरे सिर पर ब्याह का मुकुट रखने की योजनाएं बना रहे हैं, मैं तुम्हें अपने पास बैठा देख रही हूँ। मैं अनुभव कर रही हूँ कि तुम्हारी आत्मा बेचैनी के साथ मेरे गिर्द इस तरह चक्कर लगा रही है जिस तरह प्यासा पक्षी पानी के उस सरोवर के ऊपर मंडराता है जिसे चारों तरफ से डरावने और भूखे हिंसक पशुओं ने घेर रखा हो। आह! किस कद्र शानदार है यह रात और कितने गहरे हैं इसके रहस्य!"

मुझे ऐसा मालूम हुआ कि निराशा ने अंधेरी डरावनी छाया की शक्ल धारण कर ली है जो हमारे प्रेम का गला घोट रही है, जिससे आरम्भ में ही उसका काम तमाम कर दे। मैंने जवाब दिया, "यह पक्षी सरोवर पर यूंही मंडराता रहेगा, यहां तक कि प्यास चाहे उसे घुला-घुलाकर मार डाले या डरावने हिंस्र पशु उसे दबोच लें और टुकड़े-टुकड़े करके निगल जायं।"

चांदी के तारों के तरह कांपती हुई आवाज़ में उसने कहा, "नहीं, नहीं, मेरे मित्र! इस पक्षी को ज़िन्दा रहना चाहिए। इस बुलबुल को चहचहाते रहना चाहिए, यहां तक कि सुबह हो जाय,

बसंत बीत जाय । संसार समाप्त हो जाय और जमाना मिट जाय । तुम उसे खामोश न करो क्योंकि उसकी आवाज़ मुझे जीवन प्रदान करती है । तुम उसके पर न बांधो क्योंकि उसकी फड़फड़ाहट मेरे दिल से ग़म के कुहर को दूर करती है ।"

मैंने ठंडी सांस लेते हुए धीरे से कहा, "सलमा ! प्यास उसका काम तमाम कर देगी और भय उसे मार डालेगा ।"

वह उत्तर देने लगी और इस तरह के शब्द उसके कांपते हुए होंठों से जल्दी-जल्दी निकल पड़े—

"आत्मा की प्यास पानी द्वारा तृप्ति से ज्यादा मीठी और आत्मा का भय शारीरिक संतोष से ज्यादा प्रिय होता है । लेकिन मेरे प्यारे, सुनो, गौर से सुनो । इस वक्त मैं एक नई ज़िन्दगी के दरवाजे पर खड़ी हूं, जिसके बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं है । मैं उस अंधी स्त्री की तरह हूँ जो ठोकर खाने के भय से दीवार को पकड़-पकड़कर चले । मैं एक दासी हूं, जिसके बाप के धन ने उसे गुलाम बेचने वालों के बाजार में पहुंचा दिया है और वह एक मर्द के हाथ बेच दी गई है । मैं उस मर्द से प्रेम नहीं करती क्योंकि मैं उसे नहीं जानती । और यह तो तुम्हें मालूम ही है कि प्रेम और अज्ञान का एक जगह इकट्ठा होना असम्भव है । पर मैं उससे प्रेम करना सीखूंगी । मैं उसकी आज्ञा-पालन और सेवा करके उसे भाग्यवान बनाऊंगी । मैं उसे वह सब कुछ दूंगी जो एक अबला स्त्री एक बलवान पुरुषको दे सकती है। पर तुम ? तुम हमेशा बसंत ऋतु के समान रहोगे जिसकी गोद में फूलों के मोती होंगे । जिन्दगी तुम्हारे सामने एक खुला रास्ता है, जिस पर तरह-तरह के फूल पड़े हैं । तुम अपने दिल का दीपक लेकर संसार के मैदान में निकलोगे । तुम आज़ादी से सोचोगे, आज़ादी से बातचीत करोगे और अपनी प्रत्येक इच्छा को आजादी से पूरा करोगे । तुम जिन्दगी के चेहरे पर अपना नाम लिखोगे, क्योंकि तुम मर्द हो । तुम सरदारों का-सा जीवन व्यतीत करोगे क्योंकि तुम्हारे पिता की निर्धनता ने तुम्हें किसी

का गुलाम नहीं बनाया; और उनके धन-दौलत ने तुम्हें गुलाम बाज़ार में नहीं पहुँचाया जहां लड़कियों का क्रय-विक्रय होता है। तुम उस लड़की की सामीप्यता प्राप्त करोगे जिसे तुम्हारा दिल पसन्द करेगा। तुम उसे अपने घर की रानी बनाने से पहले अपने हृदय की रानी बनाओगे और उसे अपने दिन रात में सांझी करने से पहले अपने विचारों में साथी बनाओगे।"

वह सांस लेने के लिए कुछ देर बैठ गई। फिर ऐसे स्वर में जिसमें उसके दिल की कुढ़न शामिल थी, उसने कहा—

"लेकिन क्या जिन्दगी के रास्ते अब हमें एक दूसरे से अलग करके तुम्हें मर्दों की बड़ाइयों की तरफ ले जायंगे और मुझे स्त्री के कर्त्तव्यों की तरफ़? क्या यह सुन्दर स्वप्न जागरण से पलट जायगा और यह मीठी हकीकत कहानी बन जायगी? क्या हो-हल्लड़ इस तरह बुलबुल के गीतों को अपने में खपा लेगा? हवा इस तरह गुलाब की पत्तियों को बिखेर देगी और कदम इस तरह शराब के प्याले को रौंद डालेंगे? क्या इस तरह रात ने यूंही हमें चंद्रमा के सामने खड़ा किया था, और योंही हमारी आत्माओं को इस चमेली की छाया में मिलाया था? क्या इस रात ने तेज़ी के साथ हमें तारों-भरे लोक में इसलिए पहुंचाया था कि हमारी भुजाएं थक जायें और हम नरक के सबसे आखिरी भाग में जा पड़ें? क्या हमने शोक के महल में उस समय प्रवेश किया था जब प्रेम सो रहा था जो अब क्रोध की हालत में जागकर हमें सजा देना चाहता है? क्या हमारे सांसों ने रात की हवा की मन्द-मन्द तरंगों में इसलिए तेजी पैदा की थी कि वह आंधी के झक्कड़ बनकर हमें धूल-मिट्टी की तरह तलहटियों की गहराइयों में फेंक दे? हमने तो किसी आज्ञा का उल्लंघन भी नहीं किया है, वर्जित पौधों[1] को हाथ भी नहीं लगाया, फिर हमें स्वर्ग से क्यों निकाला जा रहा है? हमने तो कोई

---

१ यहां आदम-हव्वा की कहानी और उस गेहूं के पौधे की तरफ़ संकेत है जिसके दाने खाना उनके लिए वर्जित था।

षड्यंत्र भी नहीं किया, बगावत के समीप तक नहीं फटके, फिर हमें नरक में क्यों झोंका जा रहा है ? नहीं, नहीं ! कभी नहीं ! जिन क्षणों में हम एक दूसरे से परिचित हुए, वह शताब्दियों से ज्यादा शानदार हैं और जिन किरनों ने हमारी आत्माओं को जोश प्रदान किया, अन्धकार से ज्यादा शक्तिशाली हैं, क्योंकि अगर तूफान ने हमें भयानक समुद्र के तल पर एक दूसरे से अलग भी कर दिया तो लहरें हमें शांत समुद्र-तट पर एक जगह इकट्ठी कर देंगी। अगर जिन्दगी ने हमें मार भी दिया तो मौत हमें जीवित कर देगी।

"औरत का दिल न जमाने के साथ बदलता है न ऋतुओं के साथ। वह मुद्दत तक युद्ध करता रहता है, पर मरता नहीं। वह उस जंगल के समान है जिसे आदमी अपनी रंगभूमि चुनकर उसके वृक्षों को काट डालता है और उसकी झाड़ियोंको जला देता है। वह उसकी चट्टानों को खून से रंगीन कर देता है और उसकी जमीन को हड्डियों और मुर्दा खोपड़ियों से भर देता है, पर वह जंगल फिर भी संतोष और खामोशी के साथ बाकी रहता है और अनन्त काल तक उसमें बसंत बसंत रहती है और हेमन्त हेमन्त। लेकिन अब जबकि विधाता की लेखनी चल चुकी है, हम क्या करें ? मुझे बताओ हम क्या करें ? किस तरह एक दूसरे से अलग हों और फिर कब मिलें ? क्या हम प्रेम को परदेशी मुसाफिर समझलें जो शाम होते आता है और प्रातः होते चला जाता है? क्या हम उस स्वाभाविक जोश को स्वप्न समझें जो नींद में दिखाई देता है और जागरण में छिप जाता है ? क्या हम इस सप्ताह को नशे की घड़ी समझें जो होश और जागृति के आते ही खत्म हो जाती है ? मेरे प्यारे ! अपना सिर ऊंचा करो जिससे मैं तुम्हारी आवाज सुनूं। बोलो, बात करो। मुझे बताओ कि जब तूफान हमारे इस मनोहर अभ्युदाय काल की किश्ती को डुबो देगा, क्या तुम मुझे याद करोगे? क्या तुम रात की खामोशी में मेरी भुजाओं की उड़ान की आवाज सुनोगे ? क्या

तुम मेरे सांसों को अपने चेहरे और गर्दन पर लहरें मारते अनुभव करोगे ? क्या तुम मेरे दर्द से ऊंचे और कुढ़न से नीचे होते हुए ठंडे साँसों को सुनोगे ? और क्या तुम मेरी उस छाया को प्रातःकाल के बादलों के साथ इधर-उधर बिखरते हुए देखोगे जो रात के अंधकार के साथ-साथ चलेगा ? मेरे प्रिय, मुझे बताओ कि मेरी आंखों की ज्योति, मेरे कानों के गीत और मेरी आत्मा के परों के उड़ने के बाद तुम क्या करोगे ? तुम्हारा क्या बनेगा ?"

मेरे दिल के टुकड़े खून होकर मेरी आंखों में आ रहे थे। मैंने उत्तर दिया "सलमा ! मैं वही रहूँगा जो तुम मेरे लिए चाहोगी।"

उसने कहा, "मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे चाहो। मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे अनन्त काल तक चाहो। मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे इस तरह चाहो जिस तरह कवि अपने दुःख-भरे विचारों को चाहता है। मैं चाहती हूं कि तुम मुझे इस तरह याद करो जैसे मुसाफिर ठहरे हुए पानी के उस कुंड को याद करता है जिसमें पानी पीने से पहले वह अपने चेहरे की परछाईं देखता है। मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे इस तरह याद करो जिस तरह मां अपने उस अजन्मे बच्चे को याद करती है जो दुनिया का प्रकाश देखने से पहले ही उसके पेट में मर गया हो। मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे इस तरह याद रखो जिस तरह एक दयालु बादशाह उस कैदी को याद रखता है जो उसकी क्षमा से पहले ही कैदखाने में मर जाय। मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे लिए एक भाई, एक मित्र और एक साथी रहो। मैं चाहती हूं कि तुम पिताजी के एकान्त काल में उनके पास आते रहो और उनका दिल बहलाते रहो, क्योंकि मैं बहुत जल्द उनसे जुदा होने वाली हूं।"

मैंने उत्तर दिया, "सलमा ! मैं यह सब करूंगा। मैं अपनी आत्मा को तुम्हारी आत्मा का गिलाफ, अपने दिल को तुम्हारे सौन्दर्य का घर और अपने सीने को तुम्हारे गमों की कब्र बनाऊंगा। सलमा ! मैं तुमसे इस तरह प्रेम करूंगा जिस तरह खेत बसंत से प्यार करते हैं। और

मैं तुम्हारे कारण जिन्दा रहूँगा जिस तरह फूल सूर्य की गरमी से जिन्दा रहते हैं। मैं तुम्हारे नाम के गीत गाऊंगा जिस तरह बस्ती के मन्दिरों के घंटों की गूंज से तलहटी संगीतपूर्ण हो जाती है। मैं तुम्हारी आत्मा की बातें इस तरह सुनूंगा जिस तरह समुद्र-तट लहरों की कहानी सुनता है। सलमा, मैं तुम्हें याद करूंगा जिस तरह घबराया हुआ परदेशी अपने प्यारे देश को याद करता है, जिस तरह भूखा फकीर स्वादिष्ट खानों से भरे हुए थाल को याद करता है, जिस तरह पदच्युत बादशाह अपनी बड़ाई और वैभव के दिनों को याद करता है और जिस तरह चिंताग्रस्त कैदी अपनी आजादी और शांति की घड़ियों को याद करता है। मैं तुम्हें वैसे ही याद रखूंगा जैसे किसान अनाज के ढेरों और उनकी आमदनी को और एक सहृदय ग्वाला हरे-भरे मैदानों और मीठे सरोवरों को याद रखता है।"

मैं बात कर रहा था और सलमा रात की गहराइयों पर दृष्टि जमाए घड़ी-घड़ी ठंडे सांस ले रही थी। उसके दिल की गति कभी तेज हो जाती थी और कभी मन्दी, मानो वह समुद्र की भौंहें हैं जो कभी चढ़ती हैं और कभी उतरती हैं। उसने कहा, "कल हकीकत एक कहानी हो जायगी और स्वप्न जागरण। तो क्या प्रेमी के लिए यह काफी है कि छाया से गले मिल ले और क्या प्यासे आदमी के लिए सम्भव है कि स्वप्न के सरोवरों से तृप्त हो जाय ?"

मैंने जवाब दिया, "भाग्य तुम्हें उस घर ले जायगा, जो सुख शांति का निवासस्थान है और मुझे दुनिया के मैदान में जो परिश्रम और संघर्ष की रंगभूमि। भाग्य तुम्हें उस मर्द के घर ले जायगा जो तुम्हारे सौन्दर्य से भलाई और तुम्हारी आत्मा से पवित्रता प्राप्त करेगा और मुझे जमाने के उस कसाईघर में जो अपनी चिंताओं से मुझे कष्ट पहुंचायगा और अपनी डरावनी तस्वीरों से मुझे भयभीत करेगा। भाग्य तुम्हें जीवन की तरफ ले जायगा और मुझे संघर्ष की तरफ। वह तुम्हें प्रेम की तरफ ले जायगा और मुझे डर और एकांत की तरफ। लेकिन मैं मौत की

छाया की तलहटी में प्रेम की एक मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करूंगा। मैं उसे अपनी रात्रि-सखी बनाऊंगा और उसे अपने गीत सुनाऊंगा। मैं उसे शराब पिलाऊंगा और उसे अपने वस्त्र पहनाऊंगा। प्रातः होते ही प्रेममूर्ति मुझे नींद से चौंका देगी और दूर किसी जंगल में ले जायगी। जब दोपहर होगी तो वह मुझे वृक्षों की छाया में बिठायगी और मैं सूर्य की गरमी से सुरक्षित पक्षियों के साथ वहां आराम करूंगा। शाम को वह मुझे पश्चिम की तरफ मुंह करके खड़ा करेगी और प्रकृति का वह अंतिम गीत सुनायगी जो दिन की समाप्ति पर गाया जाता है। वह मुझे लोक में तैरती हुई खामोशी की परछाइयां दिखायगी। रात को मैं प्रेम-मूर्ति के गले में हाथ डालकर सो जाऊंगा। स्वप्न में मुझे वह उच्च और पवित्र लोक नज़र आयंगे जहां प्रेमियों और कवियों की आत्माएं रहती हैं। बसंत ऋतु में मैं और प्रेम-मूर्ति साथ-साथ सैर करेंगे। हम दोनों टीलों और घाटियों के बीच गीत गायंगे। बनफ़शे फूलों से पूर्ण जीवन की बसंत के चरण-चिन्हों पर चलेंगे और ओस की बची-खुची शराब नर्गिस और चमेली के प्यालों में पियेंगे। गरमियों की ऋतु में मैं और प्रेम मूर्ति थककर सो जायंगे। हमारा तकिया कूड़े-करकट का ढेर, हमारा बिस्तर घास-फूस और हमारा लिहाफ आकाश होगा। हम चाँद-तारे के साथ जागेंगे। हेमंत ऋतु में मैं और वह अँगूरों के तख्तों में जायंगे और जिन स्थानों के करीब शराब खींची जाती है उनके समीप बैठकर उन वृक्षों को देखेंगे जिन्होंने अपने पीले वस्त्र उतार दिये हैं। हम समुद्र की तरफ जाते पक्षियों की डारों को देखेंगे। शीत ऋतु में मैं और वह अंगीठियों के पास बैठकर अतीत की कहानियां सुनायंगे। हम पूर्वीकालीन जातियों और कबीलों यानी वंशसमूहों की कथाएं दुहरायंगे। जवानी में प्रेम मेरे लिए एक सभ्यता-शिक्षक, अधेड़ उम्र में मेरी भुजा और बुढ़ापे में मेरा सहारा होगा।

"सलमा, प्रेम तमाम उम्र मेरे साथ रहेगा जब तक कि मुझे मौत आ जाय या ईश्वर-शक्ति मुझे और तुम्हें एक जगह इकट्ठा कर दे।"

No..............

शब्द मेरी आत्मा की गहराईयों से इतनी तेजी के साथ निकल रहे थे मानो वह आग की लपटें हैं जो भड़ककर हवा में लहराती हैं और फिर बुझकर हकीकत में लीन हो जाती हैं। सलमा मेरी बातचीत सुन रही थी। आँसू उसकी आँखों से बह रहे थे, मानो उसकी आँखें होंठ हैं जो मेरी बातों का उत्तर आँसुओं से दे रहे हैं। जिन लोगों को प्रेम ने पंख प्रदान नहीं किये, वह बादलों की दुनिया में नहीं उड़ सकते, जहाँ से वह उस जादू-भरे लोक को देख सकें जिसमें मेरी और सलमा की आत्माएं इस अनोखे मुहूर्त में मंडरा रही थी, जिसके आनंद दुखजनक थे और जिसके दुख-दर्द आनंददायक। जिन लोगों को प्रेम ने अपना अनुयायी नहीं बनाया और जिन्होंने प्रेम को बातचीत करते नहीं सुना यह कहानी उनके लिए नहीं है। वे लोग अगर इन पृष्ठों के अर्थ भी समझ लें तो भी उनके लिए असम्भव है कि इन पंक्तियों में इन विचारों और कल्पनाओं की परछाई देख सकें जिन्हें न स्याही वस्त्र पहना सकती है और न कागज उनके लिए गोद बन सकता है। पर वह कौनसा इंसान है जिसने प्रेम की शराब उसके किसी प्याले में न पी हो? वह कौनसी आत्मा है जो इस प्रकाशमान मन्दिर में भयभीत न खड़ी हुई हो, जिसकी भूमि दिल के टुकड़ों से बनी है, और छत रहस्यों, स्वप्नों और भावुकताओं से? वह कौनसा फूल है जिसकी पत्तियों पर सुबह ने ओसकण न टपकाए हों? वह कौनसी नदी है जो अपना रास्ता छोड़कर भी समुद्र से न मिल गई हो?

सलमा ने अपना सिर तारों से सजे हुए आकाश की ओर उठाया और अपने हाथ आगे की ओर बढ़ाए। उसकी आंखें बाहर निकल आईं, उसके होंठों को हरकत हुई और पीले चेहरे पर निराशा, दुख, उलाहने और शिकायत की वह सब हालतें प्रकट हो गईं जो एक अत्याचार पीड़ित औरत के दिल में होती हैं। उसने ऊँचे स्वर में कहा—

"परमात्मा! औरत ने आखिर क्या किया है जिससे वह तेरे क्रोध की पात्र हो गई? इससे ऐसा कौनसा पाप हुआ है जिससे वह सदा-

सदा के लिए तेरी नाराज़गी का शिकार होगई? उसने ऐसा कौनसा अप-राध किया है जिसका प्रायश्चित्त नहीं हो सकता और जिसकी वजह से वह अज्ञात समय के लिए विपत्ति में फंसा दी गई है ?"

"हे परमात्मा ! तू शक्तिशाली है और वह अबला। फिर तू क्यों उसे दुख-दर्द से मारता है ? तू महान् है और वह तेरे तख्त के इर्द-गिर्द रींग रही है, फिर तू उससे क्यों लड़ता है ? तू द्रष्टा और ज्ञाता है और वह अंधी और भूली-भटकी । फिर तू क्यों उसे प्रेम से मारता है ? तू उसे अपने दाईं तरफ से सहारा देता है और बाईं तरफ़ से नरकमें फेंक देता है ? वह मूर्ख नहीं जानती कि तू उसे किस तरह उठाता है और किस तरह गिरा देता है। तू उसके सीने में जीवन के हलके-हलके झोंके पहुंचाता है और उसके दिल में मौत के बीज बोता है । तू उसे सौभाग्य के रास्ते पर पैदल ले जाता है और इसके बाद दुर्भाग्य को घोड़े पर सवार करके उसके शिकार के लिए भेज देता है । तू उसके कंठों में आनंद-प्रसन्नता के गीत भरता है और उसके होंठों पर शोक और चिंता का ताला लगाकर उसकी ज़बान को दुख-दर्द से जकड़ देता है । तू अपनी गुप्त अंगुलियों से उसके सुखों के इर्द-गिर्द दर्द का घेरा डाल देता है,उसकी सेज में सुख और सलामती को छिपा देता है और इस सेज के एक तरफ भय और विवशता को बिठा देता है । तू अपने इरादे से उसकी मनोवृत्तियों को जगाता है और उन मनोवृत्तियों से उस-के दोषों और अपमानों को पैदा करता है । तू अपनी मरज़ी से स्त्री को सृष्टि के गुणों को दिखाता है और अपनी मरजी से उसके प्रेम को सौंदर्य को मार देने वाली भूख में पलट देता है । तू अपने नियम के अनुसार उसकी आत्मा को एक रूपवान् शरीर के साथ ब्याह देता है और अपनी आज्ञा से एक दूसरे दुर्बल और तुच्छ शरीर को इसका पति बना देता है । तू उसे मौत के प्याले में जिन्दगी पिलाता है और जिन्दगी के प्यालेमें मौत । तू उसे उसके आंसुओंसे पवित्र करता है और फिर उसके आंसुओं से उसे घुला-घुलाकर मार डालता है । तू जिस मर्द

की रोटी से उसका पेट भरता है, उसी मर्द की गोद उसके दिल के टुकड़ों से भर देता है। हे परमात्मा! तू ही है जिसने प्रेम के प्रकाश से मेरी आंखें खोली हैं और प्रेम के प्रकाश से मुझे अंधा कर दिया है। तूने अपने होंठों से मुझे चुम्बन दिया और बलवान् हाथों से मेरे मुंह पर थप्पड़ मार दिया। तूने मेरे दिल में सफेद गुलाब बोया और उसके इर्द-गिर्द कांटे और झाड़ पैदा कर दिये। तूने मेरे वर्तमान को एक ऐसे नौजवान से बाँध दिया जिसे मैं चाहती हूं और मेरे भविष्य को एक ऐसे मर्द के शरीर के साथ जकड़ दिया है जिसे मैं नहीं चाहती।

"हे परमात्मा! इस मौत लाने वाले मुकाबले के लिए मुझे धैर्य प्रदान कर और जिन्दगी के आखिरी सांस तक पवित्र बने रहने में मेरी सहायता कर। हे परमात्मा! अपनी इच्छा को मेरे निवेदन के समान बना। अपने नाम को अनन्त काल तक शुभ रख।"

यह कहकर सलमा खमोश हो गई। पर उसके अंग-उपांग बराबर बात करते रहे। अन्त में उसका सिर झुक गया, हाथ-पांव ढीले पड़ गए और शरीर सिमट गया, मानो उसके जीवन की शक्तियों ने जवाब दे दिया है। देखने वाले को वह ऐसी टहनी मालूम होनी लगी जिसे आंधी ने वृक्ष से अलग करके किसी गढ़े में सूखने और जमाने के कदमों के नीचे रौंदे जाने के लिए फेंक दिया हो।

उसने अपना बर्फ जैसा ठंडा हाथ मेरे कांपते हुए हाथ पर रख दिया और मैंने उसकी अंगुलियों को अपने होंठों और पलकों से चूमा। पर जब मैंने जबानी तौर पर उसे तसल्ली देनी चाही, तो अपने आपको उससे ज्यादा कृपा और तसल्ली का सज़ावार पाया। मैं खामोश और हैरान बैठा सोचता रहा। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि जमाना मेरा मजाक उड़ा रहा है। मेरे कानों में मेरे दिल की फरियाद गूंज रही थी, और मैं डर रहा था कि कहीं मेरा अन्तरंग ही अपनी तबाही का कारण न हो।

हम दोनों में से किसी ने बात न की क्योंकि जब मानसिक कष्ट बढ़

जाता है तो आदमी गूंगा बन जाता है। हम बिलकुल खामोश निश्चल, और जड़वत् बन गए थे, मानो संगमरमर के दो खम्भे हैं जिन्हें भूकम्पों ने जमीन में गाड़ दिया है। हममें से किसीकी भी यह हिम्मत न हुई कि दूसरे की बात सुनने की इच्छा करे क्योंकि हमारे दिल की रगें इस कदर कमजोर हो गई थीं कि बातचीत का तो क्या जिक्र, ठंडा सांस भी उन्हें काट देने के लिए काफी था।

रात आधी हो गई और खामोशी की भीषणताएं बढ़ गईं। चांद पहाड़ के पीछे से अधूरा उदय हुआ। वह तारों के बीच में ऐसा मालूम हो रहा था जैसे टिमटिमाते हुए दीपकों के बीच बेजान मुरदे का चेहरा जो अरथी की स्याही में मग्न हो। और लबनान उस बूढ़े की तरह नजर आ रहा था जिसकी कमर जमाने ने झुका दी हो, जिसके तन को चिन्ताओं ने खा लिया हो, जिसकी आंखों से नींद उचाट हो गई हो और वह जागरण और अन्धकार से उकताकर बेचैनी के साथ सुबह का इन्तजार कर रहा हो। लबनान उस पदच्युत बादशाह के समान था जो अपने महल के उजाड़ों में अपने तख्त की राख पर बैठा हो।

पर्वत, वृक्ष और नदी-नाले सभी जमाने और परिस्थितियों के साथ अपनी बनावट, शक्ल और स्थान बदल देते हैं, जिस तरह आदमी की आकृति मनोभावों और चिन्ताओं के बदलने के साथ-साथ बदलती रहती है। दिन को चुनार का जो वृक्ष रूपवती नववधु के समान मालूम होता है और जिसके वस्त्रों से हवा की मौजें अठखेलियाँ करती हैं, शाम को धुँए का खम्भा-सा मालूम होता है। जो बड़ी चट्टान दोपहर को बड़े बलवान् देव के समान जमाने के आक्रमणों का मजाक उड़ाती है रात को उस अभागे भिखारी के समान मालूम होती है जिसका बिछौना जमीन हो और और ओढ़ना आकाश। जो नदी सुबह के वक्त हमें पिघली हुई चाँदी की तरह जगमगाती नजर आती है और जिसे हम अमर गीत गाते हुए सुनते हैं वही शाम को ऐसी मालूम होती है

जैसे आँसुओं की नदी है, जो तलहटी की पसलियों से निकली है। इस वक्त इसके अमर गीत उस माँ के रुदन और शोक में पलट जाते हैं जिसका इकलौता बच्चा मर गया हो।

एक हफ्ते पहले जब चाँद पूर्णिमा का चाँद था और हमारी आत्माएं सुख-सन्तोष का घर थीं, लबनान रौनक और तेज की एक पूरी तस्वीर था, पर इस रात को धड़कते हुए बीमार दिल और छोटे और तेजहीन चांद के सामने चिंतित, शोभाहीन और भयानक मालूम हो रहा था।

मैं रुखसत होने के लिए खड़ा हुआ तो प्रेम और निराशा की दो डरावनी छायाएं हमारे बीच खड़ी हो गईं। प्रेम हमारे सिरों पर छाया किये हुए था और निराशा हमारे गले घोंट रही थी। प्रेम दिल की जलन के समान रो रहा था, और निराशा उलाहने और मजाक के तौर पर ठट्ठे कर रही थी।

जब मैंने सलमा का हाथ मंगलकामना से अपने होंठो पर रखा तो वह मेरे करीब आई और उसने मेरी मांग को चूमा। इसके बाद वह पलटी और लकड़ी के बैंच पर जा पड़ी। उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं और धीरे-धीरे हलकी आवाज में कहने लगी, "हे परमात्मा! दया कर और तमाम टूटे हुए परों को शक्ति प्रदान कर।"

सलमा से जुदा होकर मैं उस चारदीवारी से निकला। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि मेरी इन्द्रियों पर एक बारीक परदा पड़ा है, जैसे समुद्र तल पर बादल। मैं चल रहा था और जो वृक्ष सड़क के दोनों तरफ खड़े थे उनकी छाया मेरे सामने इस तरह हिल रही थी मानो वह अदृष्ट सृष्टि की छाया है जो मुझे भयभीत करने के लिए जमीन से निकाल रही थी, मानो वह बारीक तीर हैं जिन्हें हवा में उड़ती हुई आत्माओं ने मेरी छाती में गाड़ दिया है। अनन्त खामोशी मुझ पर इस तरह छाई हुई थी मानो भारी काले हाथ को अंधेरे ने मेरे शरीर पर लाद दिया हो।

इस वक्त जीवन का हर पहलू अप्रिय, उसका हरएक उद्देश्य

भयानक और आत्मा का हरएक रहस्य डरावना था।

मेरे जिस आंतरिक प्रकाश ने मुझे संसार के सौन्दर्य और रचनाओं के आनन्दों से दो-चार किया था। इस वक्त वह आग में बदल कर अपनी लपटों से दिल को जला रहा था और अपने धुँए में मेरी आत्मा को छिपा रहा था।

जो गीत सृष्टि की सारी आवाजों को अपने में मिलाकर उन्हें पवित्र राग बना देता है इस वक्त एक अर्थहीन शोर में बदल गया था। वह शेर की दहाड़ से ज्यादा भयानक और नरक की चीख-पुकार से ज्यादा गहरा था।

अपने कमरे में पहुंचकर मैं बिस्तर पर इस तरह गिर पड़ा जैसे कोई पक्षी शिकारी का तीर खाकर किसी चारदीवारी में गिर पड़े। सारी रात मैंने भीषण जागरण और उचाट नींद में गुजार दी, लेकिन मेरी आत्मा हर हालत में सलमा के इन वाक्यों को दुहरा रही थी—"हे परमात्मा! दया कर और तमाम टूटे हुए परों को शक्ति प्रदान कर।"

: ८ :

मौत के दरबार में

हमारे जमाने में विवाह एक प्रकार का व्यापार बन गया है जो हास्यास्पद भी है और दुखदायक भी। यह व्यापार नौजवानों और लड़कियों के माँ-बाप के बीच होता है। नौजवान बहुत-से देशों में इस व्यापार से लाभ उठाते हैं और माँ-बाप हमेशा घाटे में रहते हैं। लेकिन वह लड़कियाँ सदा के लिए अपने सुखों से हाथ धो लेती हैं जो व्यापारी माल-असबाब की तरह एक घर से दूसरे घर ले जाई जाती हैं। पुराने कबाड़ की तरह उनकी तकदीर में भी घर के कोने खुदे हुए होते हैं। इन अंधेरे कोनों में उन्हें कोई नहीं पूछता और वे घुल-घुलकर जान दे देती हैं।

आजकल की सभ्यता ने स्त्री का दर्जा कुछ बढ़ा दिया है पर मर्दों की लोभ-लालसा के भावों को आम करके इसके दुःख दर्द में उससे कहीं ज्यादा वृद्धि कर दी है। स्त्री कल तक एक सौभाग्यशाली दासी थी, लेकिन आज कर्मफूटी रानी है। कल तक वह अन्धी थी और दिन की रोशनी में चलती-फिरती थी। लेकिन आज वह आँखों वाली है और रात के अंधकार में ठोकरें खाती है। कल तक वह अपने अज्ञान के कारण रूपवती, अपने अल्हड़पन के कारण विशिष्ट और अपनी दुर्बलता के कारण सबला थी लेकिन आज वह अपनी कल्पनाओं के कारण उथली और अपनी बुद्धिमत्ता के कारण दिल से कोसों दूर है।

क्या कोई दिन ऐसा भी आयगा जब स्त्री में रूप के साथ समझ-बूझ, अनोखी बातों के साथ बड़ाई और विशेषता और शारीरिक दुर्बलता के साथ आत्म-शक्ति भी होगी?

मैं उन लोगों में से हूं जो इस बात के मानने वाले हैं कि आत्म-विकास आदमी की आदत है और पूर्णता-प्राप्ति एक सुस्त पर प्रभाव-शाली कानून। मेरे विचार में अगर स्त्री एक दिशा में उन्नति करेगी तो दूसरी दिशा में पीछे रह जायगी क्योंकि जिन घाटियों को पार करके हम पहाड़ की चोटी पर पहुँचते हैं वह भेड़ियों और लुटेरों के रहने का स्थान भी होती हैं।

वर्तमान युग नींद और जागरण के बीच की हालत के समान है। इसकी पकड़ में गुजरे हुए जमाने की जमीन और आने वाले जमाने के बीज हैं। इसे मन की प्रवृत्तियों और मिलानों की दृष्टि से अनोखा कहा जा सकता है। सभ्यता की गोदी में कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी हैं जिनका अस्तित्व भावी स्त्रियों की तरफ इशारा करता है।

बैरूत में ऐसी स्त्री सलमा थी जिसे हम भविष्य की स्त्री का नमूना कह सकते थे, पर उन बहुत-से लोगों की तरह जो वक्त से पहले पैदा होकर जमाने की भेंट चढ़ जाते हैं, वह भी उस फूल की तरह आज्ञापालन और नापसन्दी के दुर्भाग्यों का शिकार हो गई जिसे नदी की धारा बहा ले जाय।

मन्सूर का विवाह सलमा से होगया। वह दोनों बैरूत के उस सर्वश्रेष्ठ हिस्से में दरिया के किनारे एक शानदार मकान में जिन्दगी गुजारने लगे जहाँ शहर के बड़े-बड़े लोग रहते हैं। फारिस करामा अपने मकान में इस तरह अकेला रह गया जिस तरह भेड़ों में चरवाहा।

विवाह के दिन आनन्द की रातों के साथ गुजर गए और जिस समय को दुनिया सोहागरात के नाम से पुकारती है वह भी अपने पीछे इन्द्रायण जैसे कड़वे-कसैले महीनों को छोड़कर इस तरह गुजर गया जिस तरह बड़े-बड़े युद्ध मृतकों की खोपड़ियों को अपने स्मारक के तौर पर छोड़ जाते हैं।

पूर्वी विवाहों के आनंद नौजवान लड़कों और लड़कियों को गिद्ध की-सी तेज़ी और उड़ान के साथ बादलों की दुनिया में उड़ा ले जाते हैं

और वहां से उन्हें जमीन पर इस तरह फेंक देते हैं, जिस तरह चक्की का पाट समुद्र में फेंका जाय। यह कहना चाहिए कि यह आनंद उन चरण-चिह्नों के समान होता है जो समुद्र-तट के रेत पर हो और जिन्हें समुद्र की लहरें क्षण-मात्र में मिटा दें।

बसंत ऋतु गुजरी, गर्मियाँ समाप्त हुईं, और हेमंत ऋतु आ पहुंची। सलमा से मुझे जो प्रेम था वह उस दर्जे से निकलकर जो एक नौजवान को जवानी के मस्ती-भरे दौर में किसी रूपवती लड़की से होता है, उस ख़ामोश पूजा की हद तक पहुँच गया जो एक अनाथ बच्चा अपनी मरी हुई माँ की आत्मा के लिए अनुभव करता है। जवानी की जो मस्ती मुझ पर पूरी तरह छाई हुई थी अब उसने एक ऐसी अंधी चिंता की सूरत अपना ली, जो अपने सिवा किसी और को नहीं देखती। जो शौक मेरी आंखों से आंसू बहाता था वह अब एक ऐसे रंग में बदल गया, जो मेरे दिल से खून के आंसू रुलवाता था। प्रेम के जिस आवेश से मेरी छाती भरी रहती थी, वह अब उस प्रार्थना में पलट गया जो मैं सलमा के सौभाग्य, उसके पति के आनन्द-सुख और उसके बाप की शान्ति और संतोष के लिए रातों की ख़ामोशी में परमात्मा से करता था। लेकिन मेरी प्रार्थनाएं और याचनाएं सब निष्फल प्रमाणित हुईं क्योंकि सलमा का दुर्भाग्य उसके दिल की बीमारी थी जिसका मौत के सिवा कोई और इलाज न था। रहा उसका पति सो वह उन लोगों में से था जो बग़ैर किसी मेहनत और कठोर परिश्रम के जीवन के आनन्द को प्राप्त कर लेते हैं, पर उन पर संतोष न करके सदा ऐसी चीज़ों का लालच करते हैं जो उनके लिए नहीं होतीं; और इस तरह अपनी लोभ-लालसा के कारण तमाम उम्र कष्ट में फंसे रहते हैं।

फ़ारिस करामा की शान्ति और संतोष के लिए मेरी उम्मीद और कामनाएं इसलिए व्यर्थ थीं कि उसके जामाई ने कभी उसकी बेटी को प्यार नहीं किया। वह अपनी पत्नी के धन-दौलत पर कब्ज़ा करके

अपने ससुर को भूल ही नहीं गया बल्कि उसकी मृत्यु चाहने लगा, जिससे उसकी बची-खुची दौलत पर भी हाथ साफ करे।

मंसूर हूबहू अपने चाचा पादरी का-सा था। उसका स्वभाव और आदतें बिलकुल अपने चाचा के स्वभाव और आदतों के समान थे। इन दोनों में अगर कोई फर्क था तो केवल इतना कि पादरी मक्कार और धूर्त था और मंसूर खुला हुआ बदमाश। पादरी अपने रंगीन भेष के परदे में खेलता और उस सुनहरी सूली-चिह्न की छायामें अपनी लालसा और नामवरी की भावनाओं की तृप्ति का सामान इकट्ठा करता जो उसके सीने पर लटकता रहता था। लेकिन उसका भतीजा यह सब कुछ करता और खुल्लमखुल्ला करता। पादरी सुबह को गिरजे में जाता और वहां तमाम दिन विधवाओं, अनाथों और सरल-हृदय लोगों का माल हजम करता। पर मंसूर अपनी विषय-वासनाओं की पूर्ति के लिए तमाम दिन उन तंग और अंधेरी गलियोंमें मारा-मारा फिरता जिनका वातावरण बद-चलन और दुश्चरित्र लोगोंके गंदे सांसोंसे गंदा होता। पादरी हर इतवार को बलि-वेदी के सामने खड़ा होकर धर्म-विश्वासी लोगोंको उन बातों का उपदेश देता था जिन पर वह स्वयं कभी अमल न करता। और हफ्ते के बाकी दिन वह स्थानीय राजनीति में लगा रहकर गुज़ारता। पर उसका भतीजा हर रोज़ अपने चाचा के प्रभाव और फतवों से फ़ायदा उठाकर नौकरी चाहने वालों और मान-बड़ाई के भूखों में कार-व्यवहार करता। पादरी चोर था जो रात के परदों में छिपकर चोरी करता, लेकिन मंसूर डाकू था जो दिन-दिहाड़े डाके मारता।

इस तरह जातियां इन पवित्र चोरों और दगाबाजों के बीच मारी जाती हैं, जैसे भेड़-बकरियों के गल्ले भेड़ियों के दांतों और कसाइयों के छुरों के बीच। इस तरह पूर्वी कौमें इन बुरे और दुराचारी लोगों के फंदों में फँसकर उलटे-पांव चलती हैं और गढ़े में गिर पड़ती हैं। जमाना इन्हें अपने पांव में इस तरह पीस देता है जिस तरह लोहे के हथौड़े मिट्टी के बर्तनों को चकनाचूर कर देते हैं।

मैं इन पृष्ठों में अभागी और निराश कौमों का ज़िक्र क्यों कर रहा हूँ" जबकि मैंने उन्हें एक अभागी स्त्री के जीवन की कहानी और उसके दुखी दिल के विचारों के चित्रण के लिए खास तौर पर सुरक्षित रखा था, जिस पर प्रेम ने कभी अपने सुखों की कृपा नहीं की बल्कि ग़म के थपेड़ों से अधमरा कर दिया। मेरी आंखों में गुमनाम और पीड़ित कौमों के जिक्र से क्यों आंसू भर रहे हैं, यद्यपि मैंने अपने आंसू उस अबला स्त्री के जीवन चरित्र के लिए रख छोड़े थे जो जिन्दगी से अभी गले भी न मिली थी कि मौत ने उसे अपनी गोद में ले लिया। लेकिन क्या कमजोर स्त्री का अस्तित्व किसी कौम के अत्याचारों का परिणाम नहीं है? क्या जो स्त्री आत्मिक मिलानों और शारीरिक बंधनों के बीच दुख में फंसी हो, उस कौम का नमूना नहीं होती जो अधिकारियों और धर्म के ठेकेदारों के बीच संकट में फंसा हो, क्या जो गुप्त भाव एक सुन्दर और नौजवान लड़की को कब्र के अन्धकारों में पहुँचा देते हैं, उन तेज़ तूफानों के समान नहीं होते, जो राष्ट्र के जीवन को मिट्टी में मिला देते हैं?

स्त्री क़ौम के लिए वही दर्जा रखती है जो दीपक के लिए उसकी लौ। फिर यह कैसे सम्भव है कि दीपक में तेल भी कम न हो और उस की लौ भी टमटमाए? इस तरह पतझड़ ऋतु की वायु के तेज झोंकों ने पीले पत्तों से इस तरह खेल-खेलकर वृक्षों को नंगा कर दिया जिस तरह तूफान समुद्र से खेलता है। हेमन्त भी गुजर गया और शीत ऋतु रोती-पीटती और चीखती-चिल्लाती आई। इस वक्त मैं बेरूत में था और उन स्वप्नों के अलावा मेरा कोई साथी न था जो कभी मेरी आत्मा को इतना उभारते थे कि वह तारों की दुनिया में पहुंच जाती थी और कभी मेरे दिल को इतना गिरा देते थे कि वह बिलकुल ही बैठ जाता था।

ग़मगीन आत्माएं एकान्तवास में सुख पाकर संसार से सम्बन्ध तोड़ देती हैं, जिस तरह ज़ख्मी हरिण डार से अलग होकर किसी गुफा में जा छिपता है, जब तक कि अच्छा हो जाय या मर जाय।

एक दिन फ़ारिस करामा की बीमारी की खबर सुनकर मैंने एकान्त को छोड़ा और उसका हाल पूछने के लिए चल खड़ा हुआ। आम रास्ते से हटकर जहाँ चलने वालों की रेल-पेल और गाड़ियों की आवाजें शान्ति को भंग कर देती हैं, मैंने अपने लिए वह सुनसान सड़क चुनी जिसके दोनों किनारों के जेतून के वृक्षों की चाँदी-सी सफेद पत्तियों पर वर्षा को बूंदें चमक रही थीं।

फ़ारिस करामा की कोठी पर पहुंचकर जब मैं उसके कमरेमें दाखिल हुआ, तो मैंने देखा कि वह चारपाई पर लेटा हुआ है। उसका तन सूखकर कांटा होगया है, चेहरा बिलकुल सूख गया है और रंग पीला पड़ गया है। मैंने देखा कि उसकी आँखें अन्दर की तरफ धंस गई हैं और ऐसी मालूम हो रही हैं जैसे वह दो अंधेरे और गहरे गढ़े हैं जिनमें दुख और बीमारी की परछाइयाँ चल फिर रही हों। जो चेहरा कल तक प्रफुल्लता और आनन्द का सूचक था वह अब झुर्रियों के पड़ जाने से काला पड़कर ऐसा होगया है जैसे मटियाले रंग का मुड़ा-तुड़ा कागज जिस पर बीमारी अनोखी और संदिग्ध लेख लिख रही है। जो हाथ नरम और नाजुक थे, वह इतने सूख गए थे, कि खाल के नीचे से अंगुलियों की हड्डियां दिखाई देने लगी थीं मानो फल-फूलहीन टहनियां हवा के झोंकों के सामने काँप रही हैं।

जब मैं तबियत का हाल पूछने के लिए उसके समीप गया तो उस ने अपना मुँह मेरी तरफ किया। उसके काँपते होठों पर एक हल्की-सी मुसकराहट जाहिर हुई, मानो कोई दीवार के पीछे से बात कर रहा हो, इतनी कमजोर आवाज में उसने कहा, "बेटा! सामने वाले कमरे में जाओ और सलमा के आँसू पोंछो। उसे तसल्ली देकर यहाँ लाओ जिस से वह कुछ देर मेरे पास बैठे।"

जब मैं सामने वाले कमरे में दाखिल हुआ तो मैंने देखा कि सलमा एक सोफे पर तकियों में मुँह छिपाए पड़ी है। उसकी कलाइयाँ उसके सिर पर हैं और वह सिसकियां भर-भरकर रो रही है जिससे उसके

बाप को उसका रोना और रंज मालूम न हो। मैं धीरे-धीरे उसके पास गया और ऐसी आवाज़ में उसका नाम लेकर पुकारा जो कानाफूसी की अपेक्षा ठंडे सांस से ज्यादा मिलता था। बेचैन होकर वह उठ बैठी जैसे कोई सोने वाला आदमी स्वप्न टूटने पर चौंक उठता है। वह कुरसी पर संभलकर बैठ गई। उसने मुझे इस तरह टकटकी बाँध कर देखा मानो वह स्वप्नावस्था में किसी परछाईं को देख रही है और उसे विश्वास नहीं होता था कि मैं वहाँ मौजूद हूं।

जिस गहरी ख़ामोशी ने अपने जादू-भरे प्रभाव से हमें उन क्षणों की तरफ लौटा दिया था जिनमें हमने प्रेम-मदिरा पी थी, ऐसी गहरी ख़ामोशी के बाद सलमा ने अपनी आस्तीन से आंसू पोंछे और दुख-भरे स्वर में कहने लगी—

"क्या तुमने देखा कि दुनिया ने कैसा पलटा लिया है? क्या तुमने देखा कि जमाने ने हमें किस तरह रास्ते से दूर किया है और हम कितनी जल्दी इन डरावने गढ़ों में गिरे हैं? इस जगह बसंत ऋतु ने प्रेम की छाया में हम दोनों को एक स्थान पर मिलाया था और इसी जगह शीत ऋतु ने हम दोनों को मौत के दरबार में खड़ा कर दिया। आह! किस कद्र मनोहर और शुभ था वह दिन, और आह! किस क़द्र कठोर और भयानक है इस रात का अंधकार!"

आखिरी शब्द सलमा के कंठ में अटक कर रह गए। वह मुड़ी और उसने अपने चेहरे को हाथों से इस तरह छिपा लिया मानो अतीत की घटनाएं मूर्तिमान बनकर उसके सामने खड़ी हैं और वह उन्हें देखना नहीं चाहती। मैंने उसके सिर पर हाथ रखा और कहा—

"आओ सलमा! आओ, हम आंधी के सामने दृढ़ मीनारों की तरह खड़े हो जायें। आओ हम वंचित तरंगों के मुकाबले में फौज की तरह डट जायें और त[illegible] [illegible]थ अपनी पीठ पर नहीं, अपने सीने पर रोकें। अगर हमें हार हुई तो हम शहीदों की मौत मरेंगे और अगर हमने विजय प्राप्त की तो वीरों का जीवन [illegible] करेंगे। तकलीफों और कठिनाइयों का

साहस और धैर्य के साथ डटकर मुकाबला करना इससे कहीं बेहतर है कि आदमी अपने चैन के लिए भाग खड़ा हो। जो पतंग दीपक के गिर्द चक्कर लगाता है, और अंत में जलकर मर जाता है, उस छछूंदर से कहीं श्रेष्ठ है जो सुख और रक्षा के साथ अंधेरे बिल में रहती है। जो बीज जाड़े की ठंड और तत्वों के क्रोध को सहन नहीं कर सकता वह भूमि की छाती चीरकर बसंत की सुन्दरताओं के सुख नहीं उठा सकता। आओ, सलमा! हम इस कठिन रास्ते को दृढ़ कदमों के साथ इस तरह तय करें कि हमारी आंखें सूरज की तरफ हों, जिससे हम चट्टानों के बीच पड़ी हुई मुर्दा खोपड़ियों और घास-फूस में रींगते हुए सांपों को न देख सकें। सलमा! अगर हम रास्ते में भय के कारण कहीं रुक गए तो रात का अंधेरा हमारा मजाक उड़ायगा। और अगर हम साहस और वीरता से काम लेकर चोटी पर पहुंच गए तो दुनिया के सब आदमी हमारे साथ विजय और सफलता के गीत गायंगे। सलमा! सन्तोष रखो, आंसू पोंछो और अपने चेहरे से गम को प्रकट न होने दो। उठो और अपने पिता के पास चलकर बैठो। उनका जीवन तुम्हारे जीवन पर निर्भर है और उनका आरोग्य तुम्हारी मुसकराहट पर।"

सलमा ने मुझ पर शोक और प्रेम की दृष्टि डाली, और कहा, "तुम मुझसे संतोष और शान्ति चाहते हो, यद्यपि तुम्हारी आंखें खुद निराशा जाहिर कर रही हैं। क्या एक भूखा शिकारी अपनी रोटी किसी दूसरे भूखे शिकारी को दे सकता है? क्या एक रोगी दूसरे रोगी को दवा दे सकता है जबकि उसे स्वयं उससे ज्यादा दवा की आवश्यकता है?"

वह उठी और सिर झुकाए मेरे आगे-आगे अपने पिता के कमरे की तरफ चल पड़ी।

हम दोनों बीमार बूढ़े के बिस्तर के पास बैठ गए। सलमा दिखाने के लिए अपने आप को सम्भालने और मुसकराने को कोशिश कर रही थी। और फ़ारिस करामा के यह ज़ाहिर करने की कि उसे सुख और शक्ति प्राप्त है।

दोनों को एक दूसरे की तकलीफ़ का ज्ञान था दोनों, एक दूसरे की कमज़ोरी को जानते थे और दोनों एक दूसरे के दिल की धड़कन सुन रहे थे। वह दोनों उन विरोधी शक्तियों के समान थे जो ख़ामोशी की हालत में एक दूसरे को नष्ट कर देती हैं। बीमार बाप अपनी बेटी के अभागेपन की चिंता में घुला जा रहा था और अपने बाप को प्यार करने वाली बेटी उसकी बीमारी के दुख में मिटी जा रही थी। और मैं उन दोनों के बीच अपने कष्टों को सहन और उनकी विपत्तियों को अनुभव कर रहा था।

मौत के हाथ ने तीन आदमियों को एक जगह इकट्ठा किया और फिर उन्हें इस तरह दबोचा कि वह पिसकर रह गए। एक बूढ़ा है जो उस पुरानी इमारत के समान है जिसे तूफान, हवा और बारिश ने गिरा दिया हो। एक नवयुवती है जो उस फूल के समान है जिसे टहनी से काट डाला गया हो। और एक नौजवान है जो उस कमज़ोर पौदे के समान है जो हिम-वर्षा से दोहरा हो गया हो। ऐसा मालूम होता था कि हम तीनों ज़माने की अंगुलियों में तीन कठपुतलियां हैं।

फ़ारिस करामा ने हरकत की और अपना कमज़ोर हाथ सलमा की तरफ़ बढ़ाया। जो आवाज़ पिता के दिल की कृपा और दया और बीमार के सीने के दुख-दर्द के समान थी, ऐसी आवाज में उसने कहा, "सलमा, अपना हाथ मेरे सिर पर रखो।"

सलमा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अपने बाप के हाथ पर रख दिया। फ़ारिस करामा ने धीरे से उसका हाथ दबाया और कहने लगा, "मेरी बच्ची! अब जीवन से मैं भर-पाया हूँ। मैं बहुत दिन जिया और मैंने ज़िन्दगी के हर एक मनोहर पहलू से खूब जी-भर आनन्द उठाया। मैंने बचपन खेल-कूद में, जवानी मुहब्बत में और बुढ़ापा धन-दौलत जमा करने में गुज़ारा। यह तीनों काल मैंने सम्पन्नता और सुख में व्यतीत किये। सलमा! तू अभी तीन बरस की भी न हुई थी कि तेरी मां मुझसे सदा के लिए जुदा हो गई, पर तुझे मेरे

लिए एक अमूल्य खज़ाने के तौर पर छोड़ गई। मैंने तुझे पाला और तू नये चांद की तरह तेजी से बढ़ने लगी। तेरे चेहरे से तेरी मां की आकृति इस तरह प्रतिबिम्बित होने लगी जैसे ठहरे हुए पानी में सितारों की किरनें। और तेरी बातों और कामों में उसका शिष्टाचार और गुण उस तरह जाहिर होने लगे जैसे बारीक परदे में से सोने के आभूषण। मेरी बच्ची, तेरा अस्तित्व मेरे लिए तसल्ली का कारण था, इसलिए कि तू अपनी मां की तरह सुन्दर और बुद्धिमान थी। और अब जबकि मैं बूढ़ा हो गया हूं मेरे लिए सुख और सलामती मौत की नाजुक और नरम भुजाओं में है।

"बेटी! मेरे संतोष के लिए यह काफी है कि मैं तुझे एक अल्हड़ नौजवान लड़की नहीं बल्कि एक गम्भीर स्त्री छोड़कर मर रहा हूं। मुझे खुशी है कि मरने के बाद भी मैं तेरी वजह से जिन्दा रहूँगा। सलमा, मेरा क्या है? आज मरा या कल मरा या इसके बाद मरा, क्योंकि मेरी जिन्दगी हेमन्त के उन पत्तों के समान है जिन्हें हवा टह-नियों से अलग करके भूमि पर बिखेर देती है। जमाना मुझे जल्द-से-जल्द दूसरे लोक में पहुँचा देना चाहता है। वह जानता है कि मेरी आत्मा तेरी मां को देखने के लिए अत्यन्त इच्छुक है।"

आखिरी शब्द फारिस करामा ने सुरीली आवाज में कहे जो शोक और आशा की मिठास से भरे थे। उसके कुम्हलाए हुए चेहरे पर एक ऐसी चमक पैदा हुई जो भोले-भाले बच्चों की आंखों की ज्योति से मिलती-जुलती थी। उसने अपने सिरहाने से एक छोटी-सी सुनहरी तस्वीर निकाली जिसके किनारे अंगुलियों की रगड़ से घिस गए थे और चित्र चूमनेसे मध्यम पड़ गया था। तस्वीर से अपनी निगाहें हटाए बगैर उसने कहा, "सलमा! मेरे पास आ, मैं तुझे तेरी मां की तस्वीर दिखाऊं। बेटी! आ, और कागज पर अपनी मां का प्रतिबिम्ब देख।"

सलमा आस्तीन से आंसू पोंछती हुई आगे की तरफ झुकी, इस ख्याल से कि आंसू कहीं उसके और उसकी मां के बीच आड़ न बन

जायं। वह देर तक तस्वीर को टकटकी बांधे देखती रही मानो वह एक दर्पण है जिसमें वह चेहरे के अतिरिक्त अपनी असली जिन्दगी की परछाईं भी देख रही है। उसने तस्वीर को अपने होंठों से लगाया और दुखी चुम्बनों का तांता बांध दिया। वह चिल्लाई, "अम्मा! अम्मा! अम्मा !!"

इसके अतिरिक्त उसकी जबान से कुछ न निकला। वह मुड़ी और तस्वीर को फिर अपने कांपते हुए होंठों से लगा लिया मानो अपने गरम सांसों से उसमें जिन्दगी का गरमी पैदा करना चाहती है।

आदमी के होंठों से निकले हुए शब्दों में सबसे अधिक मधुर शब्द "माँ" है और सबसे ज्यादा सुन्दर पुकार—"ऐ माँ!" यह छोटा-सा वाक्य अपने अर्थों की दृष्टि से बहुत विशाल है जिसमें आशा, प्रेम, कोमलता और मधुरता सब कुछ शामिल है। मां ही दुनिया में हमारे लिए सब कुछ है। वह एकांत में हमारी साथी, निराशा में हमारा सहारा और कमजोरी में हमारी शक्ति है। वह दया, कृपा, आनन्द और वरदान का स्रोत है। इसलिए अगर किसीकी मां न रही तो वह सीना भी न रहा जिस पर वह अपना सिर टिकाता है, वह हाथ न रहे जिन्हें वह आदर से चुम्बन देता है और वह निगाहें न रहीं जो इसकी देखभाल करती हैं।

सलमा अपनी माँ से बिलकुल अपरिचित थी क्योंकि वह उसे तीन वर्ष की छोड़कर मर गई थी। लेकिन जब उसने अपनी माँ की तस्वीर देखी तो बेचैन होगई और अपने आप ही उसकी जबान से निकला, "हाय, मां!"

"माँ" शब्द हमारे दिलों में इस तरह छिपा होता है जैसे बीज जमीन के सीने में। दुख-सुख की घड़ियों में यह शब्द हमारे होंठों से इस तरह निकलता है जैसे साफ और सुगन्धित वातावरण में गुलाब की पत्तियों से खुशबू फूटती है।

सलमा कभी अपनी मां के चित्र को गौर से देखती और कभी अपनी

होकर उसे चूमती। कभी उसे अपने धड़कते हुए दिल से लगाती और कभी ठंडा सांस भरकर एक आह खींचती। हर ठंडे सांस के साथ उसकी शक्ति का कुछ-न-कुछ हिस्सा खत्म हो रहा था, यहाँ तक कि जब उसके दुबले-पतले शरीर में जीवन-शक्ति कमजोर होने लगी तो वह निढाल होकर अपने बीमार बाप के पलंग के पास गिर पड़ी।

फारिस करामा ने अपने दोनों हाथ उसके सिर पर रखे और कहा, "बेटी! तुमने अपनी मां का चित्र तो देख लिया, अब उसके गुण भी सुनो।"

सलमा ने इस तरह अपना सिर उठाया जिस तरह पक्षियों के बच्चे बन्दी चिड़िया की फड़फड़ाहट की आवाज सुनकर अपने-अपने घोंसलों से सिर निकालते हैं। सिर से पांव तक उसके सब अंग-उपांग आंख और कान बन गए।

फारिस करामा ने कहना शुरू किया, "बेटी! जब तेरे नाना का देहान्त हुआ तू दूध-पीती बच्ची थी। तेरी माँ को अपने बाप के मरने का बहुत दुख हुआ और वह रोई पीटी भी, पर संतोष और समझदारी के साथ। इस वास्ते इससे पहले कि तेरे नाना को दफ़न करते, वह उसी कमरे में मेरे पास आकर बैठी और मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहने लगी, 'स्वामी! मेरा बाप परमात्मा को प्यारा हुआ मगर तुम मेरे लिए मौजूद हो, और यही मेरी तसल्ली के लिए काफी है। तरह-तरह के भावों को रखने वाला दिल देवदार के उस वृक्ष के समान होता है जिसकी बहुत-सी टहनियाँ हों। इसलिए देवदार की अगर कोई मजबूत टहनी टूट जाती है तो उसे रंज जरूर होता है, पर वह इसके दुख में सूखता नहीं, बल्कि उसके बढ़ने की शक्ति पास की टहनी की वृद्धि में खर्च हो जाती है; और वह दूसरी हरी-भरी टहनियों से टूटी हुई टहनियों की जगह भर देता है।' सलमा! अपने बाप के देहान्त के बाद तेरी माँ ने यह शब्द कहे थे। तुझे भी चाहिए कि जब मौत मेरे शरीर को कब्र के विश्राम-घर में और मेरी आत्मा को परमात्मा की कृपा की छाया में

पहुँचा दे तो इसी प्रकार के शब्द तेरी जबान से भी निकलें।"

सलमा ने करुणाजनक आवाज में उत्तर दिया, "बाप के देहान्त के बाद मेरी माँ के लिए आप थे। परमात्मा ऐसा न करे कि आपको कुछ हो पर आपके बाद मेरा कौन है? उनके बाप मरे, तो वह एक सज्जन, प्रतिष्ठित और प्रेमी पति की छाया में थी। उनके बाप मरे तो एक बच्ची उनकी गोदी में थी, जिसका सिर उनके सीने की ठंडक और जिसकी नन्हीं-नन्हीं कलाइयाँ उनके गले का हार थीं। लेकिन आपके बाद मेरा क्या है? पिताजी, आप ही मेरे बाप हैं और आप ही मेरी माँ। आप ही मेरे बचपन के संगी हैं और आप ही मेरी जवानी के साथी। अगर आप मुझसे जुदा हो गए तो आपका बदल मैं कहाँ से लाऊंगी?"

यह कहकर सलमा ने आँसू-भरी निगाहों से मुझे देखा और मेरा पल्ला पकड़कर कहने लगी, "पिताजी, इनके सिवा मेरा कोई मित्र नहीं। अगर आप मुझे छोड़कर चले गए, तो इनके सिवा मेरा कोई सहारा नहीं। लेकिन क्या ये मुझे सांत्वना दे सकेंगे? क्या ये मेरी तसल्ली कर सकेंगे जबकि ये स्वयं मेरी तरह दुखी हैं? क्या कोई दिल-टूटा आदमी दूसरे टूटे हुए दिल वाले आदमी के लिए तसल्ली का कारण हो सकता है? पिताजी! एक किस्मत का मारा अपने पड़ोसी के गम से सन्तुष्ट नहीं हो सकता' जिस तरह कबूतर टूटे हुए परों के सहारे उड़ नहीं सकता। ये मेरे हैं लेकिन मैंने अपने गमों के बोझ से इन्हें इस कदर दबा दिया है कि इनकी कमर दोहरी हो गई है। और मेरे आँसुओं ने इनकी दृष्टि को इतना कम कर दिया है कि ये अन्धकार के सिवा कुछ नहीं देख सकते। ये मेरे भाई हैं, मैं इन्हें चाहती हूं और ये मुझ से प्रेम करते हैं। लेकिन दुनिया के और भाइयों की तरह ये मेरी विपत्ति में शामिल तो होते हैं मगर इसमें कमी नहीं कर सकते। रुदन और विलाप में मेरा साथ तो देते हैं पर मेरे आँसुओं के कड़वेपन और दिल की जलन में कुछ वृद्धि कर देते हैं।"

सलमा की बात सुनकर मेरे जज़बे भड़क रहे थे और मेरा सीना तंग से ज्यादा तंग होता जा रहा था। यहां तक कि मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मेरी पसलियां फटकर चौड़ी होगई हैं। लेकिन फ़ारिस करामा अपनी बेटी को देख रहा था। इसका कमजोर शरीर आहिस्ता-आहिस्ता गद्दों और तकियों से दबा जा रहा था और उसकी थकी-मांदी आत्मा इस तरह काँप रही थी जैसे हवा के सामने दीपक की लौ। उसने अपनी भुजाएं फैलाईं और धंसी हुई आवाज में कहने लगा—

"बेटी! मुझे शांति से मरने दे। मेरी आंखें परलोक को देख रही है और मैं नहीं चाहता कि उन्हें इन अंधेरे गढ़ों की तरफ फेंक दूं। मुझे उड़ने दे; मेरी भुजाओं ने जीवन के पिंजरे की तीलियां तोड़ दी हैं। सलमा, तेरी मां मुझे बुला रही है, मुझे न रोक। वह देख! हवा अनुकूल चल रही है और समुद्र-तल बादलों से साफ हो गया है। जहाज़ ने अपने लंगर उठा दिये हैं और चलने के लिए तय्यार है। परमात्मा के लिए इसके पतवारों को न तोड़। सलमा मेरे शरीर को कब्र में सोने वालों के साथ आराम करने दे और मेरी आत्मा को स्थायी जागरण की गोद में जाने दे। सुबह के लक्षण प्रकट हो गए हैं और मेरा स्वप्न टूटने को है। बेटी, अपनी आत्मा से मेरी आत्मा को आलिंगन करने दे। आशा के अधरों से मुझे चूम। मेरे शरीर पर रंज-गम की कड़वी बूंदें न टपका वरना फूल-पत्तियां इसके तत्वों को अपना भोजन न बना सकेंगी। मेरे हाथों को निराशा के आँसुओं से तर न कर वरना मेरी कब्र पर ये आंसू बबूल के कांटे बनकर उगेंगे। अपनी दुख जनक आहों से मेरी परेशानी पर कुछ न लिख; क्योंकि सुबह की ठण्डी-ठण्डी हवा जब मेरे पास से गुजरेगी और उसे देखेगी तो मेरी हड्डियोंकी धूल को हरे-भरे पवित्र स्थानों में न ले जाने देगी। मेरी बच्ची, मैं जिन्दगी भर तुमसे प्यार करता रहा और मरने के बाद भी तुझे ही चाहूँगा। मेरी आत्मा हर वक्त तेरी रक्षा और निगरानी के लिए तेरे साथ रहेगी।"

अब फ़ारिस करामा ने मेरी ओर ध्यान दिया। उसकी आंखें कुछ-

कुछ बन्द हो चली थीं और वे दो मटियाली रेखाएँ मालूम हो रही थीं। ऐसी हालत में ऐसा मालूम होता था मानो मौत की खामोशी उसकी बोलने की शक्ति को दबा रही थी। उसने कहा, "बेटा ! तुम सलमा के साथ वही भाई वाला व्यवहार रखना जो तुम्हारे बाप का मेरे साथ था। ग़म की घड़ियों में उसका साथ देना और जिन्दगी-भर उसके सखा रहना। उसे गमगीन न होने देना क्योंकि मुर्दे पर रोना पुरानी गलतियों में से एक गलती है। उसे जीवन के संगीत और सुख-चैन की कहानियां सुनाकर कोशिश करना कि वह मुझे भूल जाय।"

फ़ारिस करामा कुछ देर के लिए खामोश हो गया। उसके शब्दों की परछाइयां कमरे की दीवारों पर रींग रही थीं। उसने निगाह ऊपर उठाई और एक ही वक्त में मुझे और सलमा को देखा। फिर बारीक आवाज में उसने कहा, "अब हकीम को बुलाने की जरूरत नहीं कि वह अपनी दवाइयों से मेरे बन्धन-काल को बढ़ाए। बंदगी और गुलामी का जमाना समाप्त हो गया और अब मेरी आत्मा स्वतन्त्रता की हवा में उड़ना चाहती है। पादरी को भी अब मेरे बिस्तर के करीब आने का कष्ट न देना, इसलिए कि अगर मैं पापी हूँ तो उसके मन्त्र मेरे पापों को कम नहीं कर सकते और अगर मैं पापरहित हूँ तो उसके जंच-मंत्र मुझे जल्दी से स्वर्ग में नहीं पहुंचा सकते। आदमी की इच्छाएं परमात्मा के इरादों को नहीं बदल सकतीं,जिस तरह ज्योतिषी नक्षत्रों की गति को नहीं रोक सकते। हां, मेरे मरने के बाद हकीम और पादरी जो चाहें सो करें। समुद्र की लहरें शोर मचाती रहती हैं और जहाज तट से लग जाते हैं।"

जब भयानकता की वह रात आधी हुई तो फारिस करामा ने अपनी आंखें खोलीं जो कमजोरियों अंधकार में डूबी हुई थीं और आखिरी बार अपनी दुखग्रस्त बेटी को देखा। उसने कुछ कहना चाहा पर कह न सका, क्योंकि मौत उसे दबा रही थी। बड़ी कठिनाई से यह शब्द उसकी जबान से निकले, "देखो ! रात खत्म हो गई........और

सुबह प्रकट हो रही है.......सलमा!......सलमा!"

सलमा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अपने बाप को छुआ। मुर्दे का हाथ बर्फ की तरह ठण्डा था। फिर उसने अपना सिर उठाया और उसके चेहरे की तरफ देखा। बीमार का चेहरा मौत के पर्दे में छिप चुका था। सलमा के शरीर में जिन्दगी जमकर रह गई और आंसू उसकी आंखों में सूख गए। न उसने हरकत की, न वह चीखी-चिल्लाई बल्कि मूर्ति की तरह अपने बाप की लाश को टकटकी बांधकर देखने लगी। उसके अवयव बेजान हो गए जैसे गीले कपड़े का पल्ला। वह नीचे की तरफ झुकने लगी यहां तक कि उसका माथा भूमि से लग गया। आहिस्ता-आहिस्ता उसने कहा, "या परमात्मा! दया कर और तमाम टूटे हुए परों को शक्ति प्रदान कर।"

फारिस करामा का देहान्त हो गया। उसका शरीर मिट्टी में मिल गया और आत्मा अनन्त की गोद में लीन हो गई। उसकी तमाम धन-सम्पत्ति पर मंसूर ने कब्जा कर लिया और उसकी बेटी अपनी बद-किस्मती का शिकार रही। जिन्दगी उसके लिए इस दुखान्तक नाटक के समान थी जिसे जमाने की मुसीबतों ने तय्यार किया हो।

और मैं! मैं अपने वहमों और विचारों की भेंट चढ़ रहा था। जमाने ने मुझे चारों तरफ से इस तरह घेर रखा था जिस तरह गिद्ध और अकाब शिकार के गिर्द मंडराते हैं। मैंने बहुत चाहा कि अपने आपको पुस्तकों में लीन कर दूं, शायद लोगों की घटनाओं से मेरी तबियत लग जाय, मेरा दिल बहल जाय। मैंने बहुत कोशिश की कि अपने वर्तमान को धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन से अतीत के जीवन-दायक प्रमोद स्थानों में लौटा दूं, पर व्यर्थ। मैं जहां था वहीं रहा। मैं उस आदमी के समान था जो तेल के छींटों से दीपक को बुझाना चाहता है। अतीत के शानदार उत्सवों के दृश्यों में से काली परछाइयों के अलावा मुझे कुछ नजर न आया। प्राचीन कौमों के आनन्ददायक गीतों में से मेरे कानों ने रुदन और विलाप के सिवा कोई आवाज न

सुनो। मेरी अवस्था ने मुझे इस कदर गम-पसन्द बना दिया था कि रोना मेरे लिए बांसुरी की सुरीली तान से ज्यादा मनोहर था। दुखसूचक गीत मुझे मधुर संगीत से अधिक अच्छे लगते थे। तबाही और बरबादी की बातें मेरी आत्मा के लिए बड़ाई और वैभव की कहानियों से ज्यादा महान् थीं। शोकपूर्ण कविताएं मेरे लिए स्वास्थ्य की मस्ती-भरी कविताओं से ज़्यादा प्रभावक थीं और हैम्लेट का नाटक यूरोप की सब रचनाओं की अपेक्षा मेरे हृदय से ज्यादा करीब था।

इस तरह निराशा हमारी दृष्टि को कमजोर करती है और हम डरावनी छाया के अलावा और कुछ नहीं देख सकते। इस तरह निराशा हमारे कानों को बहरा कर देती है और हम बेचैन दिलों की धड़कन के सिवा और कुछ नहीं सुन सकते।

: ९ :

देवालय

जो टीले और हरयावलें बैरूत के इर्द-गिर्द लबनान पर्वत की तलहटी में हैं, उनके बीच में एक देवालय है। यह एक सफेद चट्टान को काटकर बनाया गया है। इसके चारों तरफ जैतून, बादाम और बेंत के वृक्ष हैं। यह देवालय शाम की उन बहुत-सी अत्यन्त नामी इमारतों में से है जो गुमनामी के परदे में छिपी हुई हैं। पर ऐसा मालूम होता है कि गुमनामी ने इस देवालय को पुरातत्व-शास्त्रियों की निगाहों से इसलिए छिपा रखा है कि वह हारे-थके आदमियों के लिए एकांत स्थान और भयभीत प्रेमियों के लिए मिलने की जगह है।

इस अनोखे देवालय में दाखिल होने वाला आदमी पूर्वी दीवार पर एक अंकित चित्र देखता है जो दीवार खोदकर बनाया गया है। इसके कुछ नक्श कालचक्र के हाथों मिट गये हैं। उसके निशानों और चिन्हों को ऋतुओं के परिवर्तन ने रंग दिया है। इस चित्र में दिखाया गया है कि रूप और प्रेम की देवी, अशरूत, एक शानदार तख्त पर बैठी है और उसके चारों तरफ सात कुमारी नवयुवतियां भिन्न भिन्न ढंगों से खड़ी हैं। पहली कुमारी के हाथ में एक मशाल है और दूसरी के हाथ में रबाब बाजा है। तीसरी के हाथ में धूपदान है और चौथी के हाथ में शराब का सागर। पांचवीं कुमारी के हाथ में गुलाब की टहनी है और छठी के हाथ में फूलमाला। और सातवीं कुमारी जो इन सबसे ज्यादा अलबेली और चंचल मालूम होती है, कमान में तीर चढ़ा रही है। ये सब कुमारियां अशरूत देवी की तरफ देख रही हैं और इन सबके चेहरों पर नम्रता और आज्ञापालन के भाव हैं।

सामने दूसरी दीवार पर एक और चित्र है जो पहले चित्र के

मुकाबले में नया और ज्यादा साफ है। इस चित्र में दिखाया गया है कि महात्मा ईसा को सूली पर चढ़ाया जा रहा है और उसके पास उनकी दुखी मां मरियम और दो अन्य स्त्रियां खड़ी हैं। ये रुदन-विलाप करती हैं। यह चित्र पांचवीं या छठी ईसवी शताब्दी में खोदा गया था।

पश्चिमी दीवार में दो गोल रोशनदान हैं जिनमें से सुबह के वक्त सूरज की किरनें अन्दर प्रवेश करती हैं और इन दोनों चित्रों पर पड़ती हैं। सूरज की रोशनी में ये चित्र ऐसे मालूम होते हैं जैसे इन पर सोने का पानी चढ़ा दिया गया हो।

देवालय के बीच में संगमरमर का एक गोल पत्थर है। इसके चारों तरफ प्राचीन शैली के चित्र अंकित हैं। इनमें से कुछ चित्र जले हुए खून के धब्बों में छिप गये हैं। खून के ये धब्बे ज़ाहिर करते हैं कि प्राचीन काल में लोग इस वेदी पर बलि चढ़ाते, शराब और घी की धारा देते और इत्र छिड़कते थे।

इस देवालय के भीतर आत्माओं को आलिंगन करने वाली खामोशी थी। वहां वह जादूपूर्ण तेज था जो जोश पैदा करके ईश्वरीय रहस्यों को प्रकट करता है। वहाँ वह मौन भाषा थी जो बेजबानी में बीती हुई शताब्दियों की कहानी, और कौमों के एक अवस्था से दूसरी अवस्था और एक धर्मसे दूसरे धर्म की तरफ जाने की कहानी सुनाता है। इनके सिवा वहां कुछ न था। वह उसी जादूपूर्ण तेज का चमत्कार है जो कवि को इस संसार से दूर एक दूसरे संसार में पहुंचा देता है, और दार्शनिक को इस सचाई का विश्वास करा देता है कि आदमी एक धार्मिक जीव है जो अनदेखी चीजों को अनुभव करता है और अनहुई बातों का कल्पना करता है। वह अपनी समझ के लिए ऐसे अलंकारिक चित्र और मूर्ति बनाता है जो अपने आशय की दृष्टि से इसके द्वारा अपने हृदयके रहस्यों को प्रकट करते हैं। वह अपने विचारों को उन लेखों, गीतों, चित्रों और उपमाओं के द्वारा मूर्तिमान करता है, जो बाहरी दृष्टि से जीवन में इसकी सबसे बड़ी तमन्नाओं और मौतके बाद उसकी सर्वश्रेष्ठ इच्छाओं

को जाहिर करते हैं।

इस अज्ञात देवालय में मैं सलमा से महीने में एक बार मुलाकात करता था। हमारा अधिक समय इन ही दोनों अनोखे चित्रों को देखने में गुजरता था। हम कभी महात्मा ईसा को सूली पर चढ़ाए जाने के बारे में सोच-विचार करते, कभी उन नौजवान लड़के-लड़कियों को याद ताजा करते जिन्होंने अपना जीवन प्रेम और रूप की पूजा में लगा दिया और जो अशरूत देवी की मूर्तियों के सामने अगरबत्ती और धूप जलाते और बलि-वेदियों पर इत्र छिड़कते थे, यहां तक कि जमीन ने उन्हें अपने में समा लिया और दुनिया में उनका केवल नाम ही नाम रह गया।

मेरे लिए उन सूक्ष्म क्षणों के संस्मरणों को लेखबद्ध करना कितना कठिन है जो मैंने सलमा के साथ देवालय में गुजारे हैं। ये पवित्र क्षण सुख-दुख, हर्ष-शोक और आशा-निराशा से घिरे थे जो आदमी के जीवन को एक अमर पहेली बना देते हैं। आह! मेरे लिए कितना कठिन है कि मैं उन क्षणों को याद करूं जबकि उनका कोई ख्याली अंश भी वाणी के द्वारा बयान नहीं किया जा सकता, जो प्रेम और ग़म के पुजारियों के लिए उदाहरण का काम दे सके।

हम दोनों उस प्राचीन देवालय के एकांत में मुलाकात करते, उसके दरवाजे पर दीवार के सहारे बैठकर बीती हुई प्यारी और मधुर बातों को याद करते, आधुनिक घटनाओं पर गहरा विचार करते और भविष्य की भीषणताओं और दुखों की कल्पना मात्र से रोमाञ्चित हो जाते।

आहिस्ता-आहिस्ता बातचीत आध्यात्मिक चर्चा पर आ जाती। हम दोनों अपने दिल की बेचैनी, जलन, निराशा और कमियों की शिकायत करते। इसके बाद अपनी आशाओं के सुन्दर चित्रों और हास्योत्पादक अंधविश्वासों को एक दूसरे के सामने विस्तार से बयान करके उसे संतोष करने का उपदेश देते थे। इससे मुसीबत की अनुभूति जाती रहती, आंसू सूख जाते, चेहरों पर आनंद की लहर दौड़ जाती और हम

मुसकराने लगते। प्रेम और उसके आनंदों के सिवा हर चीज़ हमारे ध्यान से जाती रहती। आत्मा और उसकी प्रवृत्तियों के सिवा दुनिया की हर बात से हम आंखें बंद कर लेते। अपने आपको भूलकर हम एक दूसरे को गले मिलते। तब प्रेम और आसक्ति का अथाह भाव हम पर छा जाता। इसके बाद सलमा शौक़ और पवित्रता के प्रभाव में मेरे माथे को चूमकर मेरे दिल को प्रेम के प्रकाश से रोशन कर देती। उत्तर में मैं भी उसकी गोरी-गोरी नरम-नरम अंगुलियों को चूमता जिसके असर से उसकी आंखें बंद हो जातीं, हाथी-दांत के समान सुन्दर और कोमल उसकी गर्दन आगे को झुक जाती और कपोलों पर हलकी-सी लाली प्रकट हो जाती; जैसे सूरज की पहली किरनें पहाड़ों की चोटियों पर प्रातःकाल की रानी से भेंट करती हों। अंत में हम बिलकुल चुप हो जाते और दूर क्षितिज की तरफ देखने लगते, जहाँ पश्चिम की लाल रोशनी में रंगीन बादल तैरते दिखाई देते हैं।

हमारी यह भेंटें केवल गिला-शिकवा और विचार-विनिमय तक सीमित न थीं बल्कि हम अनजान तौर पर साधारण विषयों पर भी बातचीत करने लगते। इस निराली दुनिया की घटनाओं पर हम बहस करते और उन पुस्तकों के गुण दोषों पर प्रकाश डालते जो हमारे पढ़ने में आतीं। यही नहीं बल्कि उन पुस्तकों के ख्याली चित्रों और उनमें बयान किये हुए सिद्धांतों के बारे में भी अपनी-अपनी सम्मति जाहिर करते। सलमा अक्सर स्त्री की सामाजिक स्थिति, उसके आचार-विचार और प्रवृतियों पर गुजरे हुए ज़माने के प्रभाव और मौजूदा ज़माने के वैवाहिक सम्बंधों और उनकी कमज़ोरियों, त्रुटियों और बुराइयों पर बात करती। मुझे याद है एक बार उसने कहा था—

"कवि और साहित्यकार चाहते हैं कि स्त्री की हकीकत मालूम करें, पर वह अभी उसके दिल की बातों और सीने के रहस्यों को नहीं पा सके। इसका कारण यह है कि वह उसे अपनी इच्छाओं की कसौटी पर जांचते हैं और उन्हें स्त्री के शरीर के सिवा कुछ नज़र नहीं आता। फिर वह उसे

घृणा और तिरस्कार की निगाह से देखते हैं जिसकी वजह से वह उसमें आज्ञापालन और कमज़ोरी के सिवा और कुछ नहीं पाते।"

देवालय की दीवारों पर अंकित चित्रों की तरफ़ अपने हाथ से इशारा करते हुए एक बार उसने मुझसे कहा था—

"जो नक्श ज़माने ने इस चट्टान पर खोदे हैं वह स्त्री के मनोभावों का खुलासा और उसकी उस आत्मा की कमलताओं और बारीकियों को प्रकट करने वाले हैं जो प्रेम, ग़म, शोक और त्याग और गद्दी पर बैठी प्रेम की देवी और सूली के सामने खड़ी हुई मरियम के बीच में चलती फिरती है।

"आह, कितनी विचित्र और किस क़द्र कड़वी है यह सचाई कि महत्ता, बड़ाई, प्रसिद्धि और नामवरी तो मर्द प्राप्त करें और उनका मूल्य स्त्री को चुकाना पड़े!"

हमारी इन गुप्त मुलाकातों का ज्ञान परमात्मा और उस देवालय में उड़ने वाले पक्षियों के झुंड के सिवा और किसीको न था। सलमा शाही बाग तक अपनी गाड़ी में आती और वहाँ से पैदल सुनसान निर्जन रास्तों को तय करती हुई निश्चित स्थान तक पहुंचती। वह जब अपनी छतरी के सहारे तसल्ली और बेफ़िक्री के साथ देवालय के दरवाजे में दाखिल होती तो मुझे अपने आने का इन्तजार करते पाती।

हमें न मन्सूर की निगाहों का डर था और न अपने अन्तःकरण के तिरस्कारों का ख्याल, क्योंकि जिस आत्मा ने ग़म के आँसुओं से पान करके पवित्र आग के सामने सिर झुकाकर नमस्कार किया हो वह समाज की कल्पित बदनामी से ऊंची हो जाती है। वह उन रीति-रिवाजों की गुलामी से छुटकारा पाकर परमात्मा के दरबार में आबरू के साथ सिर ऊंचा करके खड़ी होती है, जो लकीर के फकीर रूढ़िवादियों ने आदमी के दिल, मनोभावों और प्रवृत्तियों को जकड़ने के लिए बनाए हैं।

समाज सात हजार वर्ष से त्रुटिपूर्ण और निकम्मे कानूनों और

बन्धनों की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। इसलिए वह पवित्र अनादि और अनन्त प्रकृति के नियमों की हकीकत को समझने में असमर्थ है। आदमी की दृष्टि को टिमटिमाते दीपकों को देखने की आदत है, इसलिए वह सूर्य के चमचमाते प्रकाश को नहीं देख सकता। जमाने ने आत्मा की विभिन्न बीमारियों और दुर्बलताओं को एक आदमी से दूसरे आदमी को पहुँचाया है, यहां तक कि वह इन्सानी गुणों का अनिवार्य अंश हो गई हैं। इसलिए आदमी उन्हें बीमारियाँ और दुर्बलताएं नहीं, अपनी स्वाभाविक विशेषताएं समझता है। यदि कोई दूसरा आदमी उसे इन फर्ज़ी स्वाभाविक विशेषताओं से खाली नज़र आता है तो वह यह अनुमान करता है कि वह त्रुटिपूर्ण है और आध्यात्मिक महानताओं से कोरा है।

इसलिए जो लोग इस बात पर सलमा पर दोष लगाएं कि वह अपने पति से छिपकर एक पर-पुरुष से एकान्त में मिलती थी तो वह उन बीमार और कमजोर लोगों में से हैं जो निर्दोषों को अपराधी समझते हैं और आदरणीय आदमियों को बागी समझते हैं। उनकी गिनती तो जमीन के उन कीड़े-मकड़ों में है जो अन्धेरे में रींगते हैं और जो दिन की रोशनी में निकलते हुए इसलिए डरते हैं कि कहीं आने-जाने वालों के कदम उनको कुचल न दें।

जो कैदी कैदखाने को दीवारों को ढा सकता हो पर न ढाये वह वास्तव में कायर, बुज़दिल और डरपोक है। लेकिन सलमा तो उन अत्याचार से पीड़ित कैदियों में से थी जो अपने प्रयत्नों से भी आजाद नहीं हो सकते। फिर उसे कैदखाने की दीवारों के सूराखों में से हरे-भरे खेतों और खुले संसार को देखने पर कैसे रभला-बुा कहा जा सकता है, और दोषी ठहराया जा सकता है? क्या लोग केवल इसलिए उसे बेईमान समझेंगे कि वह अपने पति के घर से निकलकर पूज्या अशरुत देवी और महाप्रभु ईसा के बीच मेरे पहलू में बैठती थी?

दुनिया जो चाहे कहे, पर सलमा उन तमाम चौबच्चों से गुजर कर

जहाँ आत्माएं पड़ी रींग रही हैं, उस दुनिया में पहुंच गई थी जहाँ भेड़ियों की चीख-पुकार और अजगर साँपों की फुंकार नहीं पहुंचती।

रह गया मैं, तो मुझे भी संसार में किसीके कहने-सुनने की कुछ पर-वाह नहीं, क्योंकि मौतसे डटकर दो चार होने वाला आदमी बदमाशों और डाकुओं से नहीं डरता। और जिस सिपाही के सिर पर तलवारें साया कर रही हों और जिसके पांव-तले खून की नदियां बह रही हों वह गली के लड़कों के पत्थर मारने की चिन्ता नहीं करता।

: १० :

त्याग

जून की आखिरी तारीखें थीं। समुद्र-तट के पास के इलाकों में निहायत सख्त गर्मी पड़ रही थी। लोग पहाड़ों पर जा चुके थे। मैं अपनी आदत के अनुसार दिल में सलमा से भेंट की इच्छा लिये गिरजाघर की तरफ गया। मेरे हाथ में कविताओं का एक संग्रह था जो आज भी मेरी आत्मा को इसी तरह गरमाता है जैसे उस जमाने में गरमाता था।

मैं देवालय में शामके समय पहुँचा। और बेंत और नींबू से छिपी हुई सड़क के एक किनारे बैठकर उन कविताओं के छंद गुनगुनाने लगा जो अपनी रचना, चुस्ती और गायन-ध्वनि से दिल को लुभाती हैं। मेरे मस्तिष्क में उन बड़े-बड़े बादशाहों, कवियों और घुड़सवारों की याद ताजा हो रही थी जो अपनी सब इच्छाओं और कामनाओं को शाम देश के बड़े-बड़े शहरों के महलों, बागों और दिल बहलाने की दूसरी जगहों में छोड़कर संसार से विदा हो गए थे, और अपनी आंखों में आंसुओं का तूफान और दिलों में आश्चर्य का संसार लिये जमाने के परदे में छिप गए थे।

थोड़ी देर के बाद मैंने घूमकर देखा तो सलमा छायादार वृक्षों में से आती हुई नजर आई। वह छतरी के सहारे मेरी तरफ इस तरह आ रही थी मानो सारी दुनिया की फिक्रों और कष्टों का बोझ उस पर ही है। जब वह देवालय के द्वार पर पहुंचकर मेरे पास बैठ गई तो मैंने उसकी बड़ी बड़ी आंखों की तरफ निगाह की। मैंने देखा कि निगाहों में कुछ विचित्र और नये रहस्य और अर्थ हैं, जिनमें चेतावनी और संयम का सन्देश भी है और खोज और आकर्षण का निमंत्रण भी।

सलमा मेरे मन की हालत को समझ गई। उसे यह सहन न हुआ कि मेरे शकों और मनोभावों के बीच जो संघर्ष पैदा हो गया है वह लम्बा हो। उसने मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, "मेरे करीब आओ, मेरे प्यारे! मेरे करीब आओ। आह! वह घड़ी अब सिर पर आ पहुँची है जो हमें सदा के लिए एक दूसरे से जुदा कर देगी।"

बेताब होकर मैंने पूछा, "सलमा, तुम क्या कह रही हो? तुम्हारा क्या मतलब है? वह कौनसी ताक़त है जो हमें सदा के लिए एक दूसरे से जुदा कर देगी?"

उसने उत्तर दिया, "वह अंधी ताकत हमें आज फिर एक दूसरे से अलग करेगी जिसने कल हमें एक दूसरे से जुदा किया था। उस गूंगी शक्ति ने एक आदमी के हाथों मेरे और तुम्हारे बीच एक दीवार खड़ी कर दी है। इसके रूप मनुष्य के बनाए हुए कानून हैं। जो शक्ति शैतानों को पैदा करती है और उन्हें इन्सानों का रक्षक बनाती है उसने मुझ पर पाबंदी लगाई है कि मैं उस मकान से बाहर न निकलूं, जो हड्डियों और मुर्दा खोपड़ियों से बनाया गया है।"

मैंने प्रश्न किया, "क्या तुम्हारे पति को हमारी मुलाकात का ज्ञान हो गया है? क्या तुम उसके प्रकोप और बदले से डर रही हो?"

उसने कहा, "मेरा पति मेरी बिलकुल परवाह नहीं करता। उसे कुछ मालूम नहीं कि मैं किस तरह जिन्दगी गुजार रही हूं। वह मेरी तरफ से गाफिल है और अपना समय उन दुख की मारी लड़कियों में गुजारता है जिनकी गरीबी और मोहताजी ने उन्हें अपनी आबरू बेचने के बाजार में पहुंचा दिया है, और जो खून और आंसुओं से गुंदी हुई रोटी के बदले अपने बने-सँवरे शरीर को बेचती हैं।"

मैंने कहा, "फिर तुम्हें इस गिरजे में आने और दैवी प्रकाश के सामने मेरे पहलू में बैठने से कौन रोकता है? क्या तुम्हारी निगाह मेरे आत्मिक रहस्यों को देखने से उकता गई है जो तुम्हारी आत्मा मेरे से जुदाई की इच्छुक है?"

आंखों में आंसू भरकर उसने उत्तर दिया, "नहीं, मेरे प्यारे! मेरी आत्मा तुमसे जुदा होना नहीं चाहती क्योंकि तुम इसका एक अंग हो। मेरी आंखें तुम्हें देखने से उकताई नहीं हैं क्योंकि तुम उनकी ज्योति हो। परन्तु यदि परमात्मा की इच्छा यही हो कि मैं जंजीरों से जकड़ी हुई जिन्दगी के रास्तों पर चलूँ तो यह मैं कैसे सहन कर सकती हूं कि दम घोटने वाले इस वातावरण में तुम भी मेरे साथी हो?"

मैंने कहा, "मैं ये बातें नहीं समझ सकता। परमात्मा के लिए तुम्हें जो कुछ कहना है साफ-साफ कहो।"

सलमा ने उत्तर दिया, "मेरे लिए असम्भव है कि मैं तुम्हें सब बातें साफ-साफ बता दूं क्योंकि दर्द और ग़म के कारण बंद जबान खुलकर नहीं कह सकती और जिन होंठों पर निराशा की मुहर लग गई हो हिल नहीं सकते। मैं तुमसे इतना कह सकती हूँ कि मुझे डर है कि कहीं तुम उस जाल में न फंस जाओ जो लोगों ने मेरा शिकार करने के लिए बिछाया है।"

मैंने पूछा, "सलमा, तुम्हारा मतलब क्या है? वे लोग कौन हैं जिनके बारे में तुम्हें डर है कि वह मुझे कोई हानि पहुचाएं?"

उसने अपने सुन्दर चेहरे को हाथों से छिपा लिया। वह शोक और प्रेम से भरी हुई एक सांस खींचकर कहने लगी, "पादरी को मालूम होगया है कि मैं महीने में एक दिन उस घर से निकलती हूँ जहाँ उसने मुझे कैद कर रखा है।"

मैंने चौंककर पूछा, "क्या उसे यह मालूम हो गया है कि तुम मुझसे इस स्थान पर मिलती हो?"

उसने जवाब दिया, "अगर उसे यह मालूम हो जाता तो मुझे इस वक्त तुम अपने पहलू में न देखते, लेकिन उसे मेरे सम्बन्ध में शक हो गया है, और उसके दिल में सन्देह पैदा हो गए हैं। उसने कुछ आदमी मेरे लिए नियत कर दिए हैं और अपने नौकरों को आज्ञा दे दी है कि मेरी गति की निगरानी करे। यहाँ तक कि मुझे ऐसा अनुभव

होने लगा है कि उसके रहने के मकान और मेरे चलने-फिरने के रास्तों की आंखें हैं जो मुझे ध्यान से देखती हैं, उनके हाथ हैं जो मेरी तरफ इशारा करते हैं, और उनके कान हैं जो मेरे विचारों की कानाफूसी सुनते हैं।"

सलमा खामोश हो गई। आंसू उसके गालों पर बह रहे थे। थोड़ी देर बाद उसने कहा—

"मुझे अपने बारे में पादरी से कोई डर नहीं है क्योंकि डूबने वाला लहरों की थपेड़ों से नहीं डरता। लेकिन मुझे डर है कि सूरज के प्रकाश की तरह जो तुम आजाद हो कहीं मेरी तरह उसके जाल में न फंस जाओ और वह तुम्हें अपने पंजों में दबोचकर कहीं फाड़ न खाये। मुझे जमाने का भी डर नहीं है इसलिए कि उसने सारे तीर मेरी छाती में मारे हैं। लेकिन मुझे डर है कि उम्र के इस अच्छे काल में कहीं सांप तुम्हारे पांव में डंक न मारे, और कहीं तुम पहाड़ की उस चोटी पर पहुंचने से न रह जाओ जहाँ भविष्य अपने सुखों और बड़ाइयों सहित तुम्हारी राह देख रहा है।"

मैंने कहा, "जिसे जमाने के साँप नहीं डसते और जो भेड़ियों का शिकार नहीं होता वह हमेशा भटकता रहता है। लेकिन सलमा, सुनो! और गौर से सुनो! क्या जुदाई के सिवा हमारे लिए और कोई रास्ता नहीं है जो हमें लोगों के कमीनेपन, दुष्टता और झगड़ों से बचा रखे? क्या हमारे लिए प्रेम, जिन्दगी और आजादी के सब रास्ते इतने बन्द हो गए हैं कि हमें जल्लादों की मर्जी के सामने सिर झुकाने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नजर नहीं आये?"

दुख और निराशा के स्वर में उसने उत्तर दिया, "आह! जुदाई के सिवा अब कोई उपाय नहीं है।"

मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। मेरे मस्तिष्क में विद्रोही विचार जाग उठे थे और मेरी नौजवानी की आग से धुंआ उठने लगा था। आवेश-पूर्ण आवाज में मैंने कहा—

"सलमा, हमारा सिर बहुत दिन से दुनिया की अनुचित इच्छाओं के सामने झुका हुआ है, उस वक्त से लेकर जब हम एक दूसरे से परिचित हुए थे। आज तक हम उसके बन्धनों को सहन करते रहे हैं। हम मुद्दतों से अंधों के चरण-चिन्हों पर चलते रहे हैं, और उनकी बनाई हुई मूर्तियों की पूजा करते रहे हैं। हम पादरी के हाथ की दो गेंदें हैं जिनसे वह जिस तरह चाहता है खेलता है और जहां चाहे फेंकता है। तो क्या फिर भी हम उसके सामने आज्ञा से सिर झुकाए रखें? क्या हम उसके मन के अंधेरे को गौर से देखते रहें? क्या हम उसके द्वारा अपने को कब्र में सुला दिये जाने दें और क्या हम मिट्टी में मिल जायं? क्या परमात्मा ने हमें जिन्दगी इसलिए दी है कि हम उसे मौत के क़दमों में डाल दें? क्या उसने हमें आजादी इसलिए दी है कि हम उसे गुलामी के लिए छाया बना लें? सलमा अपने हाथों अपने मन की, आग बुझाना दूसरे शब्दों में उस शक्ति से इन्कार करना है जिसने वह आग हमारे मन में रोशन की है। अपने हक़ के मारे जाने पर संतोष करके अन्याय के विरुद्ध बगावत न करना मानो सत्य के विरुद्ध झूठ का साथ देना है, और निर्दोषों के कत्ल में जालिमों की मदद करना है। सलमा! मैं तुमसे प्रेम करता हूं और तुम मुझसे प्रेम करती हो। प्रेम एक बड़ा भारी खजाना है जो परमात्मा की तरफ से भावुक और महान् आत्माओं को मिलता है। तो क्या हम अपने इस ख़ज़ाने को सूअरों के झुण्ड में फेंक दें ताकि वह उसे अपनी थूथनियों से उलट-पलट करके अपने पाँवों में रौंद डालें? हमारे सामने सुन्दर और आश्चर्यजनक दुनिया और उसके लम्बे चौड़े पवित्र स्थान हैं, फिर किस तरह हम इस तंग और अंधेरी सुरंग में पड़े रहें जो पादरी और उसके साथियों ने खोदी है? हमारे सामने जिन्दगी और उसकी आजादियां हैं और आजादी और उसके आनन्द हैं। फिर क्यों न हम अपनी गर्दन पर से भारी जुए को उतार फेंकें और क्यों न हम अपने पैरों में पड़ी हुई बेड़ियों को तोड़कर उस स्थान पर चले जायं, जहाँ हर तरफ

सुख-ही-सुख है ? सलमा ! उठो हम इस छोटे-से गिरजाघर से परमात्मा के सर्वश्रेष्ठ गिरजाघर में चलें। आओ, हम इन शहरों और इनके अज्ञान और गुलामी को छोड़कर उन दूर स्वप्नों की तरफ कूच कर जायं, जहाँ न डाकुओं के अत्याचारों का डर है और न शैतान के छल-धोखे का। आओ, रात के अंधेरे में छिपकर समुद्र-तट पर भाग चलें और किश्ती में सवार होकर पार पहुँच जायं। वहाँ हम एक ऐसी नई जिन्दगी—प्रेम और पवित्रता की जिन्दगी—व्यतीत करेंगे, जो साँपों की फुंकारों और हिंस्र जीवों की मार से बिलकुल सुरक्षित होगी। सलमा! यह सोचने का समय नहीं है। ऐसा न हो कि ये क्षण जो बादशाहों के ताज से अधिक कीमती और देवताओं की विचार सूक्ष्मता से अधिक सूक्ष्म हैं, हमारे हाथ से निकल जायं। उठो ! प्रेम के प्रकाश में हम इस निर्जल घास-रहित सहरा से निकल कर हरे-भरे बागों में चलें।"

सलमा ने सिर उठाया और गिरजाघर के वायुमंडल में किसी अदृश्य वस्तु पर अपनी निगाहें जमा दीं। उसके होंठों पर दुख-भरी मुसकराहट प्रकट हुई जो उसकी आत्मिक चिन्ता और दुख का प्रतिबिम्ब थी। संतोष भरे स्वर में उसने कहा—

"नहीं, मेरे प्यारे। यह कभी नहीं हो सकता। परमात्मा ने मुझे जहर का प्याला प्रदान किया था। उसे मैंने घूंट-घूंट करके पिया। इस प्याले में अब सिर्फ कुछ बूंदें बाकी हैं और मैं चाहती हूँ कि उन्हें भी अत्यन्त संतोष और धैर्य के साथ गले से नीचे उतार लूं। इससे मुझ पर वे सब रहस्य प्रकट हो जायंगे, जो इस प्याले की तह में छिपे हैं। मैं उस नए और पवित्र जीवन के योग्य नहीं हूँ, जो सुख संतोष और प्रेम का घर है। न मुझमें इतनी खामोशी है कि इसके आनन्द और सुखों को सहन कर सकूं। एक पर-टूटा पक्षी भूमि पर रींग सकता है, आकाश में उड़ नहीं सकता। चुंधियाई हुई आँखें प्रकाशहीन वस्तु पर जम सकती हैं, सूर्य के प्रकाश की ताब नहीं सह सकतीं। परमात्मा के

लिए मेरे सामने नेकी और उद्देश्य-सिद्धि की बातें न करो। इनसे मुझे कष्ट पहुँचता है, ठीक उसी तरह जैसे असफलता और निराशा की कहानी दुख का कारण होती है। मेरे सामने भोग-विलास और सुख की तस्वीर न खींचो। मुझे इससे डर लगता है, बिलकुल उसी तरह जैसे रंज और मुसीबत की कल्पना डर पैदा करती है। मैं तो इसीमें खुश हूँ कि तुम्हारे प्रेम की उस पवित्र आग की लपट को हवा दिये जाऊं, जो परमात्मा ने मेरे दिल की राख में जलाई है।

"तुम जानते हो कि मैं तुमसे इस तरह प्रेम करती हूं जिस तरह माँ अपने इकलौते बच्चे से प्यार करती है। यही प्रेम है जिसने मुझे बताया कि मैं आखिरी दम तक तुम्हारी रक्षा करूं। हाँ, यही वह पवित्र प्रेम है जो मुझे इस वक्त तुम्हारे साथ भागने से रोक रहा है। यही मुझे विवश कर रहा है कि मैं अपने हाथों से अपनी तमाम इच्छाओं और कामनाओं का गला घोट दूँ, केवल इसलिए कि तुम दुनिया की धिक्कार-फटकार से बचे रहकर सम्मान और आजादी के साथ जीवन व्यतीत करो।

"वह प्रेम सीमित है जो अपने प्यार को अपने वश में करना चाहता है। पर जो प्रेम जमाने और दुनिया की कैद से आजाद है वह अपने प्यारे की देह के सिवा और कुछ नहीं चाहता।

वह" प्रेम जो जवानी की भूल और होशियारी के बीच में पैदा होता है, अपने प्यारे के दर्शन तथा मिलन से तृप्त हो जाता है; और चुम्बन के माधुर्य और आलिंगनों के सुख से वृद्धि पाता है। लेकिन वह प्रेम जो परमात्मा की गोद में फलता-फूलता है, सदा संतुष्ट हुए बिना रहता है; और परमात्मा के सिवा किसी दूसरी शक्ति से नहीं डरता।

"कल जब मुझे यह मालूम हुआ कि पादरी निहायत सख्ती के साथ मेरी देखभाल कर रहा है और चाहता है कि अनेक प्रकार की पाबन्दियां लगाकर मुझे इस अकेले सुख से भी वंचित कर दे जो विवाह के बाद मेरे लिए बाकी रह गया है, तो मैं अपने कमरे की खिड़की के

पास खड़ी हो गई और समुद्र का दृश्य देखने लगी। इस समय मेरा मस्तक संस्कृति और सभ्यता के आज्ञापालन और व्यक्तिगत और आंतरिक स्वाधीनता पर विचार कर रहा था।

"मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि मेरा मन तुम्हारे पहलू में है। उसे तुम्हारी कल्पनाओं ने घेर रखा है और वह तुम्हारे प्रेम में मग्न है। लेकिन मेरा मस्तक उन मधुर विचारों से खाली था जो अत्याचार से पीड़ित स्त्रियों के हृदयों को प्रभावित करते हैं और जो सत्य और स्वतंत्रता की छाया में जिन्दगी गुज़ार करने के लिए उन्हें निरर्थक रिवाजों के विरुद्ध विद्रोह का पाठ पढ़ाते हैं। यहाँ तक कि मुझे अपने मन से घृणा हो गई और मैं उसे बेहकीकत समझने लगी। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि हमारा प्रेम त्रुटिपूर्ण और सीमित है, और जमाने का मुकाबला करने में असमर्थ है। मैं ऐसे रोने लगी जैसे किसी राजा का राज्य छिन गया हो और किसी धनवान के खज़ाने लूट लिये गए हों। लेकिन थोड़ी देर के पीछे मुझे अपने आँसुओं में तुम्हारा चेहरा दिखाई दिया। मैंने देखा कि तुम मुझे गौर से देख रहे हो। मुझे याद आ गया कि एकबार तुमने मुझसे कहा था—'आओ सलमा! हम शत्रुओं के मुकाबले पर डट जायं और उनके वार अपनी छाती पर रोकें। अगर इस लड़ाई में हमें हार हुई तो हम शहीदों की मौत मरेंगे और अगर हम जीत गए तो हमारा जीवन विजयी लोगों का-सा जीवन होगा। दुख-मुसीबतों का मुकाबला करने से जो कष्ट आत्मा को पहुँचता है, वह हार जाने की शांति और संतोष से कहीं अधिक बड़ा और अच्छा है।'—ये शब्द तुम्हारी ज़बान से उस समय निकले थे जब मौत का फ़िरश्ता पिता के बिस्तर के गिर्द अपने बाजू फड़फड़ा रहा था। ये शब्द मुझे कल उस समय याद आये जब निराशा मेरे सिर पर मंडरा रही थी। तुम्हारे इन शब्दों से मेरी ढारस बंधी, मेरा साहस बढ़ा और कैदखाने के अंधेरे में मैंने अपने अंतरंग में आत्मिक स्वाधीनता की एक ऐसी हालत अनुभव की जो कष्टों और दुखों का मज़ाक उड़ाती है और दर्द और रंज को तुच्छ

समझती है। मैंने एक कुआं देखा, जो समुद्र से अधिक गहरा, तारों से अधिक ऊँचा और आकाश से ज्यादा लम्बा-चौड़ा था।

"आज मैं अपनी दुर्बल और दुखी आत्मा में एक नई शक्ति लेकर आई हूं। और वह सबसे बड़े उद्देश्य के लिए एक महान् वस्तु—मेरी उद्देश्य सिद्धि—का त्याग है जिससे तुम संसार में सम्मान के साथ ऊँचा सिर करके ज़िन्दगी गुज़ारो और लोगों की बेवफाइयां और दुर्व्यवहार तुम्हें कोई कष्ट न पहुँचायें।

"कल तक मैं यहाँ आती थी तो भारी जंजीरें मेरे कमज़ोर पावों में जड़ी रहती थीं। लेकिन आज मैं ऐसे इरादे की अनुभूति लेकर आई हूँ जो जंजीरों के भारीपन की हँसी उड़ाता है और मुसीबतों की राहों को अपने लिए नाकाफी समझता है।

"पहले मैं प्रभात के तारे की तरह कांपती आती थी, परन्तु आज मैं उस साहसी स्त्री की तरह बेखटके आई हूं जो त्याग की आवश्यकता और महत्व को समझती है, जो दुख-दर्द का मूल्य जानती है और जो चाहती है कि अपने प्रिय को मूर्ख लोगों और अपनी कामलोलुप-इच्छा से बचाये।

"कल तक मैं तुम्हारे सामने कांपती हुई छाया की तरह बैठती थी, लेकिन आज मैं देवी अशरूत और पूज्य ईसा मसीह के सामने तुम्हें अपनी हकीकत बताने आई हूं। मैं एक वृक्ष हूं जो छाँह में फला-फूला है। लेकिन आज मेरी टहनियाँ दिन के प्रकाश में लहलहाने के लिए फैल गई हैं।

"मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विदा करने आई हूँ और चाहती हूं कि यह जुदाई हमारे प्रेम की तरह महत्तापूर्ण और कष्टों को पसन्द करने वाली हो जाय। यह जुदाई वह आग बन जाय, जो सोने को तपाकर कुंदन बना देती है।"

सलमा ने मेरे लिए आगे बातचीत, युक्ति और वाद-विवाद की गुंजाइश बाकी न रखी। वरन् जब उसने मुझे देखा तो उसकी आंखों में एक ऐसी चमक पैदा हुई जिसने मेरी तन्मयता को घेर लिया। उसके

चेहरे पर बड़ाई और तेज चमकने लगा और वह एक देवी मालूम होने लगी, जिसके दर्शन नम्र और मौन भक्तों के सिवा और किसी दूसरे आदमी को प्राप्त नहीं होते। इसके बाद वह मेरी छाती पर गिर पड़ी। अपनी गोरी-गोरी कलाइयां उसने मेरी गर्दन में डाल दीं। उसने मेरे होंठों को ऐसा चुम्बन दिया जिसने मेरे शरीर में जीवन की अनुभूति को जगा दिया और मेरी आत्मा के गुप्त रहस्यों को प्रकट कर दिया। उसने मेरे अंतरंग को संसार के विरुद्ध बगावत करने पर त्याग कर दिया, जिससे वह आदर और शान्ति के साथ उस परमात्मा के सामने अपनी भेंट चढ़ाए, जिसने सलमा की छाती को क़िला और उसकी आत्मा को बलिवेदी बना दिया था।

जब सूर्य डूबा और उसकी अंतिम किरनें भी इमारतों और बागों से रुखसत हो गईं तो सलमा मेरे पास से हटकर गिरजाघर के बीच में जा खड़ी हुई। वह उसकी दीवारों और कोनों को देर तक देखती रही, मानो उन सांकेतिक चित्रों पर अपनी आँखों की रोशनी बिखेर देना चाहती हो। इसके बाद उसने कुछ कदम आगे बढ़ाये और ईसा प्रभु के चित्र के सामने नम्रता और विनती के तौर पर गिर पड़ी। उसने चित्र के घायल पांवों को बार-बार चूमा और वह धीरे-धीरे कहने लगी—

"हे प्रभो! मैंने सुख की देवी और उसकी सुखपूर्ण गोदी को छोड़-कर आपकी सूली को पसन्द कर लिया है। मैं फूलों के बदले कांटों का ताज अपने सिर पर रखने के लिए तय्यार हूं। मैं इत्र और सुगंधों की जगह अपने खून और आंसुओं में नहा सकती हूँ, और बहिश्त की शराब के इस प्याले में जहर के घूंट पीने पर तय्यार हूं। इसलिए आप मुझे अपने उन भक्तों में शामिल कर लें जिनकी दुर्बलताएं ही उनकी शक्ति हैं। मुझे अपने उन प्यारों के साथ परमात्मा के दरबार में पहुँचा दें जो अपनी कमियों पर संतुष्ट और अपनी दुख-चिंता से सुखी हैं।"

इसके बाद वह खड़ी हो गई और मेरी तरफ ध्यान देकर कहने लगी—

"मैं उस अँधेरे गढ़े की तरफ खुशी-खुशी वापस जा रही हूँ जहां भयंकर परछाइयां रींग रही हैं। मेरे प्यारे ! मुझ पर तरस न खाना, न मेरा शोक करना, क्योंकि जो आत्मा एक बार परमात्मा के प्रकाश को देख चुकी है वह शैतानों की छाया से नहीं डरती। जिस आंख ने एक क्षण के लिए भी परमात्मा के पवित्र मन्दिर का मिट्टी रूपी सुरमा अपनी आंखों में लगा लिया हो, वह दुनिया की दुख-तकलीफ़ से बन्द नहीं होती।"

सलमा अपने रेशमी वस्त्रों में लिपटी हुई उस गिरजाघर से चली गई और मुझे चकित और चिंतित छोड़ गई। मैं उन कल्पित हरे मैदानों में मग्न था जहां देवता अपने सिंहासन पर विराजमान होते हैं और फ़रिश्ते मनुष्य के कर्मों का लेखा तय्यार करते हैं; जहां आत्माएं जीवन की कहानी पढ़ती हैं और कल्पना की परियां प्रेम-ग़म और अमरत्व के गीत गाती हैं।

मैं इस नशे से चौंका तो रात की काली लहरों को जीवन-सागर में तरंगे मारते पाया। मैंने देखा कि मैं कुछ खोया-खोया-सा हूँ। सलमा की जबान से निकले शब्द मेरे मस्तक में एक-एक करके गूंज रहे थे और मैं उसकी चाल-ढाल, अंग-उपांग और उसके कोमल-कोमल हाथों के मधुर स्पर्श की याद से दिल-ही-दिल में आनन्द ले रहा हूँ। जब मुझे अपनी और सलमा की इस जुदाई और जुदाई के बाद के एकान्त के ग़म और शोक की कटुता की हकीकत मालूम हुई, तो मेरी विचार-शक्ति गतिहीन हो गई और मेरे दिल की रगें ढीली पड़ गईं। मुझे पहली बार मालूम हुआ कि यद्यपि मनुष्य स्वभाव से स्वतन्त्र है तो भी वह अपने पुरखाओं के बनाए हुए नियमों की कठोरता का सारी उम्र शिकार रहता है। और मुझे यह भी मालूम हुआ कि जिस भाग्य को हम परमात्मा को ढाल समझते हैं वह भविष्य के अटल परिणामों के सामने आज की रोक है; और वर्त्तमान की प्रवृत्तियां तथा मन के झुकाव कल के आज्ञापालन के फल हैं।

उस रात से लेकर इस समय तक मैंने कई बार उन मनोवैज्ञानिक नियमों पर विचार किया जिनके आधार पर सलमा ने जिन्दगी के बदले मौत को अपने लिए चुना; जिनके कारण उसने बागियों की नेकी और उद्देश्य-सिद्धि के त्याग की महानता और सज्जनता से सामना किया, जिससे उसे मालूम हो जाय कि इन दोनों में कौन अधिक अच्छा और बड़ा है। पर इस समय तक केवल एक सचाई मेरी समझ में आई है और वह यह है कि आचरण की सुन्दरता और सज्जनता का स्रत सरलता है; और सलमा सरलता, पवित्रता और सुविश्वास की मूर्ति है।

: ११ :

समाप्ति

सलमा के विवाह को पांच वर्ष हो चुके थे लेकिन अब तक उसके यहां कोई बच्चा नहीं हुआ था, जो अपनी मां और अपने बाप के बीच आत्मिक सम्बन्ध पैदा कर दे, और जो उनकी परस्परमें घृणा करने वाली आत्माओं में अपनी मुस्कराहटों से शक्ति पैदा कर दे, जिस तरह सुबह रात के आखिरी और दिन के आरम्भिक हिस्से को मिला देती है।

बाँझ स्त्री दुनिया के हर कोने में तिरस्कार की दृष्टि से देखी जाती है क्योंकि अस्तित्व की भावना बहुत-से पुरुषों को यह यकीन करा देती है कि संतान इनकी जिन्दगी के स्थायित्व का कारण होती है। इसलिए वह चाहते हैं कि अपनी संतान के जरिये जमीन पर स्थायी कब्जा रखें।

एक जड़वादी अपनी बांझ पत्नी को इतनी अप्रियता के साथ देखता है मानो कोई उसके सामने घुल-घुलकर मर रहा है। वह उससे घृणा करता है, यहां तक कि उसे छोड़ देता है। यही नहीं, बल्कि वह चाहता है कि वह शीघ्र-से-शीघ्र मर जाय, मानो वह उसकी धर्मपत्नी नहीं, जान की दुश्मन है।

मंसूर भी क्योंकि ठेठ जड़वादी, फौलाद से ज्यादा पाषाण-हृदय और चकोर से ज्यादा लालची था, इसलिए उसे भी एक बेटे की कामना थी जो उसके बाद उसके धन और सम्मान का उत्तराधिकारी बने। और क्योंकि बेचारी सलमा उसकी कामना को पूरा करने में असमर्थ थी, इसलिए वह उसे घृणा की दृष्टि से देखता और उसके गुणों को बुराइयों से भी अधिक बुरा समझता था।

गुफा में फलने-फूलने वाला वृक्ष फल नहीं देता और सलमा भी

चूंकि जिन्दगी के अंधेरे गढ़े में पड़ी थी, इसलिए उसके यहां भी कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ।

बुलबुल पिंजरे में घोंसला नहीं बनाती, क्योंकि अपने बच्चों को कैद और गुलामी में देखना उसे पसन्द नहीं। और सलमा भी चूंकि अभागी कैदी थी, इसलिए परमात्मा की इच्छा न हुई कि उसकी कैद में एक और प्राणी बढ़े।

तलहटियों के फूल 'बच्चे' हैं जो सूर्य के ध्यान और जमीन की योग्यता से पैदा होते हैं; और इन्सान के बच्चे 'फूल' हैं जो प्रेम और मिलन की गर्मी से खिलते हैं। लेकिन सलमा उस शानदार कोठी के अन्दर जो बैरूत के सर्वश्रेष्ठ भाग में समुद्रतट पर थी, प्रेम और मिलन से बिलकुल अपरिचित थी। फिर भी वह रात की खामोशियों में पूजा-पाठ करती और परमात्मा से गिड़गिड़ाकर एक बच्चे के लिए आशीर्वाद माँगती जो अपनी नरम और कोमल अंगुलियों से उसके आँसू पोंछे और अपनी आंखों की रोशनी से उस काली और भयानक छाया को मिटा दे जो उसके दिल में चल-फिर रही थी।

सलमा इस तरह करुणापूर्ण होकर आशीर्वाद मांगती कि सारा वातावरण प्रार्थना-विनती से भर जाता, और इस तरह फरियाद-भरे स्वर में गिड़गिड़ाती कि उसका रोना और फरियाद बादलों का सीना चीर देते। आखिर परमात्मा ने उसकी सुन ली। एक मधुर और रोशन गीत सुनने की आशा उसे बंधी। शादी के पांच वर्ष बाद वह एक बच्चे की मां हो रही थी। इतनी मुद्दत के बाद अब उसके माथे से कलंक का टीका मिट रहा था।

गुफा में फलने-फूलने वाले वृक्ष में फूल आ गए थे और फल आने वाला था। कैदी बुलबुल पिंजरे में अपने परों से घोंसला बनाने पर तय्यार हो गई थी। कदमों में पड़ा हुआ रबाब[1] पूर्वी हवा के रुख पर

---

१ रबाब एक प्रसिद्ध बाजे का नाम है जिसमें तार होते हैं।

:ख दिया गया था जिससे हवा की लहरें उसके बचे-खुचे तारों को छेड़ दें।

बेचारी सलमा ने दैवी देन को चूमने के लिए जंजीरों से जकड़ी हुई अपनी भुजाएं फैला दी थीं।

जिन्दगी का कोई सुख बांझ स्त्री की खुशी का मुकाबला नहीं कर सकता जबकि प्रकृति का नियम उसे माँ बनाए। रूप और सौंदर्य की तमाम सुन्दरताएं और बहारें और सुबह के आने की तमाम खुशियाँ और सुख उस स्त्री की कोख में जमा हो जाती हैं जिसे परमात्मा ने निराश करने के बाद आशावान बनाया हो।

दुनिया का कोई प्रकाश इन किरनों से ज्यादा रोशन नहीं है जो किरनें भावी संतान के जनने के विचार से स्त्री के हृदय में फूटती हैं।

जब सलमा पूरे दिनों से हुई तब बसन्त ऋतु थी। मानो प्रकृति ने सलमा से वचन बांध रखा था कि वह भी उसके बच्चे के साथ हरयावल और फूलों को गर्मी के पोतड़ों पर खिलायगी।

मुद्दत पूरी हो गई और सलमा बच्चा होने की प्रतीक्षा करने लगी, जिस तरह मुसाफिर भोर का तारा निकलने की प्रतीक्षा करता है। भविष्य उसे अपने आँसुओं के पीछे से नजर आ रहा था जिस तरह कई बार अंधेरी चीजें आंसुओं की झड़ियों से रोशन नजर आती हैं।

रात अंधेरी थी और चारों तरफ सन्नाटा था। बैरूत की तमाम इमारतों पर भयावनी घटाएं फैली हुई थीं कि सलमा को प्रसव-पीड़ा शुरू हुई, यानी मौत और जिन्दगी की खींच-तान शुरू हो गई। उस के बिस्तर के एक तरफ हकीम और दूसरी तरफ दाई इस दुनिया में आने वाले एक नये अतिथि के स्वागत के लिए खड़े थे। सड़क पर आना-जाना बन्द था और समुद्र की मौजों की आवाज मन्द पड़ चुकी थी। सारा मुहल्ला सुनसान था मगर मंसूर के मकान की खिड़कियों से आह और फरियाद की दिल दहला देने वाली आवाज बराबर आ रही थी। एक प्राणी से दूसरे प्राणी के पैदा होने की आह और फरियाद!

अभाव के वातावरण में शौक और अमरत्व की आह और फरियाद ! अनन्त शक्तियों की खामोशी के सामने मनुष्य की सीमित शक्ति की आह और फरियाद ! मौत और जिन्दगी के पहलवानों के कदमों में पड़ी हुई कमजोर और अशक्त सलमा की आह और फरियाद !

सुबह के वक्त सलमा के लड़का पैदा हुआ। बच्चे के रोने की आवाज सुनकर उसने अपनी आँखें खोलीं जो दर्द और पीड़ा के कारण बन्द थीं, और चारों तरफ देखा। उसे कमरे में हर तरफ खुश और रोशन चेहरे नजर आए। लेकिन जब उसने निगाह फेरी तो अपने बिस्तर के समीप मौत और जिन्दगी को खींच-तान में लगा पाया। उस ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और करवट लेकर पहली बार चिल्लाई, "मेरा बच्चा !"

दाई बच्चे को रेशमी पोतड़े में लपेटकर माँ के सामने ले गई लेकिन हकीम गमगीन निगाहों से सलमा को देख रहा था और बार-बार रंज और अफसोस से अपना सिर हिला रहा था।

पड़ोसियों में खुशी का शोर हुआ और वह रात के वस्त्रों में ही बच्चे के जन्म पर उसके बाप को बधाई देने आगए। लेकिन हकीम माँ और बच्चे को अभी चिन्ता-भरी निगाहों से देख रहा था।

नौकर मंसूर को बच्चा पैदा होने का शुभ समाचार सुनाने और इस पर इनाम पाने दौड़े। लेकिन हकीम निराश निगाहों से सलमा और उसके बेटे को खड़ा देखता रहा।

जब सूरज निकला तो सलमा ने अपने बेटे को छाती से लगाया। बच्चे ने पहली बार आँखें खोलीं और माँ को देखा। इसके बाद उसने सुबकी ली और उसकी आँखें हमेशा-हमेशा के लिए बन्द हो गईं।

हकीम आगे बढ़ा और बच्चे को सलमा की गोद से ले लिया। उसकी आँखों से दो बड़े-बड़े आँसू गालों पर से ढलके। भरी हुई आवाज में उसने कहा, "आने वाला रुखसत हो गया।"

बच्चा मर गया और मुहल्ले वाले बैठक में बैठे मंसूर के साथ

OSMANIA समाप्त
No.

खुशियां मनाते रहे, और उसकी बड़ी उम्र की प्रार्थनाएं करते रहे। सलमा ने हकीम को गौर से देखा और चिल्लाई, "लाओ! मेरा बच्चा मुझे दो।"

लेकिन जब उसकी निगाह नीचे पड़ी, तो उसने देखा कि पलंग के पास मौत और जिन्दगी के बीच खींच-तान चल रही है।

बच्चा मर गया पर, प्याले और सागर की खनक उसके जन्म पर खुशियां मनाने वालों के दिलों को गरमाती रही।

सुबह सवेरे पैदा होने वाला सूर्योदय के वक्त मर गया।

सुबह सवेरे पैदा होने वाला सूर्योदय के वक्त मर गया। कोई नहीं जो जमाने का अन्दाजा कर सके और हमें बता सके कि क्या वह सुबह सवेरे और सूर्योदय का दरम्यानी समय उस जमाने से कम था जिसमें कौमें उभरती हैं और फिर मौत की नींद सो जाती हैं?

आने वाला विचार की तरह आया और ठंडे सांस की तरह रुखसत होकर छिप गया। सलमा मातृ-अवस्था से परिचित हुई पर उसका बच्चा कुछ अधिक समय तक जिन्दा न रह सका जो उसे सफलताओं और उद्देश्य-पूर्तियों का सामना कराता और उसके दिल को मौत के हाथों से छुड़ाता।

जो एक छोटी-सी जिन्दगी रात के आखिरी हिस्से से शुरू हुई और सुबह के आरम्भिक भाग में खतम होगई, ओस के उस कण के समान थी जो अंधकार की पलकों से टपकता है और सूरज की किरनों में सूख जाता है।

जो बात प्रकृति के नियम ने कही उसी प्रकृति ने लज्जित होकर फिर अनंत खामोशियों के सीने में उसे सुला दिया।

एक मोती जिसे समुद्र के चढ़ाव ने तट पर फेंका था समुद्र के उतार ने फिर उसे गहराइयों में पहुँचा दिया।

एक फूल जो खिलने से पहले मुरझा गया।

जिस प्रिय अतिथि का इन्तजार सलमा कर रही थी वह आने

से पहले रुखसत और दरवाजे के किवाड़ खोलने से पहले अदृश्य हो गया।

एक पैदा होता बच्चा जो बड़ा होने से पहले खाक में मिल गया। आह ! यह है इन्सान की जिन्दगी ! केवल इन्सान ही नहीं, कौमों की जिन्दगी ! केवल कौमों ही की नहीं, चाँद-सूरज और स्थिर और घुमक्कड़ तारों की जिन्दगी !

सलमा ने हकीम की तरफ देखा और ठंडा सांस लेकर चिल्लाई, "लाओ मेरा बच्चा, मैं उसे गोद में लूंगी। लाओ, मेरा बच्चा मैं उसे दूध पिलाऊंगी।"

हकीम ने सिर झुकाया और घुटी हुई आवाज में कहा, "बेगम ! आपका बच्चा ईश्वर को प्यारा हुआ। सब्र कीजिए, वरना आपकी जान संकट में पड़ जायगी।"

सलमा ने एक चीख मारी और खामोश होगई। उसके होंठों पर खुशी मिली मुसकराहट जाहिर हुई और उसका चेहरा चमक उठा, मानो उस पर एक ऐसी हकीकत जाहिर हुई जो पहले कभी न हुई थी। संतोष के स्वर में उसने कहा, "लाओ ! मेरे बच्चे की लाश ही मुझे दे दो।"

हकीम ने बच्चे की लाश सलमा की गोद में दे दी। सलमा ने उसे अपनी छाती से चिमटा लिया और दीवार की तरफ मुंह करके मुर्दा बच्चे से कहने लगी, "मेरी जान ! तुम मुझे लेने आये थे। मुझे मेरे अंतिम ठिकाने का रास्ता दिखाने आये थे। देखो मेरी जान ! मैं यहाँ हूँ। आओ ! मेरे आगे आगे चलो जिससे हम इस अंधेरे गढ़े से निकल जायं।"

थोड़ी देर के बाद सूर्य को किरनें खिड़की के परदे से कमरे में दाखिल हुईं और बिस्तर पर पड़े हुए दो बेजान शरीरों पर बिखर गईं—वह बिस्तर जो माँ के तेज की रक्षा और मौत की भुजाओं की छाया में था।

हफ़ीप रोता हुआ कमरे से निकला। जब वह दीवानखाने में पहुँचा और उसने लोगों को इस दुर्घटना की सूचना दी तो खुशी के गीत रुदन और विलाप में बदल गए। लेकिन मंसूर न रोया-पीटा, न उसने ठंडा सांस भरा। उसकी आंखों से आंसू की एक बूंद न निकली, न ज़बान से कोई शब्द, बल्कि वह अपने दाएं हाथ में शराब का जाम लिये मूरत की तरह खामोश खड़ा रहा।

दूसरे दिन सलमा को उसके ब्याह के जोड़े में कफनाकर मखमली बिस्तर की अरथी में रखा गया। लेकिन उसके बच्चे का कफन उसका होतड़ा, उसकी अरथी उसकी माँ की भुजाएं और उसकी कब्र उसकी माँ की खामोश छाती थी।

दोनों लाशों को एक अरथी पर उठाया गया और लोग धीरे-धीरे इस तरह चलने शुरू हुए जैसे दो लड़ने वालों के दल की चाल। मैं भी अरथी के साथ था लेकिन इस तरह कि लोगों न यह मालूम हो सका कि मैं कौन हूं, और न वह यह जान सके कि मुझ पर क्या बीत रही है। अरथी कब्रिस्तान पहुंची। पादरी ने कुछ मंत्र पढ़े। उसके बाद कुछ पादरी अरथी के इर्द-गिर्द खड़े हुए और अंजील पाक के कुछ वाक्यों का पाठ करने लगे, लेकिन उनके चेहरों पर अज्ञान और बेहाली का परदा पड़ा था।

जब अरथी कब्र में उतारी गई तो एक आदमी ने कहा, "मेरी उम्र में यह पहला मौका है कि मैंने एक अरथी में दो लाशें देखी हैं।"

दूसरा बोला, "ऐसा मालूम होता है कि बच्चा अपनी माँ को लेने और उसे पति के अत्याचारों और पाषाण हृदयता से छुटकारा दिलाने आया था।"

तीसरे ने कहा, "ज़रा मंसूर को देखो, किस बेफिक्री से आकाश देख रहा है मानो कोई बात ही नहीं हुई।"

चौथे ने कहा, "क्या है ? कल इसका चचा सलमा से ज़्यादा रूपवती और मालदार लड़की उसे ब्याह लायगा।"

पादरी अंजीलशाक का पाठ करते रहे, यहाँ तक कि कब्र मिट्टी से पाट दी गई। अब लोग एक-एक करके पादरी और उसके भतीजे के पास गये। सांत्वनापूर्ण शब्दों में उन्हें सब्र का उपदेश देने लगे। मैं एक कोने में अकेला खड़ा था और ऐसा कोई न था जो मेरी विपत्ति पर मुझे सब्र दिलाता, मानो सलमा और उसका बच्चा मुझे दुनिया में सबसे ज्यादा प्यारे न थे।

लोग वापस हो गए और कब्र खोदने वाला नई कब्र के पास खड़ा रह गया, कुदाल फावड़ा उसके हाथ में था। मैं उसके पास गया और पूछा, "क्या तुम बता सकते हो कि फारिस करामा की कब्र कहाँ है?"

वह मुझे देर तक देखता रहा। उसके बाद उसने सलमा की कब्र की तरफ इशारा करते हुए कहा, "इसी कब्र में मैंने उसकी छाती पर उसकी बेटी को सुलाया है। और उसकी बेटी की छाती पर उसके बच्चे को; और उन सब पर इसी फावड़े से मिट्टी डाली है।"

मैंने कहा, "और इसी कब्र में तूने मेरे दिल को भी दफन किया है। उफ! कितनी ताकतवर है तेरी भुजाएं!"

जब कब्र खोदने वाला सरू के वृक्षों में ओझल हो गया तो मेरे धीरज की बाँध टूट गई और मैं बेताब होकर रोता हुआ सलमा की कब्र पर गिर पड़ा।